भविष्योत्तरपुराणप्रोक्त

श्रीअन्नपूर्णा-व्रतविधान

(श्रीपादुकाकल्प)

(प्रातःस्मरण,सुप्रभात, अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र, मङ्गलाष्टक,
आरती, कथा, और अष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र नामावली सहित)

रचयिता

'साहित्यविद्याप्रवीण', 'राष्ट्रभाषाप्रवीण','संस्कृतभाषा कोविद'.,
'विद्यावारिधि'(**'पि.एच्डि'**-शिक्षा और व्याकरण शास्त्र)

'श्रीपादुका' आचार्य **कोल्लूरु अवतारशर्मा**

'एम्.ए'(संस्कृत).,'एम्.ए'(तेलुगु).,'बि.यस्.सि'., 'बि.एड्'.,
'पि.एच्डि'(अलङ्कारशास्त्र).,
आन्ध्रविश्वविद्यालय स्वर्णपतकद्वय सम्मानित,
श्रीपीठपुरस्कारग्रहीता, एवं श्रीकल्याणानन्दभारती पुरस्कार
सम्मानित,
विश्रान्त संस्कृताचार्य
काशीवासी

श्री अन्नपूर्णाव्रतविधान-श्रीपादुका कल्प
(माँ काशी अन्नपूर्णाव्रतकथा-पूजा और स्तोत्र)

प्रथम मुद्रण-५००प्रतियाँ
०६दिसम्बर२०१४.

मूल्य- मन की इच्छानुसार (पुनर्मुद्रण के लिए)

प्राप्तिस्थानः
श्रीपादुका- आचार्य अवतार शर्मा
अतिथिशाला-शिवानन्दलहरी(४८-४९)
श्रीकाशी मुमुक्षुभवन-बि.1/89.
अस्सी-वारणासी-२२१००५(उत्तरप्रदेश)
दूरभाषः+91 9440493951 & +91 9889376033

डि.टि.पिः
श्रीपादुका- आचार्य अवतार शर्मा

मुद्रापकः

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
श्रीअन्नपूर्णा प्रातःस्मरणस्तोत्रम्	०४
श्रीअन्नपूर्णा सुप्रभातस्तोत्रम्	०४
श्रीअन्नपूर्णा अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	०७
मन की बात	०९
माँ अन्नपूर्णा का व्रत	२०
व्रतसंकल्प और व्रतारम्भ	२५
सत्रहवें दिन की विशेष पूजा	३१
श्रीअन्नपूर्णाव्रत कथा का आरम्भ	४१
कथासङ्ग्रह	
श्रीअन्नपूर्णा मङ्गलाष्टकम्	६१
श्रीअन्नपूर्णाजी की आरती	६२
श्रीअन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रम्	६३
श्रीअन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामावलिः	८०

श्री अन्नपूर्णा प्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातर्नमाम्यद्य पदाम्बुजं ते - यन्निसृत ज्ञानसुधास्रवन्तिः।
आपीयते भक्तजनैस्सदैव - भृङ्गायमाणैर्महितेऽन्नपूर्णे!।।

हे मातः अन्नपूर्णे! अभी इस प्रातः काल में, मैं तेरे पदकमल की वन्दना कर रहा हूँ जिस से सदैव निकलने वाली ज्ञानामृत लहरी को भक्त भृङ्ग भरपेट हमेशा पीते ही रहते हैं ।

मातस्तवांघ्रिमपरं भजामि - यत्सेव्यमानं विदधाति भुक्तिम्।
मुक्तिं करोत्येव करस्थलस्थं - तत्पादयुग्मं दिश मेऽन्नपूर्णे!।।

हे माँ! तेरी वह दूसरी चरण कमल, जो भक्त जनों को भुक्ति के साथ मुक्ति को भी हाथ में रखती है, उसकी सेवा करता हूँ । हे माँ! भगवति अन्नपूर्णे! इन दोनो चरणों के नित्य सेवा भाग्य को प्रदान करने की कृपा करो।

प्रातर्भजेऽहं तव हस्तयुग्मं - दर्वीसमाश्लिष्टसुधान्नपात्रम्।
भिक्षाप्रदं चैव महेश्वराय - तद्धस्तयुग्मं शुभमातनोतु।।

हे अम्बे! मैं तेरे दोनो हाथों की सेवा करूँ, जो स्वर्णकलश में से रत्नमयी दर्वी (कलछुल) से सुधामय पायसान्न की भिक्षा को हर दिन विश्वनाथजी को परोसते रहते हैं।

प्रातर्भजामीशि! तवान्नपूर्णे! - मुखारविन्दं दरहासशोभि।
भृङ्गीकृताराधित विश्वनाथं - लसत् त्रिणेत्रं करुणाकटाक्षैः।।

हे माँ अन्नपूर्णे! इस प्रातः काल में मुस्कुराहट से विराजमान तेरे मुख कमल की सेवा करूँ ,जिस की आराधना हमेशा महादेव भृङ्ग के रूप में करते है, और जो तीन नेत्रों से करुणा कटाक्ष प्रसारण से भक्तों की रक्षा करती है।

नाम स्तुवेऽहं तव हेन्नपूर्णे! - विश्वेशजायेति विशालनेत्री-

त्येवं भवानीति महेश्वरीति - नित्यान्नदात्रीति च मोक्षदेति।।

हे मातः अन्नपूर्णे! मै इस प्रभात कालम में - ''हे विश्वनाथ की रानी! विशालाक्षि! भवानि! महेश्वरी! नित्यान्नदात्री ,मोक्षदा'' -इत्यादि नामों से तुम्हारी स्तुति करता हूँ ।

फलश्रुति

यः श्लोक पंचकमिदं पठति प्रभाते

श्रीपादुका विरचितं शुभदेन्नपूर्णे!

तस्मै प्रयच्छ करुणावरुणालया त्वं

विद्यां श्रियं परमसौख्यमनन्तकीर्तिम्।।

हे माँ भगवति अन्नपूर्णे! श्री पादुका नाम धारी इस काशीवासी के मुख से तेरी कृपा से निकली इस स्तुति को जो प्रातः काल में पढेगा, उसे कृपासागरी तुम, विद्या, धन, सौख्य और यश का प्रदान करती रहो। यह मेरी अभ्यर्थना है।

श्री अन्नपूर्णा सुप्रभातस्तोत्रम्

अन्नपूर्णे! विशालाक्षि! करुणावरुणालये!
उत्तिष्ठ! लोकमातस्त्वं कर्तव्यं लोकरक्षणम्।।

हे माँ अन्नपूर्णे! विशालाक्षि! कृपासमुद्रे! तुम त्रिलोकजननी हो। जगत् की रक्षा करने के लिए कृपया जाग उठो।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ! मातस्त्वं उत्तिष्ठ जगदीश्वरि!
उत्तिष्ठ! काशिकामातः! कर्तव्यं मङ्गलं महत्।।

हे माँ जगदीश्वरि! काशिका जननि! तुम्हे सभी लोकों का कल्याण प्रदान करना है। इसलिए कृपया जाग उठो ।

श्रीपादुकार्चितपदे! श्रीचक्रस्थे! शिवंकरि!
अन्नपूर्णे! समुत्थाय त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ।।

हे जगदम्बिके! शिवंकरि! माँ! इस श्रीपादुका अपने को श्रीचक्र बनाकर बिन्दुस्थान पर तुम्हारी श्रीपादुका का अर्चन करने वाला है। इसलिए हे अन्नपूर्णे उठकर उस का और तीन लोकों का मङ्गल प्रदान करो ।

अन्नपूर्णे! चान्तरस्थे! सुषुम्नामध्यगे ! शिवे!
उत्तिष्ठ! कुण्डली मातः! कुरुष्वामृतवर्षणम्।।

हे अन्नपूर्णे! तुम्हें सभी प्राणियों के अन्दर सुषुम्ना नाडि के मध्य में से कुण्डलिनी के रूप में जागृत् होकर उनमें चैतन्यामृतवर्षण करना है। इसलिए कृपाकरके जाग उठो।

शमितसकलबाधा रात्रिरस्तं गतेयं ।
अरुणकिरणजालैरंशुमानप्युदेति।।
हरिहरविधिमुख्याश्चागताश्चान्नपूर्णे!
प्रभवतु तव मातः सुप्रभातं प्रभातम्।।

समस्त प्राणियों की सभी यातनाओं को शान्त करके रात बीत रही है। सूरज भी अरुणारुण किरणजालों के प्रसारण से विदित हो रहा है। हे माँ अन्नपूर्णे ! ब्रह्म, विष्णु, रुद्रादि सभी देवगण तुम्हारे दर्शन केलिए पधारे हैं। इस प्रकार यह प्राभात वेला तेरा और लोकों का सुप्रभात बन गया है। कृपया तुम जाग उठो।

अरुणकिरणजालैरंचिताशावकाशां।
कनककलितदर्वी रत्नपाशाढ्यहस्ताम्।
तरणिररुणभासैरर्चितुं त्वां प्रपन्नः।
प्रभवतु तव मातः सुप्रभातं प्रभातम्।।

अपने अरुणारुण किरणावलियों से दिग्दिगन्तरालों को भरती हुई, एवं दोनों हाथों से स्वर्णकलश और मणिमय कलछुल को लिए, तुम्हारी सेवा करने के लिए सूर्यभगवान अपने अरुण किरणों से विराजमान हो आ रहा है। इस प्रकार यह सुप्रभात तुम्हारा और लोकों का सुप्रभात हो रहा है।

जननि तव हि वीक्षां प्रातरभ्यर्थयन्तः।
सकल मुनिगणानां चारणानां समूहाः।
ललित ललित सूक्तैस्त्वां स्तुवन्त्यन्नपूर्णे।
प्रभवतु तव मातः सुप्रभातं प्रभातम्।।

हे जगज्जननि! अन्नपूर्णे! इस प्रभात वेला में तेरी कृपाकटाक्ष पाने के लिए सिद्ध,चारण,और समस्त मुनिगण ललित ललित वैदिक सूक्तों से तुम्हारी स्तुति कर रहे हैं। इस प्रकार यह प्रभात सुप्रभात हो रहा है।

गुहगणपतिमुख्याः दण्डपाण्यादयस्ते।
वरतनु तनुमध्याः काशिवाराहिकाद्याः।
परमशुभदतीर्थाश्चाद्य प्राप्तास्तवांघ्रिम्।
प्रभवतु तव मातः सुप्रभातं प्रभातम्।।

देव सेनानि गुह, ढुंढ्यादि छप्पन गणेश, दण्डपाणि जैसे दण्डनाथ, काशिका, वाराही,और अनेक दिव्याङ्गनायें, गङ्गा मणिकर्णिकादि तीर्थराज तेरी चरणसेवा के लिए पधारे हैं। ऐसी प्रभातवेला हे मातः अन्नपूर्णे सभी का सुप्रभात हो।

हे! आदिभिक्षुपरितर्पणबद्धचित्ते!
नित्यान्नदाननिरते! निखिलामरार्च्ये!
वैराग्यमोक्षवरदाननिबद्धदीक्षे!
हे! विश्वनाथदयिते! तव सुप्रभातम्।।

हे! अन्नपूर्णे! तुम सदैव आदिभिक्षु भोलेनाथ को तृप्त करने में लगी रहती हो। नित्यान्नदात्री के रूप में समस्त देवताओं के आराध्य बन गयी। वैराग्य और मोक्ष को वरदान के रूप में प्रदान करने के लिए सदैव कटिबद्ध हो। ऐसी विश्वनाथ की रानी! तेरा सुप्रभात हो!

सुप्रभातममरादिवन्दिते! सुप्रभातमरविन्दलोचने!
सुप्रभातमधुनारुणोदये सुप्रभातमिदमन्नदात्रि! ते।।

हे! देवगणादिवन्दिते! हे! कमलदलनेत्रि!हे अन्नदात्रि! यह अरुणोदय

तेरा सुप्रभात हो!

फलश्रुति

श्रीपादुकीयमनघं तव सुप्रभातम्।
गायन्ति ये प्रतिदिनं परया सुभक्त्या।
ध्यायन्ति ये प्रतिदिनं तव मनोहर दिव्यरूपम्।
ते घोरमातृजठरं न पुनर्विशन्ति।।

श्रीपादुका के मुख से विनिसृत इस सुप्रभात स्तोत्र को जो प्रभातसमय में श्रद्धा और भक्ति से पढेंगे, और अर्थज्ञान से तेरे सुन्दर दिव्य रूप का ध्यान करेंगे, वे पुनः गर्भनरक की यातना का अनुभव नहीं कर पायेंगे।

———————————

श्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

अस्य श्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र मालामहामंत्रस्य

'**श्रीपादुका**' ऋषिः। '**अनुष्टुभ्**' छन्दः। ज्ञानवैराग्यमोक्षदा **श्री अन्नपूर्णेश्वरी** परा देवता। '**ह्रीं**' बीजम्। '**श्रीं**' शक्तिः। '**क्लीं**' कीलकम्। मम श्री अन्नपूर्णेश्वरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

श्रीमाता- श्रीमहादेवी- श्रीमती- श्रीप्रदायिनी।
अन्नपूर्णा- सदापूणर्णा- पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी।। (१-७)
आनन्दपूर्णा- चानन्दा- आनन्दवनवासिनी।
नित्यान्नदाननिरता- नित्यानन्दप्रदायिनी।। (८-१२)
अन्नदा- वसुदा- श्रीदा- आखण्डलसमर्चिता।
अन्नार्तिहारिणी- नित्या- निखिलागमसंस्तुता।। (१३-१९)
अन्नप्रदानसंतुष्टा- क्षुद्बाधाविनिवारिणी।
अन्नाहुतिसमाराध्या- अन्नराशिकृतालया।। (२०-२३)
भिक्षान्नदाननिरता- भिक्षुकीकृतशङ्करा।
कुक्षिस्थाखिलब्रह्माण्ड संरक्षणपरायणा।। (२४-२६)
कनत्कनकदर्वीका- कलशाञ्चत्कराम्बुजा।
दरहासकृताह्वान समर्चितसदाशिवा।। (२७-२९)
अव्याजकरुणापूर्णा- करुणावरुणालया।
काशीपुराधिनाथा च- काशीवासफलप्रदा।। (३०-३३)
विश्वेश्वरप्राणनाथा- विशालाक्षी- विभूतिदा।
विश्वनाथसमाराध्या- विश्वकल्याणकारिणी।। (३४-३८)
विश्वसूर्विश्वनाथा च- विश्वनाथविलासिनी।।
माधवार्च्या- माधवश्रीः- माधवीपरिसेविता।। (३९-४४)

श्रीदुण्ढिराजजननी- दण्डपाणिसमर्चिता।
कालभैरवसंसेव्या- वाराहीपरिरक्षिता।। (४५-४८)
काशिकाकाशिनी- काशी- काशिकापुरगौरवा।
काशिकाकल्पलतिका- काशीनाथकुटुम्बिनी।।(४९-५३)
गुहाम्बा- गुरुमूर्तिश्च- गुह्यकेशार्चितांघ्रिका।
गुहावासा- गुहाराध्या- गुह्यगोप्त्री- गुणिप्रिया।।(५४-६०)
गङ्गाराध्या च- गम्भीरा- गङ्गातीरकृतालया।
गङ्गाजलाभिषेकार्च्या- गङ्गाधरप्रियाङ्गना।। (६१-६५)
भवानी- भावनागम्या- भवसागरतारिणी।
मणिकर्णिकाभिषिक्तांघ्रिः- मणिकर्णीपवित्रिणी।।(६६-७०)
षट्पञ्चाशद्गणेशार्च्या- षडाननसमर्चिता।
गणेशार्चनसंतुष्टा- मूलाधारसमुत्थिता।। (७१-७४)
हव्यवाहनसंसेव्या- स्वाधिष्ठानसमुज्ज्वला।
मणिपूरार्चिता- सौम्या- जलतत्त्वानुभाविता।। (७५-७९)
विशुद्धिचक्रसंपूज्या- शुद्धविद्या- सदाशिवा।
आज्ञाचक्रान्तरालस्था- चित्कळा- चिन्मयी- शिवा।।(८०-८६)
सहस्रारसमारूढा- सुधासाराभिवर्षिणी।
षट्चक्रमध्यगा- शान्ता- सदाशिवसमन्विता।। (८७-९०)
शिवदा- शर्मदा- श्रीदा- सुखदा- शान्तिदा- शुभा।
शाम्भवी- शाम्भवाराध्या- शङ्करी- शङ्करान्नदा।। (९१-१००)
नित्यानुरक्तभिक्षान्न संतर्पितसदाशिवा।
नमस्कृतजनाभीष्ट वरदानसमुत्सुका।। (१०१-१०२)
आदिशक्ति- रमेयात्मा- ज्ञानवैराग्यमोक्षदा।
श्रीपादुकार्चितपदा- सर्वदा- सर्वमङ्गला।। (१०३-१०८)

--------o--------

मन की बात

अन्नपूर्णा कल्पलता चिन्तारत्नं च कमधुक् ।
भुक्तिमुक्ति प्रदा लोके सैव सर्वेश्वरेश्वरी ।।

इच्छापूर्ति करने वाले कल्पवृक्ष, कमधेनु और चिन्तामणि केवल स्वर्गलोक में ही पाये जाते हैं। लेकिन माँ अन्नपूर्ण जो समस्तलोकों और लोकवासियों की नहीं , वे सभीलोकों के लिए उन तीनों से बढकर कामानाओं को पूर्ति करती हैं साथ ही साथ भोग और मोक्ष भी प्रदान करती है। ऐसी जगन्माता और जगद्धात्री सिर्फ आप ही हैं।

माँ अन्नपूर्णा के अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र, सहस्रनाम और कुछ अन्यस्तोत्र यत्र तत्र कहीं कहीं उपलब्ध होते हैं। परंतु ऐसी महत्वपूर्ण पराशक्ति माँ का चरित्र, महात्म्य, पूजाकल्प, व्रतविधान, व्रतकथा और उपासना संबंधित विषय एकत्र साधकों के उपयोग केलिए प्रस्तुत करना ही इस रचना का उद्देश्य है।

इस का नाम 'श्रीपादुका-कल्प 'इसलिए रखा गया है कि-

१. आज कल की देश-काल के परिस्थितियों के अनुसार पुराणोक्त कल्प में कुछ परिवर्तन किये गये हैं। समय के अभाव में कथाक्षतों का धारण, पञ्चोपचारपूजन, कथासङ्ग्रह का पाठ,एक ही दिन में व्रतविधि, इन में प्रधान हैं।

२.यद्यपि माँ अन्नपूर्णा सर्वलोकेश्वरी महामाया हैं, इनकी विभूति प्रधान रूप से वारणासी मे अभिव्यक्त हो चुका है। अब तक उपलब्ध जो नामावलियाँ हैं , उन में काशी अन्नपूर्णा संबंधित नामों का प्रचुर मात्रा में उल्लेख नहीं किया गया है। इस कमी की पूर्ति के लिए यह ''काशीवासी'' ''श्रीपादुका'' (लेखक) स्वयं गुरु कृपा और अंबा अन्नपूर्णा की कृपालब्ध स्वल्प धिषणा

से *'स्वान्त : सुखाय'* नित्य प्रार्थना के लिए 'प्रातःस्मरण', 'सुप्रभात', 'मंगलाष्टक', 'आरती' आदि को लिख चुका था, उन्हें *'बहुजन हिताय'* इस पुस्तक में प्रकट करता है। साधक भक्तलोक यदि इस को स्वीकार कर माँ अन्नपूर्णा का कृपापात्र बनें तो, यह कृति और कृतिकर्ता दोनों सुकृति होंगे।

—o—

माँ अन्नपूर्णा की अर्चना करने से क्या फायदा ?

'प्रयोजन मनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते' - माने बिना प्रयोजन व स्वलाभ के कोई भी आदमी किसी काम को नहीं करता। किसी न किसी लाभ व फायदा उठाने केलिए ही सभी लोग अपने अपने कार्यो मे जुडे रहते हैं।

आज कल के हेतुवादी आम आदमी भी यही पूछेगा- माँ अन्नपूर्णा की अर्चना मैं क्यों करूँ ? करने से मुझे क्या लाभ है ? न करने से मेरी क्या हानि वा कमी है? इसप्रकार की विवेचना सही है। यदि जवाब उसे मिल जाय, तो वह आप ही अपना निर्णय करेगा और समझ लेगा कि - 'अम्मा के गोद के बिना कोई शरण या चारा नहीं है।

माँ अन्नपूर्णा कौन हैं? सवाल मे ही जवाब मिलता है। वह माँ है। माँ का संस्कृत मूल ''माता'' है। *'माता ह्यहन्ता'* - यह माता की तात्त्विक परिभाषा है। वह सर्व चैतन्य रूपा पराशक्ति है। वह आपही प्रकटित होती है और अपने प्राकट्य को समझने की शक्ति प्रदान भी वही करेगी। ***''सर्व चैतन्य रूपां तां आद्यां विद्यां च धीमहि बुद्धिं या नः प्रचोदयात्''*** वह केवल चैतन्य शक्ति ही नहीं,समस्त जगत्स्वरूपिणी है।

एक बार देवताओं ने पूछा - ***''कासि त्वं महादेवीति ?"*** हे महादेवी आप कौन हैं ? आप बोलीं - ***''अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः***

प्रकृति पुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च । अहमानन्दानन्दे । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्मा ब्रह्मणी वेदितव्ये । अहमखिलं जगत् ''-'मैं परब्रह्म स्वरूपिणी हूँ। प्रकृति और पुरुष के योग से जगत् की जो उत्पत्ति हुई, वह मेरी ही विभूति है। आनंद और विषाद ज्ञान और अज्ञान आदि सभी द्वंद्व मेरे ही स्वरूप हैं। यह चराचर जगत् समष्टि रूप से मेरी ही प्रकृति है ' । इस प्रकार अथर्वश्रुति में माता की अहंता और विश्वरूप का परिचय मिलता है।

<u>माँ भगवान शिव की माया शक्ति है</u>

भविष्योत्तर पुराण में माँ अन्नपूर्णा भगवान शिव की माया शक्ति बताई गई है -

''योगमायां समासाद्य क्रीडते यो महेश्वरः
शिव एष इयं शक्तिः मायेयं पुरुष स्त्वसौ ।
एषा त्रैलोक्य जननी साऽन्नपूर्णामहेश्वरी
दुःखदारिद्र्यशमनी सर्व संपत्समृद्धिदा ।।''- माँ अन्नपूर्णा भगवान की योगमाया है। यह शिव की माया शक्ति है। यह त्रिलोक-जननी अन्नपूर्णा महैश्वर्य प्रदात्री है। इतना ही नहीं, दुःख और दारिद्र्य का प्रशमन भी करती है और साथ साथ सर्व संपत्तिसमृद्धियों का प्रदान भी करती है।

शैव आगमों में भगवान शिवजी को जगत की सृष्टि, स्थिति और लयकारक बताया गया है -

''संहारस्तु हरायत्तः उत्पत्तिः भवनिर्मिता ।
रक्षा तु मृडसंलग्ना सृष्टिस्थिति लये शिवः।।''

- अर्थात् एक ही शिव ***'हर'*** नामधेय हो संहार या लयकार्य को, ***'भव'***

नाम से सृष्टि कार्य को, ***'मृड'*** नाम से रक्षा कार्य को निभाता है।

श्री शंकर भगवत्पादाचार्य अपने सौन्दर्यलहरी के प्रारम्भ श्लोक में ही -

'शिवः शत्क्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम् ।

नचे देवं देवो नखलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।' - कहकर आदिपराशक्ति के महत्व की स्तुति करते हैं। शक्ति की सहायता के बिना भगवान शिव ईषण्मात्र चल नहीं सकते। वह उन की चेतना शक्ति है। इसी के सहारे शिवजी प्रभु विश्वनाथ हो सृष्टि, स्थिति, लय कार्यो का निर्वहण करते है। वे ही अन्यत्र इस महा माया को भगवान की ***'अहोपुरुषिका'*** माने दर्प व अहंता के रूप में वर्णन करते है। ***''पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका''*** (सौन्दर्य लहरी स्लोक नं. ७) - 'भगवान पुरमथन कीआहोपुरुषिका मेरे सामने प्रत्यक्ष हो' - यह उनकी कामना है।

भविष्योत्तर पुराण में भगवान आशुतोष की यह आहोपुरुषिका व मायाशक्ति अन्नपूर्णा ही के नाम से स्पस्ट किया गया है, और भगवान आशुतोष शंकर साक्षात ***'विश्वनाथ'*** के नाम से प्रस्तुत किया गया है -

''शिवशक्त्यात्मकं विद्धि जगदेतच्चराचरम् ।

यः शिवः सहि विश्वेशः शक्तिर्या सा च पार्वती ।।

मायेति कीर्त्यते सृष्टौ अन्नपूर्णेति पालने

संहृतौ कालरात्रीति त्रिधा सैव प्रकीर्तिता ।।'' - यह स्थावर जंगमात्मक जगत् शिवशक्त्यात्मक है। शिव ही काशिकानाथ विश्वनाथ हैं। और उनकी शक्ति पार्वती विश्वनाथ कुटुंबिनी माँ अन्नपूर्णा है। ये दोनो समस्त लोको का पालन करते है। सृष्टि के समय ***माँ अन्नपूर्णा*** माया व मूल प्रकृति बनकर शिवजी की सहायता करती है। लयकार्य में

कालरात्रि बनकर संहर्ता शिव का सहयोग देती है। इस प्रकार माँ अन्नपूर्णाजी के सहकार से विश्वनाथजी समस्त लोकों का पालन पोषण कर रहे है। इन्हों ने अपने निवास के रूप में काशी नगरी को स्वीकार किया । इसलिए काशी -

'विश्वनाथ नगरी गरीयसी ' बन गयी है।

काशी में माँ अन्नपूर्णा का आविर्भाव :

काशी में माँ अन्नपूर्णाजी के आविर्भाव सम्बन्धी दो तीन दन्त कथायें प्रसिद्ध हैं। मार्कण्डेय पुनाण में सुरध नामक राजा मेधो ऋषि से महामाया के आविर्भाव के प्रति पूछता है -

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्

ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा ? - भगवन् मैं महामाया के बारे में यह जानना चाहता हूँ । वह देवी महामाया कौन है ? उसका प्रादुर्भाव कैसे हुआ ? इन सवालों का उन्होने जवाब दिया - वह महामाया परब्रह्म महिषी और नित्या हैं । जगत उसका विवर्त या रूपान्तर है। उसके प्रादुर्भाव का सवाल ही नही उठता । देवताओं के कल्याण कारी कामनाओं की पूर्ती केलिए वह जब किसी रूप में अपने को स्वयं प्रकट करती है तब उसे ***'उत्पन्ना'*** 'पैदा हुई' आदि शब्दो से लोग व्यवहार करते है -

''देवानां कार्य सिद्धयर्थं आविर्भवति सा यदा ।

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।।

(दुर्गासप्तशती १-६६)

वह महामाया बडे बडे ज्ञानी लोगो को भी अपने माया जाल में फँसाकर विनोद करती है। इसे आचार्य शंकर अपने सौन्दर्य लहरी में - ***''महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्म महिषि''*** कहकर प्रस्तुती करते है ।

इसकी व्याख्या सप्तशति में इस प्रकार किया गया है -

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥
तया विसृज्यते सर्वं जगदेतच्चराचरम्
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥
सा विद्या परमा मुक्तेः हेतुभूता सनातनी
संसार बन्ध हेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥

(सप्तशती १-५५ से ५८)

वह महामाया ज्ञानियों के चित्तों को भी अपने मायाजाल में बलात् खींचकर मोह में डुबा देती है। वही महा विद्या के रूप में भक्तों पर प्रसन्न होकर ज्ञान और मोक्ष का प्रदान करती है। इस प्रकार जीवों के बन्धन और मुक्ति का वही प्रधान निदान (आदिमूल) है। यह उस महामाया की विलास क्रीडा है। इसी क्रीडा में वह अपने को यदा तदा अभिव्यक्त करती है।

अपनी अभिव्यक्ति के लिए करुणामई अंबा अन्नपूर्णा जिन लीलाओं का प्रदर्शन कर चुकी थी उनमें उपलब्ध लीलाओं का परिचय किया जा रहा है।

महामाया माँ भवानी - अन्नपूर्णा

पहले कहा जाचुका है कि,भगवान शिव 'भव'नामधेय से सृष्टि करता है -***'उत्पत्तिर्भव निर्मिता'।*** तब अम्बा उनकी माया व मूल प्रकृति के रूप में उनकी साथ देती है। इस प्रकार वह भव की पत्नी (भवस्य स्त्री) ***'भवानी'*** नामधेय से काशी में पधारी। उस भवानी माँ की स्वयंभू मूर्ति

अब भी माँ अन्नपूर्णा के मंदिर में विराजमान है। माँ भवानी की प्रस्तुति शंकर भगवतपादाचार्य अपनी सौन्दर्यलहरी मे इस प्रकार करते हैं -

''भवानि! त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणाम्
इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निज सायुज्य पदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुट नीराजितपदाम् ।।''

अर्थात् माँ भवानी इतनी कृपालु है कि - जो कोई भी आदमी जिस किसी भी इच्छा व संकल्प से ***'भवानि'*** शब्द का उच्चारण करता है, तुरन्त माँ भवानी संस्कृत व्याकरण की परिभाषा से प्रतीयमान (लोडुत्तम पुरुष एकवचन का अर्थ)- 'माँ मैं अपने को स्वयं भवानी के रूप में तुम्हारा सायुज्य पाना चाहता हूँ ' की संभावना करके - युग युगों से उसकी प्राप्ति के लिए तडपते हुए, और अपने मुकुटों की कान्ति से अपने चरण कमलों का नीराजन करने वाले ब्रह्मोपेन्द्र महेन्द्रादि देवताओं को छोडकर, उस भक्तार्भक को मुक्ति प्रदान करती है । स्मरणमात्र से मुक्ति प्रदान करने वाली देवी सिर्फ माँ भवानी ही है।

उसकी करुणा अपार है। बद्ध जीवों के पोषण के लिए जब पशुपति ***'मृड'*** विश्वनाथ का रूप धारण किये ***(रक्षातु मृड संलग्ना)*** तब a ŋ/çEy **अन्नपूर्णा** के रूप में काशी में प्रकट हुई । इस प्राकट्य व अभिव्यक्ति के बारे में प्रचलित और उपलब्ध उनकी लीला सम्बन्धित दो एक ऐतिह्य व उपाख्यानों की विवेचना करेंगे ।

भगवान की सृष्टि उनकी लीला विभूति व क्रीडा या भोग माना जाता है। किन्तु आप्तकाम और आत्माराम भगवान को इस क्रीडा व भोग की कामना नहीं होती - ***'आप्तकामस्य का स्पृहा?'***(गौडपाद कारिका) गीता में भगवान स्वयं कहते है। ***'न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्म***

फले स्पृहा। भगवान शिवजी भी सप्त महर्षियों से कहते हैं - ***'' विदितं वो यथा स्वार्थाः न मे काश्चित्प्रवृत्तयः''*** अर्थात् भले ही आप जानते हैं कि मेरी प्रवृत्तियाँ व चेष्टायें सभी स्वार्थरहित हैं ।

इसी प्रकार महामाया का क्रीडा विनोद, प्राकट्य व अवतरण लोक कल्याण केलिए ही हैं। ऐसे समझना है।

अक्षिनिमीलन क्रीडा -

यह कहानी श्री अवधूत दत्तपीठ - मैसूर से प्रकाशित ***'अन्नपूर्णा'*** नामक किताब में प्राचीन कथा विभाग (Ancient Stories. Chapter-9)में पाया जाता है।

श्री काशी अन्नपूर्णा देवी **(Annapoorna The Diety of Kasi)**

कभी शिव भगवान कैलाश में समाधि निष्ठ हो विराजमान थे। भगवती पार्वतीजी ने विनोद केलिए पीछे हो उनके आँखों को अपने दोनों हाथों से ढका दिया । समाधि में उनकी आँखें अर्धनिमीलित होते हैं । वे अब पूर्ण रूप से मूँद किये गये । बाधा और क्रोध के वश में उन्होने पार्वतीजी से कहा - ''आपकी यह विनोद क्रीडा लोकों की कालरात्री बनी है, पर क्षणिक होने से लोक बाल-बाल बच गये। आप अपने इस अपराध की वजह से काशी में अन्नपूर्णा के नाम प्रकट होकर सभी प्राणियों की क्षुद्बाधा की निवृत्ति एवं सभी काशीवासियों को अन्त में मुक्ति देने की कृपा करती रहें।'' तब से माँ भवानी पार्वती **'अन्नपूर्णा'** के नाम से विख्यात हो काशी में पधारी और लोकों के लिए भुक्ति प्रदा और काशी वाशियों को विशेष रूप से मुक्तिदात्री बनी रही थी। (Ancient Stories Page-23.) काशी इस प्रकार विश्वनाथ कुटुम्बिनी माँ अन्नपूर्णा से सुसम्पन्न हो चुकी है।

('ANNAPURNA-Published by Avadhuta Dattapeetham Mysore. First Edition October 2000.Navaratri Festivals.-Ch.9.Ancient Stories-Story1.The Diety of Kasi-P-23.)

माँ पार्वती - विश्वबाहुका - आदिअन्नपूर्णा

शिवलिङ्गप्रतिष्ठा करके काशीराज दिवोदास कैलास प्राप्त कर चुका था। उसी दिवोदासेश्वरलिङ्ग के पास भगवान भोलेनाथ भी पार्वती और ढुण्ढिराज के साथ काशीनगरी के योग-क्षेम निभाने केलिए विश्वनाथ, माँ विश्वबाहुका व विश्वभुजा,(वे ही आज 'आदि-अन्नपूर्णा और 'आदि-विश्वनाथजी' कहलाते हैं)काशी पधारें । धर्मेश्वर और वटसावित्री के मन्दिरों के बीच 'विश्वभुजा आदि-अन्नपूर्णा के मन्दिर में हम इन मूर्तियों का दर्शन कर सकते हैं। माँ विश्वभुजा के अवतरण का उल्लेख काशीखण्ड के ८०अध्याय में है। यद्यपि अन्नपूर्णा नाम (जैसे भागवत में राधाजी का) काशीखण्ड में प्रस्तुत नहीं किया गया, महामाया पार्वतीजी की पालयित्री शक्ति होने से माँ विश्वभुजा देवी का **''आदिअन्नपूर्णा ''** का व्यवहार सर्वथा समुचित है। ये माँ समस्त कामनाओं की पूर्ति करती हैं। जैसे काशीखण्ड के ८० अध्याय में लिखा गया है, उस प्रकार यहाँ 'मनोरथ तृतीया व्रत' अब भी किया जा सकता है। (शिवजी से उपदिष्ट उस व्रतविधान का विस्तृत परिचय काशीखण्ड के अस्सी अध्याय में है)

विश्वनाथजी के मन्दिर मे माँ अन्नपूर्णा का अवतरण

इस का उल्लेख हम प्रस्तुत अन्नपूर्णाव्रतकथा में ही देखतेहैं। कथा में प्रसन्न होकर माँ अन्नपूर्णा धनञ्जय से कहती हैं -

''कुरु व्रतं सदा मह्यं तवानुग्रहकाम्यया।

यास्यामि काश्यां विश्वेशाद्दक्षिणे मे गृहं कुरु।।''-हे विप्र! तुम इस व्रत को सदा करना और मैं भी तुम्हारे कल्याण के लिए काशी चलूँगी। तुम वहाँ श्री विश्वनाथ के दक्षिण में मेरा घर (मन्दिर) बनाना - माँ अन्नपूर्णा के इस आदेश से उस ब्राह्मण ने अन्नपूर्णा का मन्दिर बनाकर

व्रत किया था विभिन्न प्रकार के पक्वान्नों और मधुर भक्ष्यों से माता अन्नपूर्णा को अन्नकूट का भी निवेदन किया।

विश्वनाथ के दक्षिण पार्श्व के मन्दिर में हम उस माँ का दर्शन कर सकते हैं।

काशी खण्ड के द्वितीय अध्याय में देवताओं से काशी नगरी की स्तुति इस प्रकार किया गया है -

'सर्वार्थानामत्र दात्री भवानी'। सर्वान्कामान् पूरयेदत्र ढुण्ढिः।
सर्वान् जंन्तून्मोचयेदन्तकाले। विश्वेशोऽत्र श्रोत्रमन्त्रोपदेशात् '।। -

(काशीखण्ड २-६)

अर्थात् - यहाँ माँ भवानी अर्थप्रदा के रूप में,ढुण्ढिराज सर्वकामप्रद हो विराजमान हैं, और सभी प्राणियों को, अन्तकाल में, भगवान विश्वनाथ दाहिनी कान में तारक मंत्र के उपदेश से मुक्तिप्रदान करते हैं।

महामाया का द्यूत-क्रीडा विलास

इस कथा कि उपलब्धि अन्तर्जाल व इन्टरनेट में वीकीपीडिया अन्नपूर्णा क्षेत्र (Weekipedia-Annapurnadevi, and Hindu Blog)(वीकीपीडिया अन्नपूर्णा सैट) और हिन्दू ब्लाग में सर्वाधिकार सुरक्षित (Copy rights Reserved) हो पाया जाता है। **कथा व उपाख्यान इस प्रकार है।**

कैलास की प्रकृति आह्लादमयी है। शिव दम्पती सुखासन पर विराजमान हो द्यूत क्रीडा की मस्ती में निर्मग्न थे। खेल मस्ती से चल रहा था। खेल की यह मस्ती धीरे धीरे परस्पर विजिगीषा (जीत पाने की इच्छा) का रूप धारण करने लगा, जहाँ उन्होने अपने अपने सम्पत्तियों को पण (बाजी) के रूप में न्योछावर कर रहे थे। काल, काली माँ के अधीन होने लगा । हारते हारते शिव अपने त्रिशूल को माँ भवानी अपने आभरणों को पण (बाजी) कर डाल चुके थे। माँ भवानी की जीत हुई ।

पास उनकी ही खास बिखरी । इस बार अपने त्रिशूल को पाने के लिए शिव जी अपने सर्पाभरण, चन्द्र कला और भिक्षापात्र के साथ साथ सभी वस्तुओं को पण (बाजी) मे रख कर पुनः हार गये। माँ भवानी की जीत मान लिया गया। विषण्ण हो भगवान शिव को देवदारु वन में एकान्त मे बैठे पाकर, भगवान विष्णुजी ने उन्हे स्वान्त्वना दिये और फिर जुआ खेलने के लिए प्रोत्साहित किये । शिवजी कैलास लौटकर पुनः जुआ खेलने केलिये माँ को ललकारे । इस बार शिवका पास गिरा और शिव जीत गये। माँ भवानी को हार मानना पडा। माँ को सन्देह हुआ और वे दिव्य दृष्टि से सब कुछ जान ली और विष्णुमाया के प्रभाव से अक्षों का पास शिवजी के अनुकूल पडा । महामाया भगवती भवानी को शिव और विष्णु के षड्यंत्र पर गुस्सा आई । वह अपने महत्व का निरूपण करने केलिए उद्युक्त हुई । उन्होंने अपने परब्रह्म तत्त्व का प्रतिपादन करना शुरू किया। तब हरि हर दोनों ने उन्हे अन्नदात्री होने के नाते, केवल प्रकृति स्वरूपिणि बताते है। माँ भवानी अपने **'अन्नपूर्णा तत्त्व की प्रशस्ति'** के निरूपण में अन्नको परब्रह्म कहा । लेकिन हरि हर यह बात नहीं माने और साफ साफ बता दिये कि- प्राकृतिक होने से अन्न प्रकृति की सीमा को पारकर ब्रह्म कक्ष्या में नहीं माना जायेगा । तुरन्त क्रोध मे आकर माँ भवानी अन्नपूर्णाजी वहाँ से तिरोहित हुईं। सभी चराचर प्राणी क्षुधार्त हो तडपने लगे। ब्रह्म विष्ण्वादि तैंतीस करोड देवता समष्टि व व्यष्टि रूप में लोकों की क्षुद्भाधा के प्रशमन करने में कामयाबी न पा सके।

महामाया माँ अन्नपूर्णा के अनुग्रह से उन्होने जान लिया और मान लिया कि अन्न परब्रह्म है । श्रुति में भी - ***'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्', अन्नं न निन्द्यात् तद्व्रतम् । अन्नं न परिचक्षीत*** (अन्न की अवहेलना नही करना चाहिए) ***तद्व्रतम्'*** कहा गया है। इस प्रकार की जानकारी प्राप्त कर, हरि हर दोनों ने माँ अन्नपूर्णा और अन्न को ***परब्रह्म*** मान लिये । अन्न की अवहेलना के प्रायश्चित्त के रूप में बाबा विश्वनाथ स्वयं भिक्षार्थी हो,

अन्नपूर्णा से नित्य भिक्षा स्वीकार करने लगे। और श्री महाविष्णु इस अन्न-क्षेत्र काशी का क्षेत्रपालक होकर अन्नपूर्णाजी की सेवा में रहे । करुणापूर्ण दृगम्बुजा माँ अन्नपूर्णा अपनी कृपापूर्ण दृष्टि से समस्त लोको का पालन और पोषण करती है। इस प्रकार के विशाल नेत्री होने के नाते वे विशालाक्षी नाम से प्रसिद्ध हुईं। माँ **अन्नपूर्णा** के रूप धारण किये वे समस्त प्राणियो का पोषण करती है। **विशालाक्षी** हो अपने कटाक्षों के इशारे से समस्त ब्रह्माण्डों का पालन करती हुई जगच्चक्र को घुमाती है। आचार्य शंकर उन्हें तुरीया शक्ति कहते हैं -

''तुरीया कापि त्वं दुरधिगम निस्सीम महिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्म महिषि'' - अर्थात् - आपकी महिमा दुरधिगम और निस्सीम है। साक्षात् रुद्र इनके नेत्रों के इशारे पर नाचते हैं -

''स एष भगवान् रुद्रो नृत्यतेऽस्याः पुरः प्रभुः''

(भविष्योत्तर पुराण - अन्नपूर्णाध्याय)

श्रीविद्योपासक महाकवि कालिदास भी अपनी अम्बास्तुति में -

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै // अर्थात् हे जगदम्बे! जब शिवजी हर का रूप धारण कर संहार करने के संकल्प से प्रचण्ड ताण्डव करने केलिए उद्युक्त होते हैं, तब तुम अपने करुणापूर्ण विशाल नेत्रों से विनिर्गत कटाक्षों के इशारे से उस प्रचण्ड ताण्डव नृत्य को कोमल ललित ललित पदविन्यासयुक्त लास्य नृत्य के रूप में लोक हित कामना से बदलाती हो।

वह प्रदोष कालीन आनन्द नृत्य की शोभा बहुत ही सुन्दरतम और संभावना मात्र से मुक्तिप्रद है। उस समय में-

वाग्देवी धृतवल्लकी शतमखो वेणुं दधत्पद्मज-
स्तालोन्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता
विष्णुस्सान्द्रमृदङ्गमर्दनपटुर्देवास्समन्तात्स्थिताः
सेवन्ते तमनु प्रदोषसमये देवं मृडानीपतिम्।।

पहले ही कहा जा चुका है भगवान मृड रूप में जगत की रक्षा करता है तब उसकी शक्ति मृडानी साक्षात् अन्नपूर्णा व विशालाक्षी होती है। जब हर का संहार संकल्प विशालाक्षी मृडानी की दृष्टिप्रभाव से आनन्दमय लास्य नृत्य के रुप में बदल गया, उस समय वाग्देवी सरस्वती स्वयं अपनी वीणा कच्छपी पर श्रुति का सहयोग देती है। देवराज इन्द्र वेणुनाद श्रुति का मिलाप जोडता है। ब्रह्मा स्वयं तालियाँ बजाता है। स्वयं भगवती रमा नाट्य के संविधान की रचना करती है। विष्णु भगवान अपने मृदङ्गमर्दन सामर्थ्य से नृत्य की लयपुष्टि देते हैं। सभी देवता, ऋषि-मुनिगण सामने खडे होकर स्तुतिपाठों से मृडानीपति की सेवा में मग्न रहते हैं। माँ विशालाक्षी के दृक्पात की दुरधिगम निस्सीम महिमा ही इन सभी लोगों का एकमात्र आलम्बन है!

इतना ही नहीं, माँ विशालाक्षी के दृक्पात व कटाक्ष की महिमा अजीब और अनितर साधारण है। वह अपने कटाक्ष प्रसार से समस्त लोकों का पालन पोषण ही नहीं, समस्त प्राणियों की सर्व कामनाओं की पूर्ति भी करती हैं। महामाया माँ विशालाक्षी अन्नपूर्णा को सिंहासनस्था के रूप में संभावना व ध्यान करने मात्र से मन में स्थित सभी कामनाओं की पूर्ति होती है।

सिंहासनमधिष्ठाय सह देवेन शम्भुना
यद्यद्वाञ्छन्ति तत्रस्था मनसैव महाजनाः।
सर्वज्ञा साऽक्षिपातेन तत्तत्कामानपूरयत्।

तदृष्ट्वा चरितं देव्याः ब्रह्मा लोकपितामहः।
कामाक्षीति तदाभिख्यां ददौ कामेश्वरीति च॥

(ब्रह्माण्डपुराण-ललितोपाख्यान १०-३७से३९)

माँ अखण्ड चैचन्यस्वरूपा हो विराजमान है। इसलिए वह ललिता के नाम से प्रसिद्ध हुई।ललिता शब्द की व्युत्पत्ति-*'लोकानतीत्य ललते इति ललिता''* बतायी गयी है। वह समस्त ब्रह्माण्डों के ऊपर यह कोटिसूर्यप्रभाभासमान और चन्द्रकोटि सुशीतला हो अपने विलक्षण प्रकाश से विराजमान है। 'माँ विशालाक्षी को प्रभु विश्वनाथ कामेश्वर के साथ महासिंहासन पर विराजमान हो'-इस प्रकार की संभावना करने मात्र से समस्त प्राणियों के सब से सब कामनाओं की पूर्ति हो जाने लगी। इस अद्भुत को देखकर ब्रह्माजी, *'कामाक्षी'* और *'कामेश्वरी'* नामों से उन की स्तुति कर चुके थे। ऐसी माँ की उपस्थिति से सभी देवी-देवता अपने अपने आवास छोडकर काशी पधारे थे।

श्रीकालराजःप्रमथाधिपस्तथा
नन्दीशशृङ्गीशमुनीशसूर्याः।
आज्ञां त्वदीयां प्रसमीक्षका मुहुः
काश्यां स्थितिं प्राप्नुवतस्सुखाय॥ (काशी रहस्य)

काल का अधिनेता भौरव, प्रमथाधिनाथ नन्दी, श्रुङ्गी, मुनिवर, द्वादशादित्य-ये सभी माँ विशालाक्षी, अन्नपूर्णा की आज्ञा की प्रतिक्षा करते रहते हैं कि आदेश व इशारा मिल जाय और हम काशी में सानन्द निवास करें, जिस में माँ अन्नपूर्णा की सामीप्य मुक्ति पाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। देवता लोग स्वर्गवास से भी काशी वास को ही श्रेष्ठ मानते है

वरमेते पक्षिमृगाः पशवः काशिवासिनः
येषां न पुनरावृत्तिः न देवा न पुनर्भवाः॥

काशीस्थैः पतितैस्तुल्याः न वयं स्वर्गिणः क्वचित् ।
काश्यां पातात् भयं नास्ति स्वर्गे पाताद्भयं महत् ।।

....

शशकैः मशकैः काश्यां यत्पदं हेलयाप्यते ।
तत्पदं नाप्यतेऽन्यत्र योगयुक्त्यापि योगिभिः।।

(काशी खण्ड अध्याय ३-७४ से ७८)

देवता लोग काशी में प्रवेश कर आपस में काशी वासियों के भाग्य की प्रशंसा करते हैं- काशी में रहनेवाले पशु-पक्षि मृगादि नीच प्राणि भी हम से बढकर भाग्यशाली हैं , क्यों कि उनको पुनर्भव माने पुनर्जन्म नहीं होती । काशी में पैदा हुए पतित चण्डाल आदि जघन्य मानव भी स्वर्गवासियों से श्रेष्ठ हैं । क्यों कि उनको मुक्ति निश्चित है। इसलिए पुनः गर्भपात का भय उन्हें नहीं । स्वर्गवाशियों को अपने संचित पुण्य के अनुभव की पूर्ति हो जाने पर उन्हें फिर जन्म लेना ही पडेगा । इसलिए काशीवासी अन्त्यज और पुल्कस भी हम देवताओं से श्रेष्ठ हैं । काशी मे जन्म लिए मशक मक्षिकादि क्षुद्र कीटों को जो सुगति प्राप्त होती है, उस प्रकार की सुगति योग साधनाओं से सिद्ध योगी भी नहीं पा सकते । इस प्रकार देवता लोग भी काशीवास की प्रशंसा कर उसके लिए तडपते रहते है। यह सब माँ अन्नपूर्णा की कृपा व अनुकम्पा कही प्रभाव है। इसी से ***'विश्वनाथ नगरी गरीयसी'*** बताई गई है।

<u>परिक्रमा व प्रदक्षिणा का माहात्म्य</u> :- सर्वतीर्थमयी काशी में देवी गौरी और विश्वनाथ की पूजा विशेष फलप्रद माना गया है।

''ततोऽपि कोटिगुणितमन्तर्गेहप्रदक्षिणा।
अन्तर्गेहाद्द्विगुणं भवानीसुप्रदक्षिणा।।''-काशी पूजन से भी विश्वनाथजी के अन्तर्गृह की प्रदक्षिणा कोटिगुणित फलदायी और माँ

भवानी की प्रदक्षिणा उस से भी बहुगुण फलप्रद मानी गयी है। स्वयं श्रीमन्नारायणजी नारद को राजा जयद्रथोपाख्यान में समझाते हैं-

''चक्रवाकः स्थितःपूर्वं नीचयोनिगतोऽपिवा ।
अज्ञानतोऽपि कृ तवान् अन्नपूर्णाप्रदक्षिणम्।।
तेनपुण्यप्रभावेणस्वर्गेकल्पद्वयस्थितिः।
त्रिकालज्ञानताऽप्यस्मिन्नभूज्जन्मनि सुव्रत!'' अर्थात् नीच पक्षिजाति में जन्म लिए एक चक्रवाक पक्षी अनजाने कभी माँ अन्नपूर्णा के मन्दिर की प्रदक्षिणा की, जिस के पुण्यप्रभाव से उस को कल्पद्वय का स्वर्गवास के उपरान्त राजा जयद्रथ के रूप में उत्तम क्षत्रियकुल में जन्म और त्रिकालज्ञता संप्राप्त हुयीं।*(श्रीदेवीभागवत-एकादशस्कन्ध-अठारहवाँ अध्याय)*

'अन्नपूर्णा', 'भवानी', 'विशालाक्षी' **-**ये तीनों माँ पार्वती के विभवावतार माने जाते हैं। इन तीनों एकरूपता (पर्यायत्व) को अन्नपूर्णोपनिषत् का ऋभुवचन प्रमाणित करता है। यह उपनिषत ऋभु-निदाघ संवाद के रूप में है। महर्षि ऋभु की उपासना से प्रसन्न होकर माँ अन्नपूर्णा उन्हें आत्मविद्या प्रदान करती है। तुरन्त उन्होने माँ अन्नपूर्णा को ***विशालाक्षी, भवानी, पार्वती*** नामो से सम्बोधित करते हुए आत्मतत्त्व के प्रादुर्भाव होने की प्रार्थना किये -

''एवं गते बहुदिने प्रादुरासीन्ममाग्रतः ।
अन्नपूर्णा विशालाक्षी **स्मयमान मुखाम्बुजा ।**
अहो वत्स! कृतार्थोऽसि वरं वरय मा चिरम् ।
एवमुक्तो *भवान्या* वै मयोक्तं मुनिपुङ्गव !
आत्मतत्त्वं मनसि मे प्रादुर्भवतु *पार्वति* !''

(अन्नपूर्णोपनिषत् - प्रथमाध्याय)

महर्षि ऋभु कहते हैं - इस प्रकार माँ अन्नपूर्णा की उपासना करते करते बहुत दिन बीत गये। एक दिन विशालाक्षी माँ अन्नपूर्णा, हँसती हुई मेरे सामने प्रत्यक्ष हुई और बोली - ''वत्स! तुम कृतार्थ हो गये। मैं तुम्हारी तपस्या व उपासना से प्रसन्न हूँ। बिना देरी के अभीष्ट वर को माँगो''। हे मुनिश्रेष्ठ निदाघ ! माँ की वाणी को सुनकर मैं बोला - ''अम्बे ! पार्वति! मेरे मन में आत्म तत्त्व की जागृति हो''

इस संवाद में ***'पार्वती, विशालाक्षी, भवानी***'-ये तीनों शब्द माँ ***अन्नपूर्णा*** के पर्याय व प्रतिरूप के अर्थ में प्रयुक्त हुए। इसी प्रकार की प्रस्तुति नारायण भट्टर के **'त्रिस्थली सेतु महात्म्य'** में भी किया गया है।

शिवे ! सदानंदमये ह्यधीश्वरि !
श्री पार्वति! ज्ञानमयेम्बिके उमे!
मातर्विशालाक्षि ! भवानि ! सुन्दरि !
त्वां अन्नपूर्णे ! शरणं प्रपद्ये ॥ - भाव स्पष्ट हैं।

अन्नपूर्णा की स्वर्णमूर्ति (अन्नपूर्णा मन्दिर-वाणासी)

सन् १७२९ में महराष्ट्र का महराज पीष्वा बाजीराव ने प्रस्तुत अन्नपूर्णा मन्दिर का निर्माण किया था। सन् १९७७ में माँ अन्नपूर्णा की, उसके बायें और दायें ओर श्रीदेवी और भूदेवी की स्वर्णमूर्तियाँ, एवं सामने विश्वनाथ की रजतमूर्ति को, श्रीशृङ्गेरी जगद्गुरु महराज अपने संस्थान की ओर से भेंट व उपहार के रूप में समर्पण कर चुके थे।
(www.astrology for you.com.- 'Goddess Annapurnadevi Temple, Near Kasi Viswanath Temple. Kasi.')

अन्ततो गत्वा माँ अन्नपूर्णा की इस तात्त्विक समालोचना के उपसंहार के रूप में यह प्रस्तुत करते हैं कि माँ अन्नपूर्णा -

१. शंकराचार्य की उक्ति के अनुसार ***'तुरीया' कापि परब्रह्म महिषी''*** जो अपनी दुरधिगम निस्सीम महिमा से चराचर विश्व को अपनी

महामाया के प्रभाव से घुमाती रहती है।

२. मूल प्रकृति के रूप में सृष्टि कार्य में ***'भव' की आहो पुरुषिका शक्ति 'भवानी'*** हैं ।

३, समस्त चराचर प्राणियों कि आर्ति हारिणी एवं भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी, विश्वनाथ कुटुम्बिनी श्री काशीपुराधीश्वरी **निरतान्नदात्री श्री *अन्नपूर्णा*** है।

४.हरि हर जैसे ज्ञानियों को भी अपने मोह जाल में फँसाकर सम्मोहित करने वाली ***महामाया*** हैं.

५. शिवजी की अनपायिनी माने सदैव अर्धांग में विराजमान माँ ***पार्वती*** है।

६. महर्षि ऋभु जैसे उपासकों को आत्मविद्या प्रदान करने वाली ***गुरुमूर्ति*** है।

इतनी महत्वपूर्ण शक्ति शालिनी माँ समस्त प्राणियों का पालन पोषण सदैव करती रहती है। कैसे ? माँ अन्नपूर्णा के रूप में । प्राणियों के सभी शरीरों का प्रादुर्भाव अन्न से ही होता है। *''अन्नाद् भवन्ति भूतानि....* (गीता श्लोक- (कहा गया है) श्रुति भी - ***''अन्नाद्धयेव खल्विमानि भूतानि । जायन्ते । अन्नेन जातानि जीवन्ति । अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति''*** (तै- ५ वल्ली -२ अनुवाक) सभी प्राणी अन्न से पैदा होते हैं, अन्न से ही जीते है और अन्न में विलीन हो जाते है।

प्राणियों का प्राण शक्ति भी अन्न ही हैं। *''प्राणो वा अन्नम्''* (तै. उ. -३ वल्ली अनुवाक-७) इस प्रकार माँ अन्नपूर्णा की प्राण शक्ति और चौतन्य शक्ति सभी प्राणियों में भर पूर हो जीव यात्रा को निभाती रहती हैं। इसलिए **'माँ' शब्द सिर्फ अन्नपूर्णा देवी केलिए ही चरितार्थ** कहा

जासकता है, और कोई देवी देवता का नहीं । ऐसी जन्मदात्री प्राणदात्री और जीवयित्री-शक्ति की उपासना हर एक मानव का कर्तव्य है। इसीलिये श्रुति ने ***''मातृदेवो भव!''*** कहकर अनुशासन विधि माँ की उपासना का प्रथमोपदेश किया था।

उपासना शब्द की व्युप्तत्ति -***''उप-समीपे असनं स्थितिः उपासनम्''*** बतलाया गया है।

हम जिस महामाया परब्रह्म से इस उपाधि के रूप में जन्म लिये हैं। जीते ही उस महा माया में लीन होने का प्रयत्न हमें करना चाहिए । यही **'शिवज्ञान'** है। इस प्रकार के ***शिवज्ञान प्रदायिनी*** माँ अन्नपूर्णा ही हैं। अन्नपूर्णोनिषत श्रुति के प्रथमाध्याय में महर्षि ऋभु का वृत्तान्त इसे प्रमाणित करता है।

उपासना के दो मार्ग प्रधानतया व्यवहार में प्रसिद्ध हैं। वे हैं- भक्ति मार्ग और ज्ञानमार्ग। वेद शास्त्र के अध्ययन किये हुए उत्तमाधिकारी ही ज्ञान मार्ग में उपासना कर सकते हैं। भक्तिमार्ग सभी लेगों केलिए अनुसरणीय है। श्रद्धालु और मुमुक्षु लोग भक्तिमार्ग से ही मुक्ति को आसानी से पा सकते हैं।

भक्ति क्या है? 'भजनं भक्तिः'- भजन शब्द की यह व्युत्पत्ति **'भज-सेवायाम्'** नामक धातु से बताई गई है। भगवान की सेवा ही भक्ति कहलाती है। किसी न किसी तरह भगवान की (अर्चा)मूर्ति की सेवा करना ही भक्ति कहलाती है। ***'कलौ संकीर्तनान्मुक्तिः'***- कलियुग में भजन संकीर्तन से ही मुक्ति सुलभ होती है। व्रत-उपचारार्चना भी भजन व सेवा का एक खास तरीका है, जिस में हम सामने भगवान की मूर्ति को रखकर उस में ध्यान, आवाहन आदि उपचारों से प्राणप्रतिष्ठा कर, भगवान को स्वयं उपस्थित मानकर प्रत्यक्ष रूप में सेवा करने का अनुभव

पा सकते हैं। ऐसे व्रतविधान कल्पशास्त्र में और पुराणों में पाये जाते हैं। कल्पशास्त्र वेदाङ्ग है।

वेद और शास्त्र के विषय सभी लोगों के आचरण योग्य नहीं होते। इसलिए वेदसार को महर्षियों ने पुराणों के रूप में उपदेश किये थे। पुराणों की भषा सरल सुबोध और साधारण जनता केलिए उपादेय माने अनुष्ठानयोग्य विधिविधान को प्रस्तुत करने लायक है।

ऐसी सरल और सुबोध भाषा में, ***श्रीमद्भविष्योत्तर पुराण*** में जो ***अन्नपूर्णा व्रतविधान*** लोककल्याण की कामना से उपदिष्ट है। उस की विवेचना हम यथामति करेंगे।

माँ अन्नपूर्णा का व्रत

'माँ-अन्नपूर्णा' शब्दों की तात्त्विक विवेचना पहले किया जा चुका है। अब **'व्रत'** शब्द के अर्थ की विवेचना करेंगे। क्यों कि जो भी कर्माचरण किया जाता ह उसे अर्थज्ञान से करना है, नहीं तो वह निरर्थक बन जाता है। स्वयं श्रुति माता अर्थज्ञान की प्रशंसा इस प्रकार करती है-

'योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते- नाकमेति ज्ञानविधूत पाप्मा'- अर्थज्ञान से जो कर्माचरण में लगा रहता है, उस को समस्त मङ्गल और ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान से पापक्षय और स्वर्गप्राप्ति के उपरान्त मोक्ष भी मिलेगा। इसलिए अर्थज्ञान के साथ माँ अन्नपूर्णा के व्रतविधान की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

'व्रत' शब्द का निर्वचनः- 'व्रत' शब्द की व्युत्पत्ति-***'व्रियते देवः देवी वा अस्मिन्निति व्रतम्'*** बतलायी गयी है। व्रतविधान में हम अभीष्ट देवता के अर्चामूर्ति की कल्पोक्त व पुराणोक्त पद्धति के अनुसार पूजा कर सकते हैं। इस प्रकार **'अन्नपूर्णाव्रत'** में हमारी अभीष्ट अर्चामूर्ति माँ अन्नपूर्णा ही हैं।

व्रत का आरम्भः- अन्नपूर्णाव्रत मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी से मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी तक सत्रह दिनों में किया जाता है। बीच में तिथिद्वय व तिथि के एष्य हो जाने पर दिनों की संख्या में एक दिन की घट-बढ(न्यूनता व आधिक्य) होने की संभावना है। मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी तो शुरूवत का दिन है और शुक्ल षष्ठी परिसमाप्ति का- ये दोनों तिथियाँ निश्चित हैं। इस व्रत को एकभुक्त(एकाहार)नियम से, भक्ति और श्रद्धा के साथ करना चाहिए। शुद्ध हविष्यान्न (मूँग की दाल,चावल,जव का आटा, अरवी, केला,आलू, कन्द इत्यादि)का भोजन करना है।

व्रतमण्टप

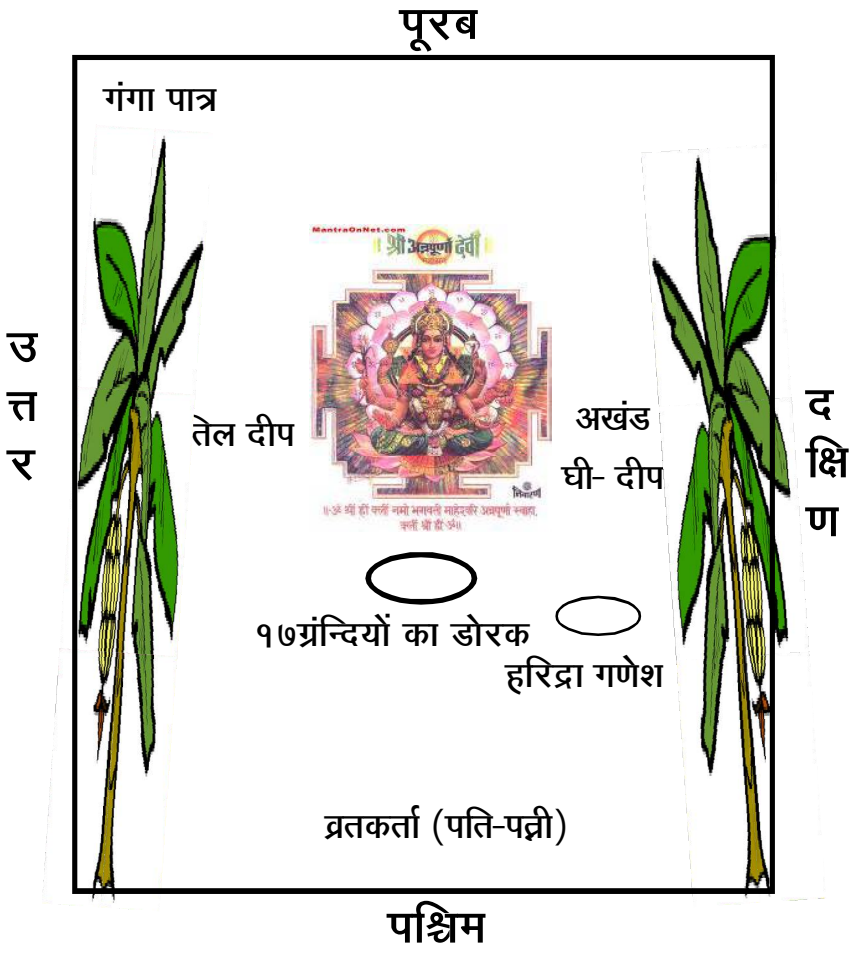

पूरब
गंगा पात्र
उत्तर
तेल दीप
अखंड
घी- दीप
दक्षिण
१७ग्रंन्दियों का डोरक
हरिद्रा गणेश
व्रतकर्ता (पति-पत्नी)
पश्चिम

व्रतमण्टप:– व्रतारम्भ के पहले, केल के पौधों से और रंगबिरंगे तोरण मालिकाओं से व्रतवेदि को सजाकर, उसपर समचतुरस्राकार मण्डल पर स्वच्छ सफेद वस्त्र के ऊपर पाँच कटोरियाँ व पौने एक किलो धान व चावल का प्रस्तार परोसना चाहिए। उस के बीच में धान के गुच्छों से बनाये गये कल्पवृक्ष के मूल में स्वर्णसिंहासन पर विराजमान,चन्द्रकलावतंसिनी,स्वर्णरत्नमय कलश और दर्वी से सुसज्जित,माँ अन्नपूर्णा की प्रसन्न अर्चा-मूर्ति/कलश/यंत्र/तिरंगीन चित्रपट की स्थापना प्राची(पूरब)दिशा में करना चाहिए। परितः षोडशदल रंगवल्लि के सोलह दलों में नन्दादि हसिन्यन्त परिवार शक्तियों के मूर्तियों की स्थापना करना है। दक्षिण दिशा में त्रिकोणाकार मण्डल में अखण्ड आज्य(घी का)दीप, और उत्तर दिशा में तैल दीप जलाना चाहिए। व्रत करनेवाले दम्पति को पूरब व उत्तर की ओर समुचित आसन पर बैठना चाहिए ।

माँ अन्नपूर्णा का व्रत

पूजास्थल को साफ कर, पद्म स्वस्तिक आदि रंगवल्लियों से सजाकर बीच में माँ अन्नपूर्णा की प्रतिमा व यंत्र की स्थापना करें-

पूजासामग्रीः- मण्डप के सजावट की सामग्री- दो केले के पौधे, आम के पत्ते, रंगबिरंगे तोरण, फूलमालायें,मण्डपवस्त्र,चावल व धान (ढाई किलो), माँ अन्नपूर्णा की प्रतिमा व यन्त्र,आवाहन कलश(नारियल और आमके पत्तों से सुसज्जित), गङ्गाजल-पात्र,छोटी सी तस्तरी में पाँच मुष्टियों का चावल, उस पर नागवल्लीदल पर विराजमान हरिद्रा गणेश,सत्रहगांठवाली रेशम की डोरी, कुंकुम, हरिद्राक्षताएँ, कपास के बनाये वस्त्र और यज्ञोपवीत, अष्टगन्ध, कलश, दर्भासन, घंटा, तस्तरी, कटोरी, आचमनी, अगरबत्ती व धूप कडी, कर्पूर, आरती , दूर्वा, बेल के पत्ते, फूल, केले, पान के पत्ते(५०),सुपारी, आग की पेटी(सलाई)१,नैवेद्य पात्र(ब्राह्मणों केलिए१६+सुहागिनों केलिए१६),गङ्गाजल व शुद्धोदक, आदि संभारों का संपादन यथाशक्ति करें।

व्रतारम्भः- व्रतकर्ता धर्मपत्नी के साथ सबेरे गङ्गादि पुण्य नदी में अथवा गङ्गादि नदियों का स्मरण करता हुआ उपलब्ध जलों से शिरःस्नान कर,अपने संप्रदाय का तिलक धारण करके,माँ अन्नपूर्णा के व्रत करने का संकल्प करें और पूजा-गृह में व्रतमण्टप के सामने पूरब व उत्तरमुखीन होकर दर्भासन या किसी पवित्र आसन पर बैठकर ईशान दिशा में गङ्गाजल से भरे पात्र को रखें, और स्वस्थचित्त से-

'पुण्डरीकाक्षाय नमः' मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीन बार दायें हाथ के अंगुष्ठ से शिर पर कटोरी में स्थित पानी को छिडकें,पश्चात्-

आचमनः- दायें हाथके अंगुष्ठ-तर्जनी योग से गोकर्ण जैसे मोडकर, आचमनी व चमच से जल को लेकर- ***'ॐ केशवाय स्वाहा'*** कहते हुए जल प्राशन करें।

'ॐ नारायणाय स्वाहा' कहते हुए जल प्राशन करें।

'ॐ माधवाय स्वाहा' कहते हुए जल प्राशन करें।- बाद में धर्मपत्नी के हाथ में इन्हीं नामों से 'स्वाहा' के बदले 'नमः' बताते हुए जल प्राशन करवायें। पश्चात्-

'ॐ गोविन्दाय नमः', 'ॐ विष्णवे नमः',
'ॐ मधुसूदनाय नमः', 'ॐ त्रिविक्रमाय नमः',
'ॐ वामनाय नमः', 'ॐ श्रीधराय नमः',
'ॐ हृषीकेशाय नमः', 'ॐ पद्मनाभाय नमः',
'ॐदामोदराय नमः' 'ॐ संकर्षणाय नमः',
'ॐ वासुदेवाय नमः', 'ॐ प्रद्युम्नाय नमः',
'ॐ अनिरुद्धाय नमः', 'ॐ पुरुषोत्तमाय नमः',
'ॐ अधोक्षजाय नमः', 'ॐ नारसिंहाय नमः',
'ॐ अच्युताय नमः', 'ॐ जनार्दनाय नमः',
'ॐ उपेन्द्राय नमः', 'ॐ हरये नमः',
'ॐ श्रीकृष्णाय नमः', 'ॐ श्रीकृष्णपरब्रह्मणे नमः'॥

-इन केशव नामों का संकीर्तन करना चहिए। (इस संकीर्तन से विष्णुसहस्त्रनाम संकीर्तन का फल बताया गया है ।)

भूतोच्चाटनः- 'उत्तिष्ठन्तु भूतपिशाचाः ये ते भूमिभारकाः- एतेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे'- (इस भूतोच्चाटन मंत्र से चारों ओर जल से प्रोक्षण करें)

प्राणायामः- दक्षिण नासिका रन्ध्र को दाहिनी अंगूठी से दबाकर, बायें

नासिका रन्ध्र के द्वारा हवा लेते हुए- ***'ॐभूः-ॐभुवः-ॐसुवः-ॐमहः-ॐजनः-ॐतपः-ओगँ् सत्यम्'*** इन सप्त व्याहृतियों को बताकर, मध्यमा और अनामिका से बायें नासिका रन्ध्र को ढकाकर दायें नासिका रन्ध्र से धीरे धीरे निःश्वास निकालना चाहिए।

बाद में मन ही मन (उपांशु रूप से)

'सप्रणव गायत्री सहित-*'ओमापो ज्योतिरसोमृतम्- ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्'* जप करें।

घण्टानादः- देवताओं के आह्वान के लिए, घण्टा बजाते हुए-

'आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुर्याद् घण्टारवं तत्र देवताह्वान लाञ्छनम्।।' इस श्लोकमंत्र को पढना चाहिए।

संकल्पः- मम उपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते श्री महाविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य आद्य ब्रह्मणःद्वितीय परार्थे, श्वेतवराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, प्रथमपादे, जम्बूद्वीपे, भारत वर्षे, भरतखण्डे, विक्रमशके, बौद्धावतारे, मेरोर्दक्षिणदिग्भागे, विन्ध्यस्य उत्तर आर्यावर्तैकदेशे, असीवरुणयोर्मध्ये, अविमुक्तवाराणसी क्षेत्रे, आनन्दवने, महास्मशाने, गौरीमुखे, त्रिकण्टक विराजिते, उत्तरवाहिन्याः भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे, ब्रह्मनाळे, महामणिकर्णिका क्षेत्रे, श्री काशी विशालाक्षी अन्नपूर्णा गङ्गासमेत श्रीकाशीविश्वनाथादि त्रयस्त्रिंशत्कोटि देवता गोब्राह्मण हरिहरगुरुचरण सन्निधौ-

अस्मिन्वर्तमान व्यावहारिक बार्हस्पत्यमानेन.....नाम संवत्सरे, चान्द्रमान सौरमानयोः.....नाम संवत्सरे, हेमन्तऋतौ, मार्गशीर्षमासे, कृष्णपक्षे पञ्चम्यां, शुभतिथौ,.....नक्षत्रयुत.... वासरे, शुभनक्षत्र, शुभयोग, शुभकरण एवं गुणविशेषणविशिष्टायां, शुभतिथौ श्रीमान्.... गोत्रोद्भवः... .....नामधेयः,

श्रीमतः ..... गोत्रोद्भवस्य.....नामधेयवतः, धर्मपत्नीसमेतस्य,सकुटुम्ब सपरिवारसमेतस्य, क्षेम-स्थैर्य-विजय-अभय-आयुः -आरोग्य- ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं,धर्मार्थकाममोक्षादि चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं,मम जन्मनक्षत्रवशात्, नामनक्षत्रवशात्, जन्मराशिनामराशिवशात्, जन्मलग्ननामलग्नवशात्, जन्म- अनुजन्म- त्रिजन्म- सांघातिक-सामुदायिकफलवशात्, अध्यात्मिक- अधिभौतिक- अधिदैविक दुःखत्रय निवृत्त्यर्थं, गोचारानुवर्तित सकल ग्रहदोष परिहारार्थं, सकल मृत्युदोष परिहारार्थं, परकीयमान यंत्र- मंत्र- तंत्र- विषशल्य- मूलिका- चूर्ण प्रयोग, आभिचारिक क्रियादिजनित दुष्टारिष्ट परिहारार्थं, मम ये ये ग्रहाः अरिष्टस्थानस्थिताः, तेषां ग्रहाणां शुभैकादशस्थान फलावाप्त्यर्थं, मम इहजन्मनि, जन्मान्तरेषु जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु, बाल्य-यौवनाद्यवस्थासु, मनोवाक्कायेन्द्रिय सकलव्यापारैः, रहसि प्रकाशकृत, अज्ञानतो ज्ञानतश्च मयाकृत समस्त पापक्षयार्थं, मम देहगत,चर्मगत,अस्थिगत, मांसगत,रोमगत,नाडीगत समस्त बाधानिवृत्त्यर्थं, दीर्घायु, विपुल धन,धान्य,हिरण्य,रत्नाद्यविच्छित्ति, अनन्तकीर्ति, स्थिरलक्ष्मी, शत्रुपराजयपूर्वक सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं, समस्त सुखभोगपूर्वक शतवर्षजीवन सिद्ध्यर्थं, परिवारदेवता समेत ***श्री काशीअन्नपूर्णेश्वरीव्रतं ,श्री भविष्योत्तरपुराणोक्त प्रकारेण,*** संभवद्भिःद्रव्यैः, संभवद्भिः उपचारैः, यथाशक्ति यथावकाशमहं करिष्ये-

अप उपस्पृश्य (पात्रस्थ जल का स्पर्श करें)

निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं आदौ महागणाधिपतिपूजामहं करिष्ये,

तदङ्ग कलशाराधनं करिष्ये-(कटोरी व पंचपात्र के जल का स्पर्श करें)

कलशाराधनम्

कटोरी व पंचपात्र के चारों ओर गन्ध और कुंकुम से अलंकार करके उस में पुष्प या तुलसीदल और हरिद्राक्षतों को (कुछ गङ्गाजल भी) डालकर कलश व पात्र पर पत्नी अपने दायें हाथ उस पर रखें और उस के हाथपर पति अपने दायें हाथ से ढकाकर पढें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः।
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः
अंगैश्च सहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ॥
अत्र तिष्ठतु गायत्री सावित्री च सरस्वती
स्कन्दो गणपतिश्चैव शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
गङ्गे! च यमुने! चैव गोदावरि! सरस्वति!
नर्मदे! सिन्धु! कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
कावेरी तुङ्गभद्रा च कृष्णवेणी च गौतमी
भागीरथी च विख्याताः पञ्च गंङ्गाः प्रकीर्तिताः ॥

आयान्तु परिवारदेवता सहित श्री काशी अन्नपूर्णेश्वरी देवता पूजार्थं, श्री महागणाधिपति देवता पूजार्थं च दुरितक्षय कारकाः - इति कलशोदकेन गायत्र्या च देवं आत्मानं पूजा द्रव्याणि च संप्रोक्ष्य (पात्र में अभिमंत्रित जल को पुष्प / तुलसी दल से देवता मूर्तियों को, हरिद्रा गणपति, पूजाद्रव्य और अपने पर प्रोक्षण करना (छिडकना) चाहिए ।

महागणाधिपतिपूजाः-

प्राणप्रतिष्ठाः- हरिद्रा गणपति पर पुष्प को रखते हुए -''*महागणाधिपतिं साङ्गं ,सायुधं, सशक्ति, पत्नीपुत्र, परिवार समेतं आवाहयामि, स्थापयामि,*

पूजयामि । श्री महागणाधिपति प्राणप्रतिष्ठापन मुहूर्तः सुमुहूर्तोऽस्तु ।

ध्यानम्

ॐ - वक्रतुण्ड! महाकाय! सूर्यकोटि समप्रभ!
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

श्री महागणाधिपतये नमः ध्यायामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः आवाहयामि - आवहनं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः रत्नसिंहासनं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः मुखे आचमनं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः स्नानं समर्पयामि (पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः वस्त्रयुग्मं समर्पयामि

(हल्दी से युक्त कपास को वस्त्र के प्रत्याघ्राय सूप में समर्पण करना चाहिए)

श्री महागणाधिपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि (यज्ञोपवीत समर्पण करें)

श्री महागणाधिपतये नमः गन्धं लेपयामि (श्रीगन्ध को समर्पित करें)

श्री महागणाधिपतये नमः सर्वाण्याभरणानि समर्पयामि (आभरणार्थ पुष्प/अक्षत चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमःपुषपैः पूजयामि

(पुष्प/दूर्वा/अक्षतों से भी पूजा किया जा सकता है)

ॐ सुमुखाय नमः, ॐ एकदन्ताय नमः, ॐ कपिलाय नमः, ॐ गजकर्णकाय नमः,ॐ लम्बोदराय नमः, ॐ विकटाय नमः, ॐ विघ्नराजाय नमः,ॐ गणाधिपाय नमः, ॐ धूमकेतवे नमः, ॐ गणाध्यक्षाय नमः, ॐ फालचन्द्राय नमः, ॐ गजाननाय नमः, ॐ वक्रतुण्डाय नमः, ॐ शूर्पकर्णाय नमः, ॐ हेरम्बाय नमः, ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः, ॐ कुमारगुरवे नमः, ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः।।

श्री महागणाधिपतये नमः नानाविध परिमळपत्रपुष्पादि पूजां समर्पयामि।

श्री महागणाधिपतये नमः धूपमाघ्रापयामि। (अगरबत्ती या धूप की कडी जलायें)

श्री महागणाधिपतये नमः दीपं दर्शयामि (दीप जलाकर दिखायें)

श्री महागणाधिपतये नमः गुडखण्डं/ कदलीफलं निवेदयामि।(गुड /केले का निवेदन करना है)

श्री महागणाधिपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

श्री महागणाधिपतये नमः नीराजनं दर्शयामि। (आरती चढायें)

श्री महागणाधिपतये नमः मंत्रपुष्पं समर्पयामि- ***'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्'***(इस मंत्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करें)

<u>क्षमा प्रार्थनाः-</u>

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तियुक्तं गणाधिप!
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु ते।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व गणनायक!
आयुर्देहि यशो देहि श्रियं सौख्यं च देहि मे।
पुत्रान् पौत्रान् प्रपौत्रांश्च देहि मे गणनायक!

श्री महागणाधिपतये नमः अपराधक्षमाप्रार्थना नमस्कारान् समर्पयामि।

<u>पूजासमर्पणः-</u>

अनया ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजया भगवान् श्रीमहागणाधिपो देवता सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु। उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। (आचमनी से जल लेकर अक्षतों के साथ तस्तरी में छोड दें)

<u>प्रसाद स्वीकरणः-</u>

श्री महागणाधिपति देवता प्रसादं शिरसा गृह्णामि (श्री गणेशजी के चरणों पर समर्पित फूल-पत्ते व अक्षतों को श्रद्धापूर्वक शिर पर धारण करें)

<u>उद्वासनः-</u>**श्री महागणाधिपतिं यथास्थानमुद्वासयामि, शोभनकाले पुनरागमनाय च।**(इस प्रकार प्रार्थना कर गणेशजी को तस्तरी के

साथ ईशान्य दिशा कोण में रखें)

———o———

श्री अन्नपूर्णाव्रताङ्गत्वेन पुनः संकल्प

पूर्ववत् केशव नामों से आचमन और प्राणायाम करें बाद में -

मम उपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे, शोभने मुहूर्ते, श्री महाविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, आद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे, श्वेतवराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, प्रथमपादे, जम्बूद्वीपे, भारत वर्षे, भरतखण्डे, विक्रमशके, बौद्धावतारे, मेरोर्दक्षिणदिग्भागे, विन्ध्यस्य उत्तर आर्यावर्तैकदेशे, असीवरुणयोर्मध्ये, अविमुक्त वाराणसीक्षेत्रे, आनन्दवने, महास्मशाने, गौरीमुखे, त्रिकण्टकविराजिते, उत्तरवाहिन्याः भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे, ब्रह्मनाळे, महामणिकर्णिकाक्षेत्रे, श्रीकाशीविशालाक्षि अन्नपूर्णा गङ्गासमेत श्रीकाशीविश्वनाथादि त्रयस्त्रिंशत्कोटि देवता गोब्राह्मण हरिहरगुरुचरणसन्निधौ-

अस्मिन्वर्तमान व्यावहारिक बार्हस्पत्यमानेन.....नाम संवत्सरे, चान्द्रमान सौरमानयोः.....नाम संवत्सरे, हेमन्तऋतौ, मार्गशीर्षमासे, कृष्णपक्षे पञ्चम्यां, शुभतिथौ,.....नक्षत्रयुत.... वासरे, शुभनक्षत्र शुभयोग शुभकरण एवं गुणविशेषणविशिष्टायां, शुभतिथौ श्रीमान्.....गोत्रोद्भवः.....नामधेयः, श्रीमतः ..... गोत्रोद्भवस्य.....नामधेयवतः, धर्मपत्नीसमेतस्य,सकुटुम्ब सपरिवारसमेतस्य, क्षेम-स्थैर्य-विजय-अभय-आयुः -आरोग्य- ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थकाममोक्षादि चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं, मम जन्मकाल पभृति, एतत्क्षणपर्यन्तं, ज्ञान-अज्ञानकृत सकल दुरितपरिहारार्थं, अध्यात्मिक- अधिभौतिक- अधिदैविक तापत्रय परिहारार्थं, जन्मनक्षत्र, नामनक्षत्र, जन्मराशि, नामराशि, जन्मलग्न.

नामलग्न वशात् सर्वविध दोषपरिहारार्थं, अनुलोम, विलोम दशान्तरदशा, विदशा सूक्ष्मदशा, प्राणदशा विदशा सर्वग्रहदोष निवारणार्थं, मम गृहे स्थिर लक्ष्मी, कीर्ति, लाभ, शत्रु पराजय सिद्ध्यर्थं, सर्व कार्येषु दिग्विजयता सिद्ध्यर्थं, मनोभीष्ट फल सिद्ध्यर्थं, अखण्ड विद्याभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थकाममोक्षादि चतुर्विध फल पुरुषार्थसिद्ध्यर्थं भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, कैवल्य सिद्ध्यर्थं, परिवारदेवतासहित *श्री काशी अन्नपूर्णेश्वरीव्रतं*- संभवद्भिः द्रव्यैः, संभवद्भिः उपचारैः, संभवता नियमेन, यथाशक्ति उपचारर्चना पुरस्सरं अहं करिष्ये -

(पंचपात्र के जल को मध्याङ्गुलि से छुयें।)

अखण्डदीप प्रज्वलन

मण्टप के दक्षिण में गोमय से शुद्धि करके,त्रिकोणाकार मण्डल के बीचमें एक बडे दीप-पात्र में गाय के आज्य(घी) भरकर,**'श्री अन्नपूर्णाव्रताङ्गत्वेन अखण्डदीपाराधनमहं करिष्ये** 'कहते हुए दीप को जलायें। (व्रतपरिसमाप्ति तक यह दीप जलता ही रहें,माने सोलह व सत्रह दिनों तक इस की रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए) पश्चात् (दीप की)

पञ्चोपचार पूजा

अखण्डदीप ज्योतिषे नमः लं पृथ्वी तत्त्वात्मने गन्धं लेपयामि ।

अखण्डदीप ज्योतिषे नमः हं आकाश तत्त्वात्मने पुष्पं पूजयामि ।

अखण्डदीप ज्योतिषे नमः यं वायु तत्त्वात्मने धूपमाघ्रापयामि ।

अखण्डदीप ज्योतिषे नमः रं वह्नि तत्त्वात्मने दीपं दर्शयामि ।

अखण्डदीप ज्योतिषे नमः सं सर्व तत्त्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि ।

पञ्चोपचारपूजा के उपरान्त -

मं।। दीपदेवि! नमस्तुभ्यं कर्मसाक्षिन्नविघ्नकृत् ।

यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरा भव! - इस श्लोकमन्त्र से अखण्ड दीप देवी की प्रार्थना करें। बाद में-

तैलदीप

मण्डप के उत्तर में फिर गोमय से शुद्धि करके,त्रिकोणाकार मण्डल के बीचमें एक दीप-पात्र में तिल-तेल भरकर,**'श्री अन्नपूर्णाव्रताङ्गत्वेन तैलदीपाराधनमहं करिष्ये '**कहते हुए दीप को जलायें। पश्चात् -(उस तिल-दीप की)

पञ्चोपचार पूजा

दीप ज्योतिषे नमः लं पृथ्वीतत्त्वात्मने गन्धं लेपयामि ।

दीप ज्योतिषे नमः हं आकाशतत्त्वात्मने पुष्पं पूजयामि ।

दीप ज्योतिषे नमः यं वायुतत्त्वात्मने धूपमाघ्रापयामि ।

दीप ज्योतिषे नमः रं वह्नितत्त्वात्मने दीपं दर्शयामि ।

दीप ज्योतिषे नमः सं सर्वतत्त्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि ।

पञ्चोपचारपूजा के उपरान्त -

मं।। दीपदेवि! नमस्तुभ्यं कर्मसाक्षिन्नविघ्नकृत् ।

यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरा भव! - इस श्लोकमन्त्र से दीप देवी की प्रार्थना करें।

भूशुद्धि

मण्डप के मध्य भाग में अष्टगन्धमिश्रित जल से-

मं।। सर्वकर्मसमुद्भूते! सर्व सस्याभिवृद्धये ।

देहि! मे सर्वसौभाग्यमस्मिन् कर्मणि मेदिनि । इस श्लोकमन्त्र से प्रोक्षण करके, उस पर स्वस्तिक/ अष्टदलपद्म/ सर्वतोभद्र/ श्रीमण्डल की रंगवल्ली लिखकर, उस पर स्वच्छ मण्टप-वस्त्र बिछाकर, उस पर चावल/ धान को समतल में परोसकर प्रस्त करें और बीच में एक कलश

श्री अन्नपूर्णा पञ्चायतन यंत्र

में गङ्गाजल/ शुद्धोदक डालते हुए-*'ॐ वरुणाय नमः'* मंत्र से वरुणदेव का आवाहन करें, और उस कलश में यथाशक्ति स्वर्ण, नवरत्न, अष्टमृत्तिका, डालकर कलश के ऊपर पूर्ण-फल नारियल रखें, चारों ओर आम के पत्तों को वलयाकार में सजायें। उस के पीछे धान्यगुच्छों से कल्पवृक्ष बनायें, आगे उस के मूल में माँ अन्नपूर्णा की अर्चामूर्ति/ यन्त्र/ सुसज्जित चित्र की स्थापना करें जिस में माँ प्रसन्न दर्शन का अनुभव हो।

कलश के चारों कोणों में-

'' ईशान्यां विश्वनाथमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि''- इस मंत्र से पुष्प और अक्षतों को रखकर दायें ओर ईशान कोण में भगवान **विश्वनाथजी** का आवाहन करें। बाद में-

''आग्नेय्यां ढुंढिराजगणपतिमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि''- इस मंत्र से पुष्प और अक्षतों को रखकर दायें ओर नीचे आग्नेय कोण में भगवान **ढुण्ढिराज गणेश** का आवाहन करें। पश्चात्-

''नैऋत्यां लोलार्कादित्यमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि''- इस मंत्र से पुष्प और अक्षतों को रखकर बायें ओर नीचे नैऋतिकोण में भगवान **लोलार्कादित्य** का आवाहन करें। बाद में-

''वायव्यकोणे बिन्दुमाधवमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि''- इस मंत्र से पुष्प और अक्षतों को रखकर बायें ओर वायवीयकोण में **भगवान बिन्दुमाधव** का आवाहन करें।

रक्षासूत्र (पवित्र) बंधनम्

पट्ट सूत्रं अधो सूत्रं गृहीत्वा कुंकुमारुणम्।
दद्यात् सप्तदश ग्रंथीन् चन्दनागरुचर्चितान्।
स्थापयित्वान्नपूर्णां च डोरकं धारयेत् पुनः।
पूजयेदम्बिकां देवीं उपचारैः मनोरथैः।।

रेशम का डोरा लेकर उसे गन्धकुंकुमाङ्कित करें और सत्रह गांठें बांधकर चन्दन एवं धूप से उन गांठों को सजाकर, कलश व अन्नपूर्णा के प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा करना चाहिए।

डोरक-प्रतिमादि शोधनम्

मण्डपस्य मध्ये कलशं/प्रतिमां संस्थाप्य, सप्तदशग्रंथियुक्तं डोरकं(पवित्रं) परितः प्रस्तार्य पंचामृतैः संशोध्य-

(मण्डप के मध्य में कलश की स्थापना करें, और सत्रह ग्रंथियों से युक्त डोरी को कलश के सामने रखकर-

''ॐ शिवप्रसादसम्भूत! ग्रंथिरम्य पवित्रक!

देवीकार्यं समुद्दिश्य नीतं चासि शिवाज्ञया।।''- कहते हुए प्रोक्षण करें और बाद में- पंचामृतों से प्रोक्षण करें)

''स्नानं पञ्चामृतैर्देवि ! गृहाण परमेश्वरि!

रक्षासूत्रं पवित्रं च कृत्वा दीक्षां प्रयच्छ मे ।। (इस मंत्र से सत्रह गांठों पर प्रोक्षण करें।)तत्पश्चात्-

पञ्चोपचार पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः गंधं लेपयामि (श्रीगंध को समर्पित करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः पुष्पं पूजयामि (पुष्प से पूजन करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि(धूप कडी या अगरबत्ती जलायें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः दीपं दर्शयामि (दीप जलाकर दिखायें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि (केला दूध या अन्य किसी नैवेद्य को समर्पित करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः ताम्बूलादि सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ग्रन्थिपूजा

प्रणवं चन्द्रमा वह्निः ब्रह्मा नागो गुहो रविः।
साम्बं च सर्वदेवांश्च नव ग्रंथिषु पूजयेत् ॥

ॐ प्रणवाय नमः प्रथम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ चन्द्रमसे नमः द्वितीय ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वह्नये नमःतृतीय ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ ब्रह्मणे नमः चतुर्थ ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ नागाय नमः पञ्चम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ गुहाय नमः षष्ठ ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ रवये नमः सप्तम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ साम्बाय नमः अष्टम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ सर्वदेवेभ्यो नमः नवम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।

महालक्ष्मीसहित अष्टमातृकार्चनम्

ॐ ब्राह्म्यै नमः दशम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ माहेश्वर्यै नमः एकादश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ कौमार्यै नमःद्वादशग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वैष्णव्यै नमः त्रयोदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वाराह्यै नमः चतुर्दश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ इन्द्राण्यै नमः पञ्चदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ चामुण्डायै नमः षोडश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सप्तदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।

परिवारदेवतासहित माँ अन्नपूर्णाजी की प्राणप्रतिष्ठा

(कलश या प्रतिमा पर फूल या माला चढाकर उस पर दायें हाथ रखकर)

मं ॥*ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः- पुनः प्राणमिह नो देहि भोगं ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडयानः स्वस्ति- अमृतं वै प्राणाः- अमृतमापः- प्राणानेव यथास्थानमुपह्वयते-* परिवारदेवतासमेत श्री अन्नपूर्णे! आवाहिता भव! सुप्रतिष्ठिता भव! सुप्रीता भव! सुप्रसन्ना भव! स्थिरा भव! वरदा भव! स्थिरासनं कुरु कुरु स्वाहा! परिवार देवता सहित श्रीअन्नपूर्णादेव्याः प्राणप्रतिष्ठापन मुहूर्तः सुमुहूर्तोऽस्तु।-(इस मंत्र से प्राणप्रतिष्ठा करें।)

उपचारार्चनम्

अन्नपूर्णां परां देवीं भोगमोक्षप्रदां शिवाम्।
ध्यानमात्राभिसंतुष्टां ध्यायेमानन्यचेतसा॥

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः ध्यायामि। (माँ के चरणोंपर पुष्पाञ्जलि चढायें)

एह्येहि देवदेवेशि अन्नपूर्णे महेश्वरि।
पूजां गृहाण मे मातः करुणावरुणालये॥

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः आवाहयामि।
(आवाहन मुद्रा से आवाहन करें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः नानारत्नखचित दिव्य सिंहासनं समर्पयामि। सिंहासनार्थं पुष्पं पूजयामि।(पुष्पाक्षतों को समर्पित करें)

अन्नदायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (पुष्प से जल को माँ के चरणों पर छिडकें)

गिरिशकान्तायै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।(पुष्प से जल को माँ के हाथों पर छिडकें)

उमायै नमः मुखे आचमनं समर्पयामि।(पुष्प से जल को माँ को समर्पित करें)

श्री जगन्मात्रे नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

श्री गिरिजायै नमःदिव्यश्री चन्दनं समर्पयामि।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः सर्वाण्याभरणानि समर्पयामि।

अथ पुष्पार्चनम्

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले
श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

पुष्पैः पूजयामि।(१०८नामों से पूजन करें)

श्री अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामावलिः

श्रीं श्रीमात्रे नमः।
श्रीं श्रीमहादेव्यै नमः।
श्रीं श्रीमत्यै नमः।
श्रीं श्रीप्रदायै नमः।
श्रीं अन्नपूर्णायै नमः।
श्रीं सदापूर्णायै नमः।
श्रीं पूर्णब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः।
श्रीं आनन्दपूर्णायै नमः।
श्रीं आनन्दायै नमः।
श्रीं आनन्दवनवासिन्यै नमः।(१०)
श्रीं नित्यान्नदाननिरतायै नमः।
श्रीं नित्यानन्दप्रदायिन्यै नमः।
श्रीं अन्नदायै नमः।
श्रीं वसुदायै नमः।
श्रीं श्रीदायै नमः।

श्रीं आखण्डलसमर्चितायै नमः।
श्रीं अन्नार्तिहारिण्यै नमः।
श्रीं नित्यायै नमः।
श्रीं निखिलागमसंस्तुतायै नमः।
श्रीं अन्नप्रदानसंतुष्टायै नमः।(२०)
श्रीं क्षुद्बाधाविनिवारिण्यै नमः।
श्रीं अन्नाहुतिसमाराध्यायै नमः।
श्रीं अन्नराशिकृतालयायै नमः।
श्रीं भिक्षान्नदाननिरतायै नमः।
श्रीं भिक्षुकीकृतशंकरायै नमः।
श्रीं कुक्षिस्थाखिलब्रह्माण्ड-
संरक्षणपरायणायै नमः।
श्रीं कनत्कनकदर्वीकायै नमः।
श्रीं कलशाञ्चत्कराम्बुजायै नमः।
श्रीं दरहासकृताह्वान -
समर्चितसदाशिवायै नमः।
श्रीं अव्याजकरुणापूर्णायै नमः।(३०)
श्रीं करुणावरुणालयायै नमः।
श्रीं काशीपुराधिनाथायै नमः।
श्रीं काशीवासफलप्रदायै नमः।
श्रीं विश्वेश्वरप्राणनाथायै नमः।
श्रीं विशालाक्ष्यै नमः।
श्रीं विभूतिदायै नमः।
श्रीं विश्वनाथसमाराध्यायै नमः।
श्रीं विश्वकल्याणकारिण्यै नमः।
श्रीं विश्वसूत्यै नमः।
श्रीं विश्वनाथायै नमः।(४०)
श्रीं विश्वनाथविलासिन्यै नमः।
श्रीं माधवार्च्यायै नमः।
श्रीं माधवश्रियै नमः।
श्रीं माधवीपरिसेवितायै नमः।
श्रीं ढुंढिराजजनन्यै नमः।
श्रीं दण्डपाणिसमर्चितायै नमः।
श्रीं कालभैरवसंसेव्यायै नमः।
श्रीं वाराहीपरिरक्षितायै नमः।
श्रीं काशिकाकाशिन्यै नमः।
श्रीं काश्यै नमः।(५०)
श्रीं काशिकापुरगौरवायै नमः।
श्रीं काशिकाकल्पलतिकायै नमः।
श्रीं काशीनाथकुटुम्बिन्यै नमः।
श्रीं गुहाम्बायै नमः।
श्रीं गुरुमूर्त्यै नमः।
श्रीं गुह्यकेशार्चितायै नमः।
श्रीं गुहावासायै नमः।
श्रीं गुहाराध्यायै नमः।
श्रीं गुह्यगोप्त्र्यै नमः।
श्रीं गुणिप्रियायै नमः।(६०)
श्रीं गङ्गाराध्यायै नमः।
श्रीं गंभीरायै नमः।

श्रीं गङ्गातीरकृतालयायै नमः।
श्रीं गङ्गाजलाभिषेकार्च्यायै नमः।
श्रीं गङ्गाधरप्रियाङ्गनायै नमः।
श्रीं भवान्यै नमः।
श्रीं भावनागम्यायै नमः।
श्रीं भवसागरतारिण्यै नमः।
श्रीं मणिकर्णिकाभिषिक्तांघ्र्यै नमः।
श्रीमणिकर्णीपवित्रिण्यै नमः।(७०)
श्रीं षट्पञ्चाशद्गणेशार्च्यायै नमः।
श्रीं षडाननसमर्चितायै नमः।
श्रीं गणेशार्चनसंतुष्टायै नमः।
श्रीं मूलाधारसमुत्थितायै नमः।
श्रीं हव्यवाहनसंसेव्यायै नमः।
श्रीं स्वाधिष्ठानसमुज्ज्वलायै नमः।
श्रीं मणिपूरार्चितायै नमः।
श्रीं सौम्यायै नमः।
श्रीं जलतत्त्वानुभावितायै नमः।
श्रीं विशुद्धिचक्रसंपूज्यायै नमः।(८०)
श्रीं शुद्धविद्यायै नमः।
श्रीं सदाशिवायै नमः।
श्रीं आज्ञाचक्रान्तराळस्थायै नमः।
श्रीं चित्कळायै नमः।
श्रीं चिन्मय्यै नमः।
श्रीं शिवायै नमः।
श्रीं सहस्त्रारसमारूढायै नमः।
श्रीं सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः।
श्रीं षट्चक्रमध्यगायै नमः।
श्रीं शान्तायै नमः।(९०)
श्रीं सदाशिवसमन्वितायै नमः।
श्रीं शिवदायै नमः।
श्रीं शर्मदायै नमः।
श्रीं श्रीदायै नमः।
श्रीं सुखदायै नमः।
श्रीं शान्तिदायै नमः।
श्रीं शुभायै नमः।
श्रीं शाम्भव्यै नमः।
श्रीं शाम्भवाराध्यायै नमः।
श्रीं शाङ्कर्यै नमः।(१००)
श्रीं शंकरान्नदायै नमः।
श्रीं नित्यानुरक्तभिक्षान्नसंतर्पितसदाशिवायै नमः।
श्रीं नमस्कृतजनाभीष्टवरदानसमुत्सुकायै नमः।
श्रीं आदिशक्त्यै नमः।
श्रीं अमेयात्मायै नमः।
श्रीं ज्ञानवैराग्यमोक्षदायै नमः।
श्रीं श्रीपादुकार्चितपदायै नमः।
श्रीं सर्वदायै नमः।
श्रीं सर्वमङ्गळायै नमः। (१०८)

****

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः, ***धूपमाघ्रापयामि।***

(धूपकडी या अगरबत्ती को जलाकर दिखायें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः, ***दीपं दर्शयामि।***

(दीप जलाकर दिखायें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः, ***नैवेद्यं निवेदयामि।***

(क्षीरान्न,फल,आदि का निवेदन करें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः, ***ताम्बूलं समर्पयामि।***

(ताम्बूल- पान के तीन पत्तोंमें दो केले रखकर निवेदन करें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः- ***मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।***

(पुष्पाञ्जलि का समर्पण करें)

प्रार्थननमस्कारः-

ॐ अन्नपूर्णे ददस्वान्नं पशून्पुत्रान् यशः श्रियम्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोस्तु ते ।।

(पुष्पाञ्जलि को समर्पित करें)

रक्षाडोरकबन्धनम्:-

रक्षकं मोक्षदं श्रीदं सर्वविघ्ननिवारकम्।
ओजस्तेजप्रदं श्रीदं डोरकं धारयाम्यहम्।

इस प्रकार प्रार्थना करें और ***पुरुष दायें बाँह में, तथा नारी बाँयीं बाँह में डोरक का धारणकरें।*** बाद में स्वजनों के साथ ***कथाश्रवण करें।***

इस प्रकार लगातार सोलह दिनों तक, माँ अन्नपूर्णा की षोडशोपचार पूजन, डोरकधारण करके कथाश्रवण श्रद्धा और भक्ति के साथ करना चाहिए।(कथाश्रवण केसमय कुछ हरिद्राक्षतों को हाथ में रखकर कथा को सुनें, और उन अक्षतों को कलश के

सामने मण्डप में रखें, ताकि- ***कथाश्रवण केलिए यदि किसी दिन समय न मिलें तो, श्रद्धा और भक्ति के साथ माँ अन्नपूर्णा की षोडशोपचार । पञ्चोपचार पूजन एवं डोरकधारण करके,उन अक्षतों को भक्ति पूर्वक शिर पर धारण कर सकते हैं।*** इस प्रकार करने से माँ की कृपा से ***कथाश्रवण का फल एवं व्रत की पूर्णता सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। अथवा 'कथा-सङ्ग्रह पृ. - 'भी पढ सकते हैं ।)***

सत्रहवें दिन विशेष पूजन एवं यथाशक्ति दान दक्षिणा देकर ब्राह्मणों को और सुहागिन स्त्रियों को भोजन देकर तृप्त करें। कर्ता स्वयं क्षारलवणवर्जित आहार लेकर,माँ की पूजामहोत्सव में रत रहे और प्रातः क्षमाप्रार्थना के साथ देवी का उत्सर्जन एवं व्रतपरिसमाप्ति करें।

एक ही दिन में व्रतः-** उपर्युक्त कथाक्षतों का धारण एवं एक ही दिन में व्रताचरण का संप्रदाय दक्षिण भारत में तत्रापि आन्ध्रदेश में विशेष रूप में प्रचलित है। यदि कोई एक ही दिन में व्रत करना चाहते तो, डोरक धारण और कथा श्रवण के बाद,''परिवारदेवता समेत ***श्री काशीअन्नपूर्णेश्वरी व्रताङ्ग विशेषार्चनां ,श्री भविष्योत्तरपुराणोक्त प्रकारेण, संभवद्भिःद्रव्यैः, संभवद्भिः उपचारैः, यथाशक्ति यथावकाशमहं करिष्ये-''इस प्रकार पुनःपूजा का संकल्प करके, **सत्रहवें दिन के विशेषपूजा कल्प में जिस प्रकार षोडशदळपद्म के दलों में नन्दिन्यादि हसिन्यन्त षोडश परिवार देवतासहित माँ अन्नपूर्णा की प्राणप्रतिष्ठा , उपचारार्चन और व्रत-परिसमाप्ति बताई गयी है(पृष्ठ३९से४४तक),**उस प्रकार कर सकते हैं।

सत्रहवें दिन की विशेष पूजा

सायं सन्ध्यादि के उपरान्त, दीक्षित श्वेतवस्त्र धारण करें, और पूजागृह में व्रतमण्डप को तोरण मालिकाओं तथा रङ्गवल्लियोंसे सजायें। मध्य में शालिवल्लरियों से एक कल्पवृक्ष को स्थापित करें और उस के नीचे माँ अन्नपूर्णा की सालंकृत मूर्ति की स्थापना करना चाहिए। पुरतः षोडशदळ पद्म को लिखें, और उसकी पंखुडियों में पूर्वादिक्रमेण क्रमशः नन्दिन्यादि हसिन्यन्त सोलह परिवार शक्तियों का आवाहन करें। पुरतः निवेदन केलिए सत्रह पात्रों में विविध पक्वान्नों को नैवेद्य के रूप में सिद्ध रखें।

पूजारम्भः- ईशान दिशा में गङ्गाजल से भरे पात्र को रखें, और तिलक धारण कर कर्ता धर्मपत्नी के साथ दर्भासन या किसी पवित्र आसन पर बैठकर स्वस्थचित्त से-

'पुण्डरीकाक्षाय नमः' मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीन बार दायें हाथ के अंगुष्ठ से शिर पर कटोरी में स्थित पानी को छिडकें,पश्चात्

आचमनः- दायें हाथके अंगुष्ठ-तर्जनी योग से गोकर्ण जैसे मोडकर, आचमनी व चमच से जल को लेकर- ***'ॐ केशवाय स्वाहा'*** कहते हुए जल प्राशन करें।

'ॐ नारायणाय स्वाहा' कहते हुए जल प्राशन करें।

'ॐ माधवाय स्वाहा' कहते हुए जल प्राशन करें।- बाद में धर्मपत्नी के हाथ में इन्हीं नामों से 'स्वाहा' के बदले 'नमः' बताते हुए जल प्राशन करवायें। पश्चात्-

'ॐ गोविन्दाय नमः', 'ॐ विष्णवे नमः', 'ॐ मधुसूदनाय नमः', 'ॐ त्रिविक्रमाय नमः', 'ॐ वामनाय नमः', 'ॐ श्रीधराय नमः', 'ॐ हृषीकेशाय नमः', 'ॐ पद्मनाभाय नमः', 'ॐ दामोदराय नमः', 'ॐ संकर्षणाय नमः', 'ॐ वासुदेवाय नमः', 'ॐ प्रद्युम्नाय

नमः',',ॐ अनिरुद्धाय नमः', 'ॐ पुरुषोत्तमाय नमः', 'ॐ अधोक्षजाय नमः', 'ॐ नारसिंहाय नमः', 'ॐ अच्युताय नमः', 'ॐ जनार्दनाय नमः', 'ॐ उपेन्द्राय नमः', 'ॐ हरये नमः', 'ॐ श्रीकृष्णाय नमः', 'ॐ श्रीकृष्णपरब्रह्मणे नमः'।।

-इन केशव नामों का संकीर्तन करना चहिए। (इस संकीर्तन से विष्णुसहस्त्रनाम संकीर्तन का फल बताया गया है ।)

भूतोच्चाटनः- ***'उत्तिष्ठन्तु भूतपिशाचाः ये ते भूमिभारकाः- एतेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे'***- (इस भूतोच्चाटन मंत्र से चारों ओर जल से प्रोक्षण करें)

प्राणायामः- दक्षिण नासिका रन्ध्र को दाहिनी अंगूठी से ढकाकर, बायें नासिका रन्ध्र के द्वारा हवा लेते हुए- ***'ॐभूः-ॐभुवः-ॐसुवः-ॐमहः-ॐजनः-ॐतपः-ओगँ् सत्यम्'*** इन सप्त व्याहृतियों को बताकर, मध्यमा और अनामिका से बायें नासिका रन्ध्र को ढकाकर दायें नासिका रन्ध्र से धीरे धीरे निःश्वास निकालना चाहिए।

बाद में मन ही मन (उपांशु रूप से)-***'सप्रणव गायत्री सहित-ओमापो ज्योतिरसोमृतम्- ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्'*** जप करें।

घण्टानादः- देवताओं के आह्वान के लिए, घण्टा बजाते हुए-

'आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुर्याद् घण्टारवं तत्र देवताह्वान लाञ्छनम्।।' इस श्लोकमंत्र को पढना चाहिए।

संकल्पः- मम उपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते श्री महाविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य आद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्थे, श्वेतवराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, प्रथमपादे, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, विक्रमशके, बौद्धावतारे,

मेरोर्दक्षिणदिग्भागे, विन्ध्यस्य उत्तर आर्यावर्तैकदेशे, असीवरुणयोर्मध्ये, अविमुक्तवाराणसी क्षेत्रे, आनन्दवने, महास्मशाने, गौरीमुखे, त्रिकण्टक विराजिते, उत्तरवाहिन्याः भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे, ब्रह्मनाळे, महामणिकर्णिका क्षेत्रे, श्रीकाशीविशालाक्षि अन्नपूर्णा गङ्गासमेत श्रीकाशीविश्वनाथादि त्रयस्त्रिंशत्कोटि देवता गोब्राह्मण हरिहरगुरुचरण सन्निधौ-

अस्मिन्वर्तमान व्यावहारिक बार्हस्पत्यमानेन.....नाम संवत्सरे, चान्द्रमान सौरमानयोः.....नाम संवत्सरे, हेमन्तऋतौ, मार्गशीर्षमासे, शुक्लपक्षे षष्ठ्यां, शुभतिथौ,.....नक्षत्रयुत.... वासरे, शुभनक्षत्र शुभयोग शुभकरण एवं गुणविशेषणविशिष्टायां, शुभतिथौ श्रीमान्.....गोत्रोद्भवः.....नामधेयः, श्रीमतः ..... गोत्रोद्भवस्य.....नामधेयवतः, धर्मपत्नीसमेतस्य,सकुटुम्ब सपरिवारसमेतस्य, क्षेम-स्थैर्य-विजय-अभय-आयुः -आरोग्य- ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं,धर्मार्थकाममोक्षादि चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं,मम जन्मनक्षत्रवशात्, नामनक्षत्रवशात्, जन्मराशिनामराशिवशात्, जन्मलग्ननामलग्नवशात्, जन्म- अनुजन्म- त्रिजन्म- सांघातिक-सामुदायिकफलवशात्, अध्यात्मिक- अधिभौतिक- अधिदैविक दुःखत्रय निवृत्त्यर्थं, गोचारानुवर्तित सकल ग्रहदोषपरिहारार्थं, सकल मृत्युदोष परिहारार्थं, परकीयमान यंत्र- मंत्र- तंत्र- विषशल्य- मूलिका- चूर्ण प्रयोग, आभिचारिक क्रियादिजनित दुश्टारिष्ट परिहारार्थं, मम ये ये ग्रहाः अरिष्टस्थानस्थिताः, तेषां ग्रहाणां शुभैकादशस्थान फलावाप्त्यर्थं, मम इहजन्मनि, जन्मान्तरेषु जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु, बाल्य-यौवनाद्यवस्थासु, मनोवाक्कायेन्द्रिय सकलव्यापारैः, रहसि प्रकाशकृत, अज्ञानतो ज्ञानतश्च मयाकृत समस्त पापक्षयार्थं, मम देहगत,चर्मगत,अस्थिगत, मांसगत,रोमगत,नाडीगत समस्त बाधानिवृत्त्यर्थं, दीर्घायु, विपुल धन,धान्य,हिरण्य,रत्नाद्यविच्छित्ति, अनन्तकीर्ति, स्थिरलक्ष्मी,

शत्रुपराजयपूर्वक सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं, समस्त सुखभोगपूर्वक शतवर्षजीवन सिद्ध्यर्थं, परिवारदेवता समेत ***श्री काशीअन्नपूर्णेश्वरीव्रताङ्ग सप्तदशदिवस विशेषार्चनां ,श्री भविष्योत्तरपुराणोक्त प्रकारेण,*** संभवद्भिःद्रव्यैः, संभवद्भिः उपचारैः, यथाशक्ति यथावकाशमहं करिष्ये-अप उपस्पृश्य (पात्रस्थ जल का स्पर्श करें)-तदङ्ग कलशाराधनं करिष्ये-(कटोरी व पंचपात्र के जल का स्पर्श करें)

कलशाराधनम्:-

कटोरी व पंचपात्र के चारों ओर गन्ध और कुंकुम से अलंकार करके उस में पुष्प या तुलसीदल और हरिद्राक्षतों को (कुछ गङ्गाजल भी) डालकर कलश व पात्र पर पत्नी अपने दायें हाथ उस पर रखें और उस के हाथपर पति अपने दायें हाथ से ढकाकर पढें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः।
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः
अंगैश्च सहितास्सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः ॥
अत्र तिष्ठतु गायत्री सावित्री च सरस्वती
स्कन्दो गणपतिश्चैव शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
गङ्गे! च यमुने! चैव गोदावरि! सरस्वति!
नर्मदे! सिन्धु! कावेरि! जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
कावेरी तुङ्गभद्रा च कृष्णवेणी च गौतमी
भागीरथी च विख्याताः पञ्चगंङ्गाः प्रकीर्तिताः ॥

आयान्तु परिवारदेवता सहित श्री काशीअन्नपूर्णेश्वरी देवता पूजार्थं, श्री महागणाधिपति देवता पूजार्थं च दुरितक्षय कारकाः - इति

कलशोदकेन गायत्र्या च देवीं आत्मानं पूजा द्रव्याणि च संप्रोक्ष्य (पात्र में अभिमंत्रित जल को पुष्प / तुलसी दल से देवता मूर्तियों को, पूजाद्रव्य और अपने पर प्रोक्षण करना (छिडकना) चाहिए ।

डोरक,प्रतिमादि शोधनम्:-

मण्डपस्य मध्ये कलशं/प्रतिमां संस्थाप्य, सप्तदशग्रंथियुक्तं डोरकं(पवित्रं) परितः प्रस्तार्य पंचामृतैः संशोध्य-

(मण्डप के मध्य में कलश की स्थापना करें, और सत्रह ग्रंथियों से युक्त डोरी को कलश के सामने रखकर)-

''ॐ शिवप्रसादसंभूत! ग्रंथिरम्य पवित्रक!

देवी कार्यं समुद्दिश्य नीतं चासि शिवाज्ञया।।''- कहते हुए प्रोक्षण करें और बाद में-(पंचामृतों से प्रोक्षण करें)

''स्नानं पञ्चामृतैर्देवि ! गृहाण परमेश्वरि!

रक्षासूत्रं पवित्रं च कृत्वा दीक्षां प्रयच्छ मे ।। (इस मंत्र से सत्रह गांठों पर प्रोक्षण करें।) तत्पश्चात्-

पञ्चोपचार पूजा:-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः गंधं लेपयामि (श्रीगंध को समर्पित करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः पुष्पं पूजयामि (पुष्प से पूजन करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि (धूप कडी या अगरबत्ती जलायें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः दीपं दर्शयामि (दीप जलाकर दिखायें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि (केला दूध या अन्य किसी नैवेद्य को समर्पित करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्रदेवताभ्यो नमः ताम्बूलादि सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ग्रन्थिपूजाः-

प्रणवं चन्द्रमा वह्निः ब्रह्मा नागो गुहो रविः।
साम्बं च सर्वदेवांश्च नव ग्रंथिषु पूजयेत् ।।

ॐ प्रणवाय नमः प्रथम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ चन्द्रमसे नमः द्वितीय ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वह्नये नमःतृतीय ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ ब्रह्मणे नमः चतुर्थ ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ नागाय नमः पञ्चम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ गुहाय नमः षष्ठ ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ रवये नमः सप्तम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ साम्बाय नमः अष्टम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ सर्वदेवेभ्यो नमः नवम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।

महालक्ष्मीसहित अष्टमातृकार्चनम्

ॐ ब्राह्म्यै नमः दशम ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ माहेश्वर्यै नमः एकादश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ कौमार्यै नमःद्वादशग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वैष्णव्यै नमः त्रयोदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ वाराह्यै नमः चतुर्दश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ इन्द्राण्यै नमः पञ्चदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ चामुण्डायै नमः षोडश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सप्तदश ग्रन्थिं दूर्वाक्षतैः पूजयामि।

षोडशदळपद्मे पूर्वादिक्रमेण नन्दिन्यादि परिवार देवतावाहनम्:-

पूर्वादि क्रम से सोलह दळों में एक एक पान के पत्ते पर फूल और अक्षतों को रखते हुए नन्दिन्यादि परिवार देवताओं का आवाहन करना चाहिए-

१)ॐ नन्दिन्यै नमः, नन्दिनीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

२)ॐ मेदिन्यै नमः, मेदिनीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

३)ॐ भद्रायै नमः, भद्रां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

४)ॐ गङ्गायै नमः, गङ्गां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

५)ॐ बहुरूपायै नमः, बहुरूपां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। (पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

६)ॐ तितिक्षायै नमः, तितिक्षां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। (पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

७)ॐ मायायै नमः, मायां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

८)ॐ हेतये नमः,हेतिं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

९)ॐ स्वस्त्रे नमः, स्वसारं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१०)ॐ रिपुहंत्र्यै नमः, रिपुहन्त्रीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

११)ॐ अन्नदायै नमः, अन्नदां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१२)ॐ नन्दायै नमः, नन्दां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१३)ॐ पूर्णायै नमः, पूर्णां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१४)ॐ रुचिनेत्रायै नमः, रुचिनेत्रां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१५)ॐ स्वामिसिद्धायै नमः, स्वामिसिद्धां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

१६)ॐ हसिन्यै नमः, हसिनीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(पान के पत्ते पर पुष्पाक्षतों को रखते हुए आवाहन करें)

<u>परिवारदेवतासहित माँ अन्नपूर्णाजी की प्राणप्रतिष्ठाः-</u>

(कलश या प्रतिमा पर फूल या माला चढाकर उस पर दायें हाथ रखकर)

मं ॥ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः- पुनः प्राणमिह नो देहि भोगं ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडयानः स्वस्ति- अमृतं वै प्राणाः- अमृतमापः- प्राणानेव यथास्थानमुपह्वयते- परिवारदेवता समेत श्री अन्नपूर्णे! आवाहिता भव! सुप्रतिष्ठिता भव! सुप्रीता भव! सुप्रसन्ना भव! स्थिरा भव! वरदा भव! स्थिरासनं कुरु कुरु स्वाहा! परिवार देवता सहित श्रीअन्नपूर्णादेव्याः प्राणप्रतिष्ठापन मुहूर्तः सुमुहूर्तोऽस्तु।- (इस मंत्र से प्राणप्रतिष्ठा करें।)

<u>उपचारार्चनम्ः-</u>

अन्नपूर्णां परां देवीं भोगमोक्षप्रदां शिवाम्।

ध्यानमात्राभिसंतुष्टां ध्यायेमानन्यचेतसा।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः ध्यायामि। (माँ के चरणोंपर पुष्पाञ्जलि चढायें)

एह्योहि देवदेवेशि अन्नपूर्णे महेश्वरि।

पूजां गृहाण मे मातः करुणावरुणालये।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः आवाहयामि।(आवाहन मुद्रा से आवाहन करें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः नानारत्नखचित दिव्य सिंहासनं समर्पयामि। सिंहासनार्थं पुष्पं पूजयामि।(पुष्पाक्षतों को समर्पित करें)

अन्नदायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (पुष्प से जल को माँ के चरणों पर छिडकें)

गिरिशकान्तायै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।(पुष्प से जल को माँ के हाथों पर छिडकें)

उमायै नमः मुखे आचमनं समर्पयामि।(पुष्प से जल को माँ को समर्पित करें)

श्री जगन्मात्रे नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

श्री गिरिजायै नमःदिव्यश्री चन्दनं समर्पयामि।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः-

सिन्दूरभूषणं,सर्वाण्याभरणानि समर्पयामि।

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले

श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः वस्त्रयुग्मं

समर्पयामि।

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले

श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः सर्वाण्याभरणानि समर्पयामि।

अथ पुष्पार्चनम्:-

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले

श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।। पुष्पैः पूजयामि।(१०८नामों से पूजन करें)

अथ अष्टोत्तरशतनामार्चनम्

श्रीं श्रीमात्रे नमः।

श्रीं श्रीमहादेव्यै नमः।

श्रीं श्रीमत्यै नमः।

श्रीं श्रीप्रदायै नमः।

श्रीं अन्नपूर्णायै नमः।

श्रीं सदापूर्णायै नमः।

श्रीं पूर्णब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः।

श्रीं आनन्दपूर्णायै नमः।

श्रीं आनन्दायै नमः।

श्रीं आनन्दवनवासिन्यै नमः।(१०)

श्रीं नित्यान्नदाननिरतायै नमः।

श्रीं नित्यानन्दप्रदायिन्यै नमः।

श्रीं अन्नदायै नमः।
श्रीं वसुदायै नमः।
श्रीं श्रीदायै नमः।
श्रीं आखण्डलसमर्चितायै नमः।
श्रीं अन्नार्तिहारिण्यै नमः।
श्रीं नित्यायै नमः।
श्रीं निखिलागमसंस्तुतायै नमः।
श्रीं अन्नप्रदानसंतुष्टायै नमः।(२०)
श्रीं क्षुद्बाधाविनिवारिण्यै नमः।
श्रीं अन्नाहुतिसमाराध्यायै नमः।
श्रीं अन्नराशिकृतालयायै नमः।
श्रीं भिक्षान्नदाननिरतायै नमः।
श्रीं भिक्षुकीकृतशंकरायै नमः।
श्रीं कुक्षिस्थाखिलब्रह्माण्डसंरक्षणपरायणायै नमः।
श्रीं कनत्कनकदर्वीकायै नमः।
श्रीं कलशाञ्चत्कराम्बुजायै नमः।
श्रीं दरहासकृताह्वानसमर्चितसदाशिवायै नमः।
श्रीं अव्याजकरुणापूर्णायै नमः।(३०)
श्रीं करुणावरुणालयायै नमः।
श्रीं काशीपुराधिनाथायै नमः।
श्रीं काशीवासफलप्रदायै नमः।
श्रीं विश्वेश्वरप्राणनाथायै नमः।
श्रीं विशालाक्ष्यै नमः।
श्रीं विभूतिदायै नमः।
श्रीं विश्वनाथसमाराध्यायै नमः।
श्रीं विश्वकल्याणकारिण्यै नमः।
श्रीं विश्वसूत्यै नमः।
श्रीं विश्वनाथायै नमः।(४०)
श्रीं विश्वनाथविलासिन्यै नमः।
श्रीं माधवार्च्यायै नमः।
श्रीं माधवश्रियै नमः।
श्रीं माधवीपरिसेवितायै नमः।
श्रीं ढुंढिराजजनन्यै नमः।
श्रीं दण्डपाणिसमर्चितायै नमः।
श्रीं कालभैरवसंसेव्यायै नमः।
श्रीं वाराहीपरिरक्षितायै नमः।
श्रीं काशिकाकाशिन्यै नमः।
श्रीं काश्यै नमः।(५०)
श्रीं काशिकापुरगौरवायै नमः।
श्रीं काशिकाकल्पलतिकायै नमः।
श्रीं काशीनाथकुटुम्बिन्यै नमः।
श्रीं गुहाम्बायै नमः।
श्रीं गुरुमूर्त्यै नमः।

श्रीं गुह्यकेशार्चितायै नमः।
श्रीं गुहावासायै नमः।
श्रीं गुहाराध्यायै नमः।
श्रीं गुह्यगोप्त्र्यै नमः।
श्रीं गुणिप्रियायै नमः।(६०)
श्रीं गङ्गाराध्यायै नमः।
श्रीं गंभीरायै नमः।
श्रीं गङ्गातीरकृतालयायै नमः।
श्रीं गङ्गाजलाभिषेकार्च्यायै नमः।
श्रीं गङ्गाधरप्रियाङ्गनायै नमः।
श्रीं भवान्यै नमः।
श्रीं भावनागम्यायै नमः।
श्रीं भवसागरतारिण्यै नमः।
श्रीं मणिकर्णिकाभिषिक्तांघ्र्यै नमः।
श्रीमणिकर्णीपवित्रिण्यै नमः।(७०)
श्रीं षट्पञ्चाशद्गणेशार्च्यायै नमः।
श्रीं षडाननसमर्चितायै नमः।
श्रीं गणेशार्चनसंतुष्टायै नमः।
श्रीं मूलाधारसमुत्थितायै नमः।
श्रीं हव्यवाहनसंसेव्यायै नमः।
श्रीं स्वाधिष्ठानसमुज्ज्वलायै नमः।
श्रीं मणिपूरार्चितायै नमः।
श्रीं सौम्यायै नमः।
श्रीं जलतत्त्वानुभावितायै नमः।
श्रीं विशुद्धिचक्रसंपूज्यायै नमः।(८०)
श्रीं शुद्धविद्यायै नमः।
श्रीं सदाशिवायै नमः।
श्रीं आज्ञाचक्रान्तराळस्थायै नमः।
श्रीं चित्कळायै नमः।
श्रीं चिन्मय्यै नमः।
श्रीं शिवायै नमः।
श्रीं सहस्त्रारसमारूढायै नमः।
श्रीं सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः।
श्रीं षट्चक्रमध्यगायै नमः।
श्रीं शान्तायै नमः।(९०)
श्रीं सदाशिवसमन्वितायै नमः।
श्रीं शिवदायै नमः।
श्रीं शर्मदायै नमः।
श्रीं श्रीदायै नमः।
श्रीं सुखदायै नमः।
श्रीं शान्तिदायै नमः।
श्रीं शुभायै नमः।
श्रीं शाम्भव्यै नमः।
श्रीं शाम्भवाराध्यायै नमः।
श्रीं शाङ्कर्यै नमः।(१००)
श्रीं शंकरान्नदायै नमः।
श्रीं
नित्यानुरक्तभिक्षान्नसंतर्पितसदाशिवायै

नमः।
श्रीं
नमस्कृतजनाभीष्टवरदानसमुत्सुकायै
नमः।
श्रीं आदिशक्त्यै नमः।
श्रीं अमेयात्मायै नमः।
श्रीं ज्ञानवैराग्यमोक्षदायै नमः।
श्रीं श्रीपादुकार्चितपदायै नमः।
श्रीं सर्वदायै नमः।
श्रीं सर्वमङ्गळायै नमः। (१०८)
****

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः,धूपमाघ्रापयामि।(धूपकडी या अगरबत्ती को जलाकर दिखायें)

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः,दीपं दर्शयामि।
(दीप जलाकर दिखायें)

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले
श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

पात्राण्येतानि पक्वान्नैः पूरितानि शुभानि ते।
सप्तदशमितानि त्वं स्वीकुरुष्व महेश्वरि!

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमःनैवेद्यं निवेदयामि।(सत्रह पात्रों में पक्वान्नों का निवेदन करें)

नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गल मङ्गले
श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोस्तु ते।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः,ताम्बूलं समर्पयामि।(ताम्बूल- पान के तीन पत्तोंमें दो केले –

रखकर निवेदन करें)

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः-मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

परिवार देवता सहित श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमःप्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि। (नमस्कार करते हुए तीन बार प्रदक्षिण करें)

डोरक समर्पणम्ः-(डोरक को उतारकर)

सर्व संपत्प्रदे देवि डोरकं विधृतं मया।

व्रतं सम्पूर्णमभवत् गृहाण जगदम्बिके।। **(माँ के चरणों पर समर्पण करें)**

भृत्योहं तव देवेशि पाल्यं तव जगत्त्रयम्।

व्रतेनानेन वरदे पाहि मां परमेश्वरि।। **इति प्रार्थन नमस्कारान् समर्प्य कथाश्रवणानन्तरं सप्तदश ब्राह्मणेभ्यः, सप्तदश सुवासिनीभ्यः यथाशक्ति भोजनवस्त्राभरणादिकं दद्यात्।**(पश्चात् कथाश्रवण करें और यथाशक्ति सत्रह ब्राह्मणों को,सत्रह सुहागिनों को भोजन वस्त्र आदि से सत्कार करें।)

''स्वयं भुक्त्वात्वलवणं रात्रौ कुर्यान्महोत्सवम्'' बाद में कर्ता नमक के बिना पके आहार लें और रात्रि में भजन, कथा, गान आदि से महोत्सव मनाकर, प्रातः पत्नीपुत्रपुत्रियों केसाथ माँ के सामने खडे होकर-

अहमेष वधूरेषा शिशवो मे तवानुगाः।

मातस्तवांघ्रिकमलं भजाम शरणं सदा।

क्षमस्व त्रिजगद्धात्रि कुरु नित्यं कृपां मयि।। इस प्रकार प्रार्थना करें और कल्पवृक्ष के धानों को बीजावाप के लिए और मण्डप के चावल को नित्य भोजन के चावल में मिलाकर ग्रहण करें।

व्रतोद्यापन विधिः-

इस प्रकार व्रत को सोलह साल करने केउपरान्त, सत्रहवें साल में इसी प्रकार व्रत की पूर्ति कर, गोदान, सुवर्णदान, और गुरु को तीन रेशमी वस्त्र देकर संतृप्त करें।।

****

अथ श्री अन्नपूर्णाव्रतकथारम्भः

एक बार युधिष्ठिरजी भगवान श्रीकृष्ण से कहा-

युधिष्ठिर उवाचः-

भगवन् देवदेवेश देवक्यानन्दवर्धन ।
मया किल महद्दुखं सम्प्राप्तं वसता वने।। ।।१।।
न जानेऽन्नं च भोगाय जठरस्यापि केशव।
क्वचिद्दिवा क्वचिद्रात्रौ क्वचिदल्पं क्वचिद् बहु।। ।।२।।

क्वचिद्रुक्षं क्वचित् स्निग्धं क्वचित्स्वादु क्वचान्यथा।
अश्नामि विकलः क्वापि क्षुधितः क्ष्मातलेशय :॥३॥

हे भगवान! श्रीकृष्ण! मुझे इस वनवास में बहुत से दुःख व मुसीबतों का सामना करना पडा। हे! केशव! अन्य भोगों की तो क्या बात है? मुझे तो पेट भर भोजन के लिए 'अन्न कैसे होता है?' इस बात की जानकारी भी नहीं पडती। हे माधव! कभी दिन में तो कभी रात में, कभी थोडा तो कभी बहुत, कभी सूखा, कभी चिकना, कभी स्वादिष्ट, कभी स्वाद रहित भोजन प्राप्त होने से मैं कभी विकल, कभी भूखा ही धरती पर सो जाता हूँ॥

राज्यं मेऽपहृतं दुष्टैर्बन्धुभिर्विरहोऽभवत्।
गाण्डीवधन्वना सार्धं ध्रियमाणे वृकोदरे ॥
तत्केनैतन्महाभाग! पद्मनाभ! ममाभवत् ।
कथं वा कृष्ण! लोकेस्मिन्नान्नदुःखं नृणां भवेत् ॥
नालक्ष्मीर्नैव विरहो न द्वेषो नैव दीनता।
भवेद्येन कृतेनेह तन्ममाऽऽचक्ष्व माधव! ॥

हे कृष्ण! गाण्डीवधन्वा अर्जुन और महाबलि भीम के साथ रहने पर भी मेरे राज्य को दुष्टों ने छल से छीन लिए और स्व बान्धवों से वियोग को भी भोगना पडा। हे महानुभाव! पद्मनाभ! मुझे ऐसे कष्ट क्यों भोगना पडा? इस जगत में प्राणियोंको अन्न के लिए ऐसे कष्ट क्यों भोगना पडता है? हे माधव! कृपा करकेमुझे एक ऐसा मार्ग दिखाओ जिस से मेरा दारिद्र्य मिट जाय और मुझे बन्धुवों से वियोग न हो। मुझे द्वेष और दैन्य का अनुभव न हो।

भगवानुवाचः-(उत्तर देते हुए भगवान बोले)

पित्राज्ञात्यत्तकसाम्राज्यो रामो राजीवलोचनः।

सह सौमित्रिसीताभ्यां न्यवसद्दण्डके वने ।।
एकदा लक्ष्मणो राजन्नाहरार्थं वने भ्रमन् ।
नाससाद क्वचित्सायं ववन्दे रधुनन्दनम् ।।
निषसाद ततस्तूष्णीं विषण्णः साश्रुलोचनः ।
तमुवाच ततो रामो भ्रातरं श्लक्ष्णया गिरा ।।

राजीव लोचन श्रीराम अपने पिताजी के आदेश से सीताजी और लक्ष्मण के साथ जब दण्डकारण्य में वनवास करते थे, उन दिनों में एक दिन लक्ष्मण आहार की खोज में दिन भर जंगल में भटकते रहें, लेकिन कुछ भी आहार न मिलने पर शाम को विषण्ण होकर लौटे, और आँसू भरे आँखों से श्रीरामचन्द्र जी के पास आकर प्रणाम करके बैठ गये। तब श्रीरामचन्द्रजी ने मधुर बानी में उन्हें समझाने लगे ।

श्रीरामचन्द्र उवाचः-

वत्स! मा कुरु सन्तापं लोको हि निजदिष्टभुक् ।
यद्ददाति नरः पूर्वं तदाप्नोति न चान्यथा ।।
येन दत्तानि भोज्यानि रम्यानि रसवन्ति च ।
संप्राप्नोति महाबाहो भक्ष्यभोज्यान्यनेकशः ।।
यैर्न दत्तं क्वचित्किञ्चित्ते निन्दन्तु यथा वयम् ।
पृथिव्यामन्नपूर्णायां वयमन्नस्य कांक्षिणः।।
सौमित्रे! नूनमस्माभिर्न ब्राह्मणमुखे हुतम् ।
तस्माददृष्टमन्वीक्ष्य चिन्तां जहि महामते ।।(११-१४)

हे वत्स! दुःख मत करो। विधि विधान ऐसा होता है। मनुष्य जो पूर्व जन्म में दे आया है, वही इस जन्म में भोगता है। जो स्वादिष्ट भोजन दे चुका है, वही अब नाना प्रकार के भक्ष्यों और भोज्यों का

भोक्ता बनता है। जिन्हों ने कुछ नहीं दिया, वे हम लोगों की तरह निन्दा और दुःख को प्राप्त करते हैं। देखो यह सम्पूर्ण धरती अन्नपूर्णा हो विराजमान है तथापि, हम कर्म-फल की विडम्बना से अन्न के लिए लालायित हैं। हे सौमित्रे! निश्चित रूप से हम ने पूर्व जन्म में ब्राह्मणों को कुछ भी नहीं खिलाये, इसी वजह से, हमें अन्न के लिए इस प्रकार तडपना पडा। अतः हे बुद्धिमान! लक्ष्मण! अदृष्ट कर्मफल के विधान को समझकर चिन्ता छोड दो।

एवं कथयतस्तस्य तदा कुम्भोद्भवो मुनिः।
आजगाम समुत्थाय तं ववन्दे रघूत्तमः॥

इस प्रकार उनके बीच कर्मफल सम्बन्धी बहस चल ही रहा था, इतने में कुम्भसम्भव अगस्त्य महामुनि वहां आ पहुँचे। तब श्री रामचन्द्रजी ने उठकर उनका प्रत्युत्थान कर नमस्कार किया।

इस प्रकार कथा को सुनाते हुए फिर श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर से बोले-

भगवानुवाचः-

संस्कृतं सुखमासीनमगस्त्यं राघवोऽब्रवीत् ।
इममेवार्थमुद्दिश्य यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥

हे युधिष्ठिर स्वागत और उपचारार्चना के उपरान्त सुखासीन हो अगस्त्य ऋषि से श्रीरामचन्द्रजी ने यही सवाल पूछा जो तुम मुझे पूछा था। महर्षि अगस्त्य उन्हें इस प्रकार समझाते हैं।

अगस्त्य उवाचः-

अस्ति वाराणसी नाम नगरी गिरिशप्रिया ।
अपारतरसंसाराम्भोधिपारनिदर्शिनी ॥
तस्यां बभूवतुर्विप्रौ देवदत्तधनअयौ ।

भ्रातरौ देवदत्तोऽभूदाढ्यो, दुःखी धनञ्जयः।।

तस्य चिन्ता समुत्पन्ना दरिद्रस्य कुदुम्बिनः ।

अहो किं मे कृतं पापं येनान्नं मे सुदुर्लभम् ।।

हे श्रीराम! भगवान शंकरजी की प्रियतमा नगरी वारणासी है। उस में देवदत्त और धनञ्जय नाम के दो ब्राह्मण भाई रहते थे, जिनमें देवदत्त बहुत धनवान और धनञ्जय धनहीन एवं दुःखी था। बहु कुटुम्बी और दरिद्र हो चिन्तित हो मन ही मन सोचने लगा कि- ''मैं कौन सा पाप कर चुका था कि मुझे अन्न भी दुर्लभ होता जा रहा है।''

किं मयैकाकिना भुक्तं त्यक् त्वा गर्भवतीं शिशुम् ?

किंममापगतो गेहादतिथिर्विमुखो द्विजः ।।

क्या मैं ने कभी गर्भवती स्त्री या शिशु को बिना खिलाये स्वयं सब कुछ खा लिया? अथवा क्या बिना किसी सत्कार पाये अतिथि मेरे घर से पराङ्मुख होकर लौट गया?

किं मयोपेक्षितं दत्तमन्नं भुक्तं न श्रद्धया ?

निन्दितं वान्नकाले किं क्षिप्तं रोषेण वान्यतः ?

क्या मैं ने किसी के द्वारा दिये हुये अन्न को श्रद्धा से न खाकर उस की उपेक्षा या अवहेलना की? अथवा उसे खाते हुए किसी कारण से कृद्ध होकर उसे उठाकर फेंक दिया?

किंमयान्नवता लोभाद्दुर्भिक्षं काक्षितं श्रियै ?

किंवा रथ्यासु पतितं मयान्नं समुपेक्षितम् ?

शायद मैं ने अन्न की समृद्धि में अधिक धन पाने के लोभ से दुर्भिक्ष पडने की कामना किया होगा। अथवा रास्ते में पडे हुए अन्न को उपेक्षा बुद्धि से न उठाकर उस का अपमान किया होगा।

किंवा गर्वादतृप्तेन त्यक्तमन्नं मयार्पितम् ।

श्राद्धे निमन्त्रितो वाहं न गतो धनगर्वितः ।।

कभी दंभ व अभिमान से किसी से दिए हुए अन्न मुझ से तृप्ति से न खाकर छोड दिया होगा। अथवा क्या श्राद्ध में निमन्त्रित होकर मैं धन के गर्व में नहीं गया हो।

अनर्चयित्वा देवान् वा प्रतिभुक्तं मयान्वहम्।।

कुलदैवतकार्येषु निन्दिता वा कुलस्त्रियः ।।

शायद मैं ने हर दिन बिना देवतार्चन के भोजन किया होगा। अथवा मैं ने आनुवंशिक देवकार्यों में कुलस्त्रियों की कभी निन्दा किया होगा।

किंममालयभोक्तारः सदा तृप्तिविवर्जिताः ।

सदन्ने सति किंवा मे कदन्नं बान्धवेऽर्पितम् ।।

शायद मेरे घरवाले बिना तृप्ति के सदैव भोजन किये होंगे, अथवा स्वाद्वन्न के रहने पर भी, मैं ने बान्धवों को सडे हुए कुत्सित व निन्द्य भोजन दिया होगा।

किंवा श्राद्धदिने विघ्नो मया व्याजेन दर्शितः ।

पितृदेवद्दिजातीनां कृते वाहं निषेधवान्।

दुर्ल्लभंमम येनाभून्नित्यमन्नं कुदुम्बिनः।।

क्या कभी मैं ने श्राद्ध के दिन किसी बहाने से विघ्न नहीं डाल दिया, अथवा देवपितृब्राह्मणों के निमित्त किये जाने वाले कार्यों का निषेध तो नहीं की? जिस से बहुकुटुम्बी मुझे सदैव अन्न दुर्लभ हो जा रहा है।

दृष्टवाढ्यशिशुभक्ष्याणि प्रर्थयन्ति ममार्भकाः।

क्षुत्क्षामानर्भकान् दृष्टवा ह्रदयं मे विदीर्य्यते।।

बढिये शिशुओं के भक्ष्यों को देखकर मेरे बच्चे उन्हें माँगते हैं

तो, बेचारे भूखे मरते उन अर्भकों को देखकर मेरा दिल फट जा रहा है।

अन्यच्च मम दारिद्र्यम् केनेदृक् समुपस्थितम् ।
न सदा भगवान् विष्णुरर्चितः क्लेशनाशनः ॥

और क्या कारण होगा कि मुझे ऐसी दरिद्रता प्राप्त हुई है। शायद मैं ने सदैव क्लेशों के नाशन करने वाले विष्णु का पूजन नहीं किया होगा।

न मया काञ्चनं दत्तं न गौर्नैकादशी कृता।
प्रायशो नग्नवनिता मयान्येषां विलोकिताः ॥

शायद मैं ने सुवर्णदान या गोदान नहीं किया तथा एकादशी व्रत भी नहीं किया। अन्य लोगों की स्त्रियों को कभी मैं ने विवस्त्र देखा होगा।

शय्या वा मे समाक्रान्ता वृषल्या काममुग्धया ।
वृषली किल विप्राणां लक्ष्मीब्राह्मण्यहारिणी ॥

क्या कोई कामातुरा शूद्रा मेरी शय्या पर पधारी? वृषली या शूद्रा के संसर्ग में ब्राह्मण का ब्राह्मण्य एवं लक्ष्मी नष्ट हो जाते हैं।

किं मया मातुराक्रोशः पितुर्वा विहितो रूषा।
अथवा निन्दितानार्य्यो दृष्टवा नेपथ्यमद्भुतम्॥

क्या मैं ने कृद्ध होकर, अपने माता पिता को कभी आक्रोशित बनाया (अथवा रुलाया)? अथवा कुलस्त्रियों के अद्भुत नेपथ्य(अलंकृत रूप) देखकर उन की कभी निन्दा की?

ऋ तौ त्यत्तकाऽथवा भार्य्या भुञाना वाऽपभाषिता।
परापवाद-पौशुन्य- परहिंसारतोऽथवा ॥

क्या मैं ने कभी अपनी ऋतुस्नाता (चतुर्थस्नाता) स्त्री को छोड

गया था अथवा उपभोग व भोजन के समय उसकी निन्दा की? अथवा क्या मैं दूसरों पर कलङ्क लगाया, या उन के कानों को भरकर आपस में झगडा पैदा किया होगा या हमेशा दूसरों को सताने में रत रहता था।

नित्यं मिथ्या जनद्वेषी नित्यं वा कलहप्रियः ।
विद्वान् प्रष्टुमशक्तोऽन्यं जग्राह नियमं वृथा ॥

क्या मैं सदैव सब को द्वेषबुद्धि से देखता हुआ उन से हमेशा झगडा किया करता होगा और अपनी विद्वत्ता की घमण्ड से बिना किसी कारण से मनमाने शपथ व नियम किया करता था।

इस प्रकार वह अपनी दीनता के कारणों पर सोच विचार कर एक दिन-

धनञ्जय का स्वप्नः-

स स्नात्वा मणिकर्ण्यां तु नत्वा विश्वेश्वरं शिवम् ।
रूद्रसूक्तं जपन्मुक्तिमण्डपेष्वनयद्दिनम् ॥
रात्रौ वरतरप्रख्यैर्दर्भैरास्तीर्य्य मेदिनीम् ।
तत्कार्यं हृदये न्यस्य नमस्कृत्य पिनाकिनम् ॥
सुष्वाप प्रयतो देवीमम्बां संचिन्त्य पार्वतीम्।
ततः स्वप्नेऽवदद्विप्रो ब्राह्मणो जटिलः शुभः॥

उस ने मणिकर्णिका में गोता लगाकर, भगवान विश्वनाथ को प्रणाम कर, मुक्तिमण्डप में दिन भर रुद्रसूक्त का जप किया और रात होने पर जमीन पर दर्भों से आस्तरण बिछाकर, अपने दारिद्र्य के निवारण का चिन्तन करता हुआ भगवान आशुतोष का मन ही मन प्रणाम करके, माँ पार्वती का संस्मरण कर निश्चिन्त हो, सो गया। स्वप्न में उस को एक शुभलक्षणवाला जटाधारी ब्राह्मण का साक्षात्कार हुआ। उस

ब्राह्मण ने धनञय से कहा-

विप्रोवाच

पुरा काञ्चीपुरे राज्ञः पुत्रोऽभूच्छत्रुमर्दनः।
तस्य मित्रमभूत्कोऽपि शूद्रो हेरम्बसंज्ञकः।।
यौवराज्यं पितुः प्रप्य कुमारः शत्रुमर्दनः।
हेरम्बमात्मनस्तुल्यं चक्रे भक्त्या परायणः।।
क्वचिद्धेरम्बसहितः कुमारो मृगयां गतः।
निघ्नन् वराहान् महिषान् गण्डकान् हरिणाच्छशान् ।।

हे धनञय! पुराने जमाने में काञ्चीपुराधीश का शत्रुमर्दन नामक एक पुत्र था। उस का एक मित्र हेरम्ब नामका रहता था, जो शूद्र जाति का था। युवराज होने पर, राजकुमार ने हेरम्ब को शूद्र जाति के होते हुए भी अपने साथी बना रखा, और उसको अपने समान प्रतिपत्ति दी। एक दिन राजकुमार हेरम्ब के साथ शिकार खेलने के लिए जंगल में गया और अनेक भैंसों, गैण्डों, हरिणों और खरगोशों को अपना शिकार बनाया।

तत्रैकः पर्वताकारो वराहः समुपस्थितः।
दारयन्निव भूभागं ग्रसन्निव चमूं रूषा।।

शिकार खेलते सेलते उसे एक पर्वताकार सूकर का सामना करना पडा। वह ऐसा दिखाई पड रहा था कि मानो इस पृथ्वी को टुकडे टुकडे करेगा और अपनी सारी सेना को स्वयं चबाकर खा लेगा।

ततः कोलाहले जाते स गतः शत्रुमर्दनः।
तं जघान शरेणाशु स्वर्णपुंखेन वेगिना।। (४७)
तमुपेक्ष्य प्रहारं स वराहो राजवाजिनम् ।

अभिदुद्राव वेगेन पुप्लुवे स तुरङ्गमः।।(४८)
पश्चान्मुखोनृपसुतो जघान शूकरं पुनः।
शस्त्रेणाभ्यार्दितः कोलः पलायनपरोऽभवत्।।(४९)
तमनुप्रययौ वीरः समुत्याप्यासिमुत्तमम् ।
न चानुगन्तुं शक्तोऽभूदन्यस्ताद्दग् हयं विना।। (५०)

उस की हलचल को देखकर राजकुमार शत्रुमर्दन वहाँ पर आ पहुँचा और स्वर्णपुंख वाले बाण से उस मारा। परन्तु वह महावराह उस बाण की परवाह किये बिना, राजकुमार के घोडे पर कूद पडा और उसे मार डाला। राजकुमार खड्गहस्त हो उस का पीछा किया, लेकिन अपने घोडे जैसे तेजी घोडे के बिना उस का पीछा न कर सका।

हेरम्बोऽनुययावेको यस्य तुल्यतुरङ्गमः ।
स हत्वा योजनशते शूकरं शत्रुमर्दनः।। (५२)
उत्तीर्य श्लथपर्य्याणं तुरगं समचालयत्।
हरेम्बोऽपि गतः पश्चादुत्तीर्य तुरगन्दधे ।।(५२)
क्षणं विश्रम्य तौ वीरौ क्षुत्पिपासासमाकुलौ।
पप्रच्छतुर्जलं कञ्चिन्मुनिं कुशसमिद्धरम् ।। (५३)
स नीत्वा स्वाश्रमन्तौ तु मुनिश्चके गतक्षमौ।
स्नातयोः पीतजलयोः श्यामसक्तूनुपाहरत् ।।(५४)

हेरम्ब जिसके तुरङ्ग जो राजकुमार के घोडे से समान वेगवाला था, उस के पीछे गया। शतयोजन दूर तक उस सूकर की पीछाकर राजकुमार ने उसे मार डाला। बाद में घोडे से उतरकर, उस के जीन को खोलकर घोडे को टहलने दिया। कुछ समय आराम लेने के बाद, भूख और प्यास से पीडित हो, दोनों जंगल में उधर से समिध और कुश

ले आने केलिए आये हुये एक मुनि को देखकर, प्यास मिटाने के लिए कुछ जल माँगे। मुनि उन्हें अपने आश्रम पर ले गया। वहाँ उन की थकावट दूर हो गयी। वे स्नान पान की पूर्ति कर चुके थे। मुनि ने उन्हें खाने के लिए सावा का सत्तू दिया।

उञ्छवृत्त्या हृतान् मेध्यान् पितृदेवाग्निशेषितान् ।
तान् गृहीत्वा प्रहृष्टात्मा कुमारो बुभुजे सुधीः।।
अचिरप्राप्तसम्पत्तिर्गर्वितः स नृपानुगः।
उपविश्य विनिन्द्याथ विकृतं बुभुजेऽल्पकम् ।।
विकिरन्नवनौ भूयो वैरस्यं प्रतिदर्शयन् ।
तत्याजानादरान्मूढः राजपुत्रस्तु सादरम् ।।
भूमौ पतितमप्यन्नमुत्थाप्याश्नाति श्रद्धया।
आलोड्य पत्रपुटकं पपौ भूरिजलेन च ।।

उञ्छवृत्ति से प्राप्त तथा पितरों,देवताओं,और अग्नि को परितृप्त करने के बाद बचे हुए उस सत्तू को, बुद्धिमान राजकुमार प्रीतिपूर्वक खाने लगा। लेकिन उस का मित्र हेरम्ब, जो अभी राजगौरव और सम्पत्ति को प्राप्त कर चुका था, वह धन के मद से खाने के लिए किसी न किसी तरह बैठकर, नाक भौंह को सिकोडता हुआ, अन्न की निन्दा करने लगा और थोडा सा अन्न खाकर- 'यह स्वादिष्ट नहीं '- कहता हुआ, बार बार अन्न को धरती पर बिखेरने लगा। आखिर वह घमण्डी बचे हुए अन्न को छोड उठा। परन्तु राजकुमार शत्रुमर्दन जमीन पर बिखरे हुए अन्न को सादर उठाकर खा लिया। इतना ही नहीं बचे हुए अन्न को जल में घोलकर पी लिया।

ततो विश्राम्य मुनिनाभ्यनुज्ञातो नृपात्मजः।
प्रणम्य सह हेरम्बो जगाम निजपत्तनम् ।।

योऽसौ राजकुमारः स देवदत्तस्तवाग्रजः।
धनधान्यसुतैर्युक्तो लेभे मोक्षपुरे वपुः।।
उञ्छान्नभोगाद्धेरम्बो यः स त्वं द्विजोतमः।
उञ्छान्नं यत्त्वया भुक्तं किञ्चिज्ज्ञातस्ततो द्विजः।।
अन्नानादरदोषेण दरिद्रोऽन्नविवर्जितः।
ये कुर्वन्ति नरा हेलामन्नस्य द्विजसत्तम।।
अन्नहीनाः प्रजायन्ते दरिद्राः दुःखभागिनः ।
तस्माद्विस्वादमप्यन्नं भुञीतामृतवत् सुधीः।।

तत्पश्चात् थोडा सा आराम लेकर राजकुमार अपने मित्र हेरम्ब के साथ मुनि से विदा सेकर नगर को लौट आया।

वही राजकुमार शतृमर्दन मोक्षपुरी वारणासी में अन्न धन और पुत्रों की समृद्धि से उत्पन्न हो चुका था। वही तुम्हारा बडा भाई देवदत्त है। तुम उस का मित्र हेरम्ब हो। थोडा सा उञ्छवृत्ति से लब्ध मेध्यान्न को खाने से वारणासी में ब्राह्मण कुटुम्ब में पैदा हुए। किन्तु अन्न की अवहेलना करने से दरिद्र होकर अन्न के लिए तरस रहे हो। हे ब्राह्मण! जो अन्न का अपमान करता है, वह अन्नहीन, दरिद्र और दुःखी होता है। इसलिए बुद्धिमान को स्वादरहित अन्न को भी अमृततुल्य मानकर खाना चाहिए।

दद्यादनुदिनं चान्नं ब्रह्मणाय सुसत्कृतम् ।
तत्कुरुष्वाधुना ब्रह्मनन्नपूर्णाव्रतं शुभम् ।। (६४)
लप्स्यसे नाऽन्नदुःखानि सम्पद्भिश्च न मोक्ष्यसे।
इति श्रुत्वा व्रतं प्रष्टुमुत्सुको ब्राह्मणस्तदा।।(६५)
तत्याज निद्रां भूयः स व्रतचिन्तामवाप्तवान् ।
पप्रच्छ वृद्धानन्यांश्च नानादेशसमागतान् ।।(६६)

इस के अलावा हर दिन एक ब्राह्मण को सम्मान के साथ

यथाशक्ति अन्न देना चाहिए। इस प्रकार हे ब्राह्मण! तुम शुभप्रद अन्नपूर्णाव्रत को करो जिस के प्रभाव से कभी भी अन्न का दुःख नहीं पडेगा और सम्पत्ति भी अटल रहेगी। यह सुनकर ब्राह्मण उस व्रतधिान को विस्तार रूप से पूछना चाहा कि इतने में उस की नींद टूट गयी। बडी उत्सुकता से वह नाना देशों से आनेवाले जनों से वृद्धविद्वानों से इस व्रतविधान के बारे में पूछता था।

ग्रन्थानालोड्य भूरींश्च नाध्यगच्छद् व्रतोत्तमम्।
तद्व्रताहृतचेताः स ततो बभ्राम मेदिनीम् ।।
नानाविधानि तीर्थानि भ्रमन्प्राग्ज्योतिषङ्गतः।
स समभ्यर्च्य कामाक्षीं परिसर्पन्नितस्ततः।।
उत्तरे सरसस्तीरे मेरोरूत्तरसंकुले।
दिव्यकौशेयसम्बीतं दिव्यनेपथ्यपेशलम्।।
दिव्यस्त्रीसार्थमद्राक्षीदर्चयन्तं शिवप्रियाम् ।
उपसृत्य ततो विप्रः प्राहेदं विनयान्वितः।।
साध्व्यः किमेतदारब्धं व्रतं कोऽस्याविधिः स्मृतः ।
किं फलं कुत्र समये क्रियते व्रतमुत्तमम् ।।

स्वयं पण्डित होने के नाते उसने बहुत से ग्रंथोंका मन्थन किया। पर उसे उस उत्तम व्रत विधान की पता नहीं चला। इसी जिज्ञासा से वह देशाटन करने लगा। तीर्थयात्रा करते करते वह प्राग्ज्योतिषपुर पहुँचा और वहां देवी कामाक्षी की पूजा करके इधर उधर घूमने लगा। इतने में वहां उसने मेरुपर्वत के उत्तर दिशा में एक सरोवर के किनारे कुछ दिव्य वनिताओं को देखा। उन के पास जाकर विनम्रता के साथ उन्हे पूछा - ''हे साध्वीमतल्लियों! आप लोग यहाँ कौन सा व्रत कर रहीं है। इस के करने से कौन सा फल मिलेगा? इस व्रत को कब करना है? कैसे

करना है? इस व्रत का क्या विधि विधान है?''

साध्व्यःऊचुः::-

श्रृणुष्वैकमना विप्र श्रद्धाभक्तिकसमन्वितः।
सचिच्चदानन्दरूपस्य शक्तिर्या परमात्मनः ।।
एकधा बहुधा सा च यया सर्वमिदन्ततम् ।
शिवशक्त्यात्मकं विद्धि जगदेतच्चराचरम् ।।
यः शिवः स हि विश्वेशः शक्तिर्या सा च पार्वती।
मायेति कीर्त्यते सृष्टावन्नपूर्णेति पालने।।
संहृतौ कालरात्रीति त्रिधा सौका प्रकीर्तिता।
तस्यास्तदन्नपूर्णायाः व्रतमेतच्छुभप्रदम् ।।

वे साध्वी महिलाएँ बोलीं-हे ब्राह्मण श्रद्धा और भक्ति के साथ सावधानी से सुनो''सारी दुनिया शिवशक्तिमय है। इन में जो शिव है वही विश्वेश्वर है, जो उसकी विश्वेश्वरी शक्ति है वही माँ पार्वती है। जब शिव सृष्टि करता है तब पार्वती ***महामाया*** के रूप में उस की साथी बनती है । पालन कार्य में माँ ***अन्नपूर्णा*** के रूप में और संहार या लय कार्य में ***कालरात्री*** के रूप में अपना सहयोग देती है। यह व्रत उसी ***पालयित्री शक्ति भगवती अन्नपूर्णा*** का है जो समस्त शुभों और संपत्तियों का प्रदान करती है।

मार्गशीर्षे तु पञ्चम्यां कृष्णायां प्रातराप्लुतः।
पट्टसूत्रमथो सूत्रं गृहीत्वा कुङ्कुमारूणम् ।।
दद्यात्सप्तदश ग्रन्थीश्चन्दनागुरुचर्चितान् ।
स्थापयित्वान्नपूर्णां च डोरकं धारयेत्पुनः ।।
पूजयेदम्बिकां देवीमुपचारैर्मनोरमैः।
गृहीत्वा हरितास्सप्त, दश विप्राक्षतानि च ।।

ॐ अन्नपूर्णे ददस्वान्नं पशून्पुत्रान् यशः श्रियम्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि! नमोऽस्तुते।।
अनेन डोरकं बद्धा बाहुमूले तु दक्षिणे।
पुमान्वामे पुनः नारी सचेता श्रृणयात्कथाम् ।।(८०)
गृहीत्वा हरिताः सप्तदश विप्राऽक्षतांस्तथा।
कथाऽन्ते पूजयेत्तैस्तु मंत्रेणानेन डोरकम् ।।(८२)
सर्वशक्तिमयी यस्मादन्नपूर्णे! त्वमुच्यसे।
सर्वपुष्पमयी दूर्वा तस्मात् तुभ्यं नमोऽस्तुते।।

मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी को प्रातः गोता लगाकर (शिर से) स्नान करें। रेशम का डोरा लेकर कुंकुम (रोली) से रंग ले तथा उसमें सत्रह गाँठें देकर चन्दन एवम् धूप से उन गाँठों की पूजा करे और अन्नपूर्णा भगवती की स्थापना करे। सात दूर्वा तथा दस अक्षत ले और नाना प्रकार की सुलभ सामग्री से अम्बिका भगवती का पूजन करे तथा कहें - 'हे माँ अन्नपूर्णे! मुझे अन्न, पशु, पुत्र, यश और लक्ष्मी दो, आयु, आरोग्य एवम् एश्वर्य दो। हे देवि! मैं आपकी प्रणाम करता हूँ। इस प्रकार से प्रार्थना करके पुरुष दायीं एवं स्त्री बाँयी बाँह में धारण करे और शान्तचित्त से कथा के अन्त में सत्रह हरे धान के चावल एवम् दूर्वा लेकर यह वाक्य बोलता हुआ कि - हे मातः! अन्नपूर्णे!, आप तो सर्वशक्तिमयी है, अतः सर्वपुष्पमयी यह दूर्वा (दूब) आपको अर्पण करता हूँ। आपको नमस्कार है।। (७३-८२)

श्रुत्वैवं षोडशाहानि कथां संपूज्य डोरकम् ।
दिने सप्तदशे प्राप्ते षष्ठ्यां पक्षे तथा सिते।।
शुक्लाम्बरधरो रात्रौ व्रती पूजगृहे स्थितः।
शालिवल्लरिभिः क्लृप्तं स्थापयेत्कल्पपादपम्।।

अधस्तादन्नपूर्णायाः स्थापयेन्मूर्तिमुत्तमाम् ।
जपापुष्पप्रतिकाशां त्रिनेत्रोल्लसिताननाम् ॥
सुधाकरलसन्मौलिं नवयौवनमण्डिताम् ।
बन्धूकबन्धनिचयां दिव्याभरणभूषिताम् ॥
स्मेराननां सुप्रसन्नां रत्नसिंहासनस्थिताम्।
वामे माणिक्यपात्रं च पूर्णमन्नेन दर्शयेत् ॥
दक्षिणे रत्नदर्वीन्तु करे तस्याः प्रदर्शयेत् ।
कर्णिकायां लिखित्वैवं पद्मे षोडशपत्रके॥
पूर्वादिपत्रेषु लिखेन्नन्दिनीमथ मेदिनीम्।
भद्रां गङ्गां बहुरूपां तितिक्षां देशिकोत्तमः ॥
मायां हेतिं स्वसारं च रिपुहन्त्रीं तथान्नदाम्।
नन्दां पूर्णां रूचिनेत्रां स्वामिसिद्धां च हासिनीम् ॥

इस प्रकार से सोलह दिन तक कथा सुनें, एवं डोरे का पूजन करें, फिर जब सत्रहवाँ दिन आये अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी को व्रत करनेवाला सफेद वस्त्र धारण करें। रात्रि में पूजाघर में जाकर धान के पौधों (बलियों) से एक कल्पवृक्ष बनाकर स्थापित करे और उस वृक्ष के नीचे माता अन्नपूर्णा भगवती की मूर्ति स्थापित करे। मूर्ति का रंग जपापुष्प की भाँति हो, मुखमण्डल तीन नेत्रों वाला हो, मस्तक पर अर्धचन्द्र शोभायमान हो जिससे नव यौवन के दर्शन होते हो, बन्धूक (लाल-दुपहरिया) के फूलों की ढेरी उसके चारों ओर लगी हो, दिव्य आभूषणों से भूषित हो, मूर्ति प्रसन्न मुद्रा में मुस्कुराती हुई हो, सोने के सिंहासन पर विराजमान हो, मूर्ति के बायें हाथ में अन्न से परिपूर्ण माणिक्य का पात्र तथा दाहिने हाथ में रत्नों से बनी हुई दर्वी (कलछुल) हो। सोलह पंखुडियों वाले कमल की एक-एक पंखुडी पर

पूर्वादिक्रम (पूरब से दाहिनी ओर) से ९-नन्दिनी, २-मेदिनी, ३-भद्रा, ४-गंगा, ५-बहुरूपा, ६-तितिक्षा, ७-माया, ८-हेति, ९-स्वसा, ९०-रिपुहंत्री, ९९-अन्नदा, ९२-नन्दा, ९३-पूर्णा, ९४-रूचिनेत्रा, ९५-स्वामिसिद्धा तथा ९६-हासिनी लिखना चाहिये।। (८३-९०)

गृहाणोमां मया दत्तां पूजां देवि! नमोऽस्तुते।
वराभयप्रदाः सर्वा बन्धूककुसुमप्रभाः।।
आवाहयेत्ततो देवीं गृहीत्वा कुसुमाञ्जलिम्।
एह्येहि देवि देवेशि देवदेवेशवल्लभे।।
गृहणोमां मया दत्तां पूजां देवि नमोऽस्तुते।
इत्यावाह्य ततः पाद्यमन्नदायै नमोऽर्चयेत्।।
अर्ध्यं गिरीशकान्ताया उमायाचमनीयकम्।
मधुपर्कं जगन्मात्रे गिरिजायै च चन्दनम्।।
दत्वा सम्पूजयेत्पुष्पाक्षताद्यैर्मन्त्रमुच्चरेत्।
नमो गिरीन्द्रतनये जगन्मङ्गलमङ्गले।।
श्रीमहेशात्ममहिषि स्कन्दमातर्नमोऽस्तुते।
धूप दीपं च नैवेद्यं वस्त्रं सिन्दूरभूषणम्।।
ताम्बूलं मुखवासञ्च सर्वमेतेन दर्शयेत् ।
ततः प्रदक्षिणीकृत्य दण्डवत् प्रणिपत्य च।।
उत्तार्य डोरकं बाहो र्देवीचरणयोर्न्यसेत्।
सर्वसम्पत्प्रदे देवि डोरकं विधृतं मया।।
व्रतं सम्पूर्णमभवत् गृहाण जगदम्बिके।
भृत्योऽहं तव देवेशि पाल्यं तव जगत्त्रयम्।।
व्रतेनानेन वरदे! पाहि भृत्यमनुत्तमम्।
कथां श्रुत्वा च गुरवे दत्वा संतोष्य दक्षिणाम्।।

पात्राणि सप्तदश च पक्वान्नैः पूरितानि च।
कृत्वा तावद् द्विजेभ्योऽपि भोजयेच्च सुवासिनीः।।
स्वयं भुक्त्वात्वलवणं कुर्य्याद्रात्रौ महोत्सवम्।
प्रातर्विसर्जयेद्देवीं प्रणिपत्य क्षितिं गतः।
मातस्तवांघ्रिकमलं गतिर्मेति विचिन्तयन्।।

हे देवि! मैने जो आपकी यह पूजा की है इसे ग्रहण करें, मै आपको प्रणाम करता हूँ। हे बन्धूक के पुष्प के समान तेजवाली देवि! आप सम्पूर्ण वर एवम् अभय देनेवाली है।। पुनः अंजली में फूल लेकर भगवती का आवाहन करे 'हे-देवाधिदेव महादेव की प्रिया देवेशि देवि! यहाँ पधारो तथा मैने जो आपकी पूजा की है उसे ग्रहण करो। इस प्रकार देवी का आवाहन करके पूजन करे। अन्नदायै नमः (अन्नदा को नमस्कार है) कहकर पाद्य दे, गिरीशकान्तायै नमः (शंकर की गृहिणी को नमस्कार है) कहकर अर्घ्य दे। उमायै नमः (उमा को नमस्कार है) कहकर आचमन कराये। जगन्मात्रे नमः (जगन्माता को नमस्कार है) कहकर मधुपर्क दे। गिरिजायै नमः (गिरजा को नमस्कार है) कहकर चन्दन चढाये। तत्पश्चात् पुष्प, अक्षत आदि से पूजन करता हुआ यह मंत्र उच्चारण करे। हे जगत् के मंगल की मंगलरूपा हिमालयसुता! आपको नमस्कार है। हे महेशपत्नी! हे स्कन्दमाता! आपको नमस्कार है। इसी मंत्र को बोलते हुए धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, सिन्दूर, आभूषण, ताम्बूल एवम् मुखवास आदि (इलायची, लौंग आदि) अर्पित करें। पुनः प्रदक्षिणा करके साष्टांग प्रणाम करे। फिर बाँह से ढोरा उतारकर देवी के चरणों में रखते हुए कहें- हे सम्पूर्ण सम्पत्ति को देनेवाली जगन्माता देवि! यह व्रत संपूर्ण हो गया अतः यह डोरा जो मैने धारण किया था ग्रहण करें । हे देवेशि! मैं आपका सेवक हूँ। आप तीनो लोकों का पालन करनेवाली है, इसलिए हे वरदानों को देनेवाली देवि! इस अनन्य दास का पालन करो।

इस कथा को सुनकर गुरू को दक्षिणा देकर संतुष्ट करें और सत्रह पात्रों में पक्वान्न भरकर ब्रह्मणों को दान दे। सुहागिन स्त्रियों को भोजन कराये। उस दिन स्वतः नमकरहित भोजन करे और रात्रि में महोत्सव मनाए। प्रातः काल पूजाघर में जाकर साष्टांग प्रणाम कर निम्न प्रार्थना करते हुए विसर्जन करे हे माँ! यह मेरी पत्नी, बच्चे आदि सभी आपके दास हैं। आपके पवित्र चरणों में ही हमारा कल्याण (गति) है।। (९९-९०३)

क्षमस्व त्रिजगद्धात्रि! कुरु नित्यं कृपां मयि।
धान्यकुल्यं ततो विप्र बीजादावुपयोजयेत्।।
भुञ्जीत वा स्वयं गेहे नान्यस्मै प्रतिपादयेत्।
ततः सप्तदशे वर्षे व्रतोद्यापनमाचरेत्।।
पात्राणि पूर्ववत् कृत्वा वस्त्राच्छन्नानि वस्तुभिः।
दद्याद् द्विजेभ्यो धेनूंश्च गुरवेन्नं पटत्रयम् ।।

हे त्रिलोकधात्रि! मेरे अपराधों की क्षमा करो। और हमेशा मुझ पर कृपा करो। इस प्रकार क्षमा प्रार्थना करने के बाद, हे ब्राह्मण जो धान हैं, उन्हें बीजों के रूप में बचे रखें, या चावल बनाकर खुद उपयोग करें लेकिन किसी और को नहीं देना चाहिए।

इस प्रकार सोलह वर्षों तक व्रत करने के बाद, सत्रहवें वर्ष में व्रत का उद्यापन करें । पिछले वर्षों की भांति व्रत की पूर्ति कर सत्रह पात्रों में अन्न भरकर उन्हें वस्त्रों से लपेटकर ब्राह्मणों को दे तथा गोदान करें। गुरु को अन्न एवं तीन रेशमी कपडे देना चाहिए।

महान्तमुत्सवं कुर्यात् भुञ्जीत ज्ञातिभिः सह।
एतत्ते कथितं विप्र! सर्वसम्पत्प्रदं व्रतम्।।
न दद्यान्नास्तिकायैतद्विकल्पोपहतात्मने।
भक्तिश्रद्धाविहीनाय दाम्भिकाय शठात्मने ।।

बडा उत्सव मनाए तथा बान्धवा और रिश्तेदारों के साथ

भोजन करे। हे विप्र! सम्पूर्ण सम्पत्ति देनेवाला यह उत्तम व्रत को हमने तुम्हें बताया है। जो नास्तिक हो तथा जिसकी आत्मा शंका से भरी हो, उन्हें यह व्रत नहीं बताना चाहिए एवं भक्ति- श्रद्धाहीन, अभिमानी तथा दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों को भी यह व्रत नहीं बताना चाहिए।। (१०७-२०८)

देयं श्रद्धावते देव-पितृभक्ताय ज्ञानिने।
ततः स विस्मयाविष्टो विप्रो हृष्टतनूरूहः।।

जो श्रद्धालु सज्जन, देवताओं तथा पितरों के भक्त व ज्ञानी हों, उन्हें ही यह व्रत बताना चाहिए। यह सुनकर उस ब्राह्मण को बडा आश्चर्य हुआ, हर्ष से वह रोमाञ्चित हो गया। उसे निश्चय हो गया कि उसका परिश्रम सफल हो गया।

चक्रे व्रतं नमस्कृत्य सार्थं जानन् कृतार्थताम्।
मत्तमातङ्गसंरूद्धं तुरंगैरुपबृंहितम् ।।
बभूव तस्य भवनं स्पर्णसोपानसौधवत् ।
दास्यः कमलपत्राक्ष्यो निष्ककण्ठ्यःसुवाससः।।
विचरन्ति गृहे तस्य भृत्या राजसुतोपमा।
लक्ष्मी वैश्रवणस्येव वत्सराभ्यन्तरेऽभवत् ।।
अथ विप्रो युवा चक्रे विवाहमपरं सुखी।
भिन्नसौधालये कामी कामयामास कामिनीम् ।।
एकदा ज्येष्ठभार्याया गृहे तिष्ठन् द्विजाग्रणीः।
मार्गशीर्षेऽन्नपूर्णया बबन्ध व्रतडोरकम् ।।

उन स्त्रियों को प्रणाम करके उनके साथ ही उसने व्रत किया। व्रत के प्रभाव से उसका दिव्य भवन बन गया जिसकी छत एवम् सीढियाँ सोने की थी। मतवाले हाथी उसके द्वार पर झूमने लगे तथा घोडों से उसकी धुडशाला भर गयी। कमल के समान नेत्रवाली दासियाँ उत्तमोत्तम

वस्त्र तथा गले में हार आदि पहन कर घूमने लगीं एवम् उसके नौकर तो राजकुमारों की तरह मालुम पडते थे। एक वर्ष में ही कुबेर के समान उसके घर में लक्ष्मी हो गई। युवक होने के कारण उस ब्राह्मण ने एक विवाह और कर लिया तथा। अलग महल बनवाकर उस कामिनी के साथ सुख भोगने लगा।

ययौ कनिष्टभार्य्याया गृहे भुक्त्वाऽथ कौतुकी।
स्फीतपर्य्यङ्कगः कान्तोपात्तपणौधयोगवान् ।।
संस्मरद् बहुधां क्रीडां रेमे संगमयन्क्षपाम् ।
रममाणस्य सा दृष्ट्वा डोरकं स्त्रीस्वभावतः।।
सपत्नीशंकिता छित्वा दास्या वह्नौ न्यपातयत् ।
कामाक्षिप्तस्तदा विप्रो न बुबोधान्यवासरे।।
कथाक्षणे डोरकन्तमपृच्छत्स निजाऽनान्।
न कोऽप्यकथयत्तस्य ततोऽसावन्यडोरकम्।।
बबन्धाऽथ ततस्तस्य क्षीणा लक्ष्मीर्दिने दिने।
वत्सराभ्यन्तरे भूयः स एवासीद्धनऽयः।।
भिक्षापि नामिलत्तस्य प्रायशो विकलात्मनः।
पुनश्चिन्ताकुलोऽवादीद्धन्त मे डोरको हृतः ।।

मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी के दिन उसने माँ अन्नपूर्णा का पूजन किया और अपने बायें हाथ में डोरक बांध लिये भोजन आदि करके अपनी छोटी पत्नी के महल में गया। वहाँ सफेद चादर एवं बहुत मुलायम गद्देवाले पलंग पर अपनी छोटी पत्नी के साथ रतिक्रीडा के स्मरण में रात को बिताया। उस समय छोटी पत्नी ने उस केहाथ में बँधे हुए डोरा को देखा। स्त्रीस्वभाव से उसे अपनी सौत से बाँध गयी वशीकरण प्रयोग समझा और चतुरता से उस डोरे को खोलकर अपनी दासी केहाथ से अग्नि की आहुति करायी।

दूसरे दिन कथाश्रवण के समय जब उसे डोरा नहीं दीख पडा, उसने नौकरों से पूछा। किसी ने कुछ नहीं बताया। तब उस ने दूसरा डोरा बनाकर बाँध लिया। उसी दिन से उस की लक्ष्मी नष्ट होने लगी। यहाँ तक कि एक ही साल में वह अति दरिद्र बन गया जैसा वह पहले था। अब उसे माँगने पर भी भिक्षा न मिली। बडी विह्वलता से वह कहने लगा कि- 'हाय मैं अपने डोरे को खो गया?'

ततः प्रभृति मे भूयो दारिद्र्यं समुपस्थितम्।
कुर्वतोऽपि व्रतं देव्या न मे संदृश्यते फलम्।।
भिक्षापि लभते पूर्वं इदानीं सापि मे गता।'।
तत्त्वं पृच्छामि कं वास्य यथा न श्रीविनाशनम्।।

जब मैंने अपने डोरे को खो गया, उसी क्षण मुझे दरिद्रता ने घेर लिया। देवी अन्नपूर्णा के व्रत करने पर भी मुझे कोई फल नहीं दीख पड रहा है। इतः पूर्व माँगने पर भिक्षा मिलती थी वह अब नहीं मिल रही है। मैं उस तत्त्व व उपाय को किससे पूछूँ जिस से मेरी लक्ष्मी का नाश न हो।

तत्कामरूपमेवाहं गत्वा पृच्छामि ताः स्त्रियः।
इति निश्चित्य सोगच्छत्तं देशं व्रतमाप्तवान्।।
न तत्र दृश्यते किञ्चित्पूर्वदृष्टं पुरादिकम्।
सर्वतोऽपि महारण्यं जन्तुसंचारवर्जितम्।।
पक्षी न लभ्यते तत्र का कथा मनुजस्य हि।
इतस्ततः परिभ्रम्य चिन्तयामास स द्विजः।।
येन पापेन मे बाहोर्डोरकः केनचिद् ह्रतः।
तेन किं भविता लाभं विहतव्रतकस्य मे।।

उस ने यह तय कर लिया कि- मैं कामरूप को जाकर उन्हीं स्त्रियों से पूछ लूँ जिन्हों ने मुझे पहले उस व्रतविधान को बताया था। वह

कामरूप देश को गया, किन्तु वहाँ उस ने पहले जो नगर आदि को देखा, उन में से उसे कुछ भी दिखायी नहीं पडा। चारों तरफ जन्तुसंचार रहित घनघोर जंगल दिखायी पडने लगा जहाँ कोई पक्षी व मनुष्य देखने को नहीं मिलते थे। चिन्ताक्रान्त होकर वह सोचने लगा- जिस पापी ने मेरे हाथ से डोरे को चुरा लिया, उसे मेरे व्रत को नष्ट करने से क्या लाभ होगा?

क्व गता सा पुरी रम्या क्व सरः क्व सुरालयः।
नूनं मद्भाग्यदोषेण समस्तं विधिना ह्रतम्।।
धिङ्मां दैवहतं स्वर्गाद्भ्रंशितं दुःखभाजनम्।
तत्किमेभिर्मया प्राणैः रक्षितैः क्लेशकोटिदैः।।
इत्युक्त्वा पुरतः कूपे मर्तुकामोऽपतत्तदा।
पतितो निर्व्यथोऽथासौ प्रकाशं ददृशे तदा।।
पथा स प्रययौ प्रकीर्णं देशमुत्तमम्।
नानोद्यानलताकीर्णं नानामृगनिषेविम्।।
मयूरनृत्यसंशोभि सानुपर्वतमण्डितम्।
मत्तकोकिल गीताढ्यं भृङ्गसंगीतपेशलम्।।

वह मनोहारी नगरी कहाँ गयी? वह तालाब कहाँ गया? तथा वह देवालय कहाँ चला गया? निश्चय ही मेरे अभाग्य के कारण विधाता ने सब कुछ नष्ट कर दिया।

मैं देवी-प्रकोप से स्वर्ग-सुख से भ्रष्ट हो दुःख भोग रहा हूँ। अब करोडों क्लेशों के देने वाले इन प्राणों को रखकर क्या करूंगा? मुझे धिक्कार है। ऐसा कहकर मरने के लिए लिए सामने वाले कुएँ में कूद पडा। गिरते ही चोट लगने के बजाय उसकी सम्पूर्ण व्यथा नष्ट हो गयी। चारों तरफ उसे प्रकाश दिखाई दिया। वह उसी मार्ग से एक विशाल

उत्तम देश में जा निकला, जो नाना प्रकार के उद्यानों एवम् लताओं से शोभायमान हो रहा था। नाना प्रकार के मृग विचर रहे थे, पर्वतों के शिखरों पर मोर नाच रहे थे, मस्त कोयलें कुहुक रही भौंरे गुंजार कर रहे थे।।

काननं दृष्यते तत्र सर्वर्तुकुसुमोज्ज्वलम् ।
फलनम्रैस्तरुवरै रचितं कदलीचयैः।।
विस्मयोत्फुल्लनयनस्तदा पश्यन् व्रजन्द्विजः।
ददर्श सागरप्रायं सरः प्रोत्फुल्लपङ्कजम्।।
हंसकारण्डवाकीर्णं चक्रवाकाकुलाकुलम्।
मीनपुच्छोच्छलत्तोयमिन्दुताराङ्कितास्बरम् ।।
तरङ्गोत्तीर्णपवनश्लिष्टवेतसमण्डपम्।
नानामणितटाक्रीडद्देवकन्याकृतार्चनम्।।

वहाँ वन में सब ऋतुओं के फूल खिले हुए थे। उत्तमोत्तम वृक्षफलों से लदे हुए थे। केले के वृक्ष लहरा रहे थे। इन सब विस्मयकारी दृश्यों को आश्चर्य भरी दृष्टि से देखता हुआ वह ब्रहाण आगे बढता जा रहा था। आगे जाकर उसने समुद्र के समान एक विशाल तालाब को देखा जिसमें कमल खिले हुए थे, वह हंसों एवम् बत्तकों से पूर्ण था, मछलियों के पूँछ पटकने से जो जलबिन्दु उछलते थे, वे अन्धेरी रात के तारों की शोभा को मात कर रहे थे। उसकी तरंगों को उठाता, पार करता पवन बह रहा था। मणियों से युक्त उसके किनारो पर क्रीडा करती हुई देवकन्याएँ पूजन-अर्चन कर रही थी।

अथापश्यत् सङ्गीतं सरसः पश्चात् तदाशृणोत् ।
षड्जगान्धार जात्युग्रं दिव्यगेयमनुत्तमम्।।
मृदङ्गवेणुपणव कोकिला स्वरमण्डितम् ।

शनैरनुसरन् रम्यस्फटिकावासमृद्धिमत् ।।
रत्नविद्रुमसोपानं चतुर्द्वारं व्यलोकयत् ।
स विवेश ततोऽभ्यन्तर्ददृशे मणिमण्डपम्।।
तस्य मध्ये प्रनृत्यन्तं पुरूषं स्फटिकद्युतिम्।
चन्द्रचूडं त्रिनयनं जटिलं फणिभूषणम् ।।
नानाकारांश्च पुरूषान् सङ्गीतं कुर्वंतोऽद्भुतम्।
तदग्रे रत्नपर्य्यङ्के सुखासीनां मनोरमाम्।।
नवयैवनसम्पन्नां दिव्यालङ्कारभूषिताम् ।
कर्पूरशकलैर्मिश्रताम्बूलापूरिताननाम्।।
बन्धूकबन्धुनिचयां बन्धुकारूणविग्रहाम्।
करपल्लवे बहन्तीं दिव्यताम्बूलवीटिकाम्।।
चामरान्दोलनोद्वेलत्कर्णपूरालकाननाम्।
मुखवासोपयोग्यास्या नित्यश्लाघारसस्मिताम् ।।

उसने देखा कि उस सरोवर के पीछे दिव्य संगीत हो रहा है तथा उसका मंगलमयी ध्वनि उसे सुनाई दे रही थी। षड्ज-गांधार आदि श्रुतियों से दिव्य अलौकिक गंभीर स्वर सुनाई दे रहे थे। मृदंग, बाँसुरी, ढोल एवं कोकिल के समान मधुर स्वरों से वातावरण मनोहर हो रहा था। दिव्य वातावरण की ओर धीरे-धीरे आगे बढकर उसने देखा कि समारोह में एक स्फटिकमणि के समान कान्तिवाला पुरुष नृत्य कर रहा है, जिस के शिर पर अर्धचन्द्र,तीन नेत्र तथा जटा है। उस के सामने रत्न से निर्मित पलंग पर सुखपूर्वक बैठी हुई भगवती महेश्वरी को देखा, जिन की सेवा में दिव्य रूपवाली सखियाँ लगी हुई थी। माहेश्वरी नव यौवन से पूर्ण एवं आभरणों से शोभायमान थीं। उन के मुख में कर्पूरादि से युक्त पान विराजमान था। उन केचरणों के चारों ओर बन्धूक(दुपहरिया) के

फूलों की ढेरियाँ लगी हुई थीं। उन के अङ्गोंसे निकलनेवाली कान्ति भी बन्धूक पुष्प के समान थी। उन के कर कमलों में पान का बीडा सुशोभित था। दोनों ओर चामर डुलाये जा रहे थे जिस से कि उन के कर्ण कुण्डल हिल रहे थे। अलकें मुखमण्डल पर लटककर शोभित हो रहे हैं। मुख को सुवासित करने वाले उत्तम द्रव्यों से सुगन्धित मधुर मुस्कान से उसका मुखमण्डल दिव्य शोभायुक्त हो रहा था।

सखीभिर्दिव्यरूपाभिः सेव्यमानां महेश्वरीम्।
कोयङ्कोयमिति व्यग्र स्त्रिया वेत्रेण वारितः।।
देव्या भ्रूसंज्ञया भूयस्तयैवान्तर्निवेशितः।
दण्डवत्प्रणिपत्याथ विप्रः साध्वसपूरितः।।
न किञ्चिद्वक्तुमशक्तः तेजसोपहतप्रभः।
तमुवाच समाश्वास्य सखी ताम्बूलवाहिनी।।
विप्र यस्या व्रतं चक्रे भवान् सर्व समृद्धये।
एषा त्रैलोक्यजननी साऽन्नपूर्णा महेश्वरी।।
दुःख दारिद्र्यशमनी सर्वसंपत्समृद्धिदा।
सृष्टिस्थितिसंहार कर्ता योऽसौ महेश्वरः।।

भगवती से कुछ ही दूर खडी जो हाथ में वेत्र (बेंत)लेकर पहरा दे रही थी, उस ने उस ब्राह्मण को देखते ही घबराहट भरे शब्दों से कहा- अरे यह कौन है? यह कौन है? और उसे आगे बढने से रोक दिया।करुणामयी देवी ने अपने (भृकुटी)भौंह के संकेत से उस सखी को मना किया तथा ब्राह्मण को अन्दर आने का संकेत दिया, तो उसने ब्राह्मण अन्दर जाने दिया। अन्दर जाते ही भगवती के विलक्षण वैभव को देख वह घबरा गया, पृथ्वी पर दण्डवत् गिरकर उसने प्रणाम किया, किन्तु मुँह से कुछ भी बोल न सका। उसकी घबराहट को दूर करते हुए

पान देनेवाली सखी ने कहा। हे विप्र! तुमने सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए जिस का व्रत किया था, ये वे ही तीनों लोकों की माता अन्नपूर्णा भगवती हैं जो सम्पूर्ण दुःख-दरिद्रता का नाश कर सभी सम्पदाओं को देनेवाली हैं और सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं विनाश करनेवाले ये भगवान महेश्वर हैं।।

स एष भगवान् रूद्रो नृत्यतेऽस्याः पुरः प्रभुः।
योगमायां समासाद्य क्रीडते यो महेश्वरः।।
शिव एव इयं शक्तिर्मायेयं पुरुषस्त्वसौ।
यत्किञ्चिद् दृश्यते विप्र! सर्वमेतद् द्वयात्मकम् ।।
न चात्रविस्मयः कार्यो दृष्ट्वा चेष्टितमेतयोः।
लोकोत्तराणां चरितं को हि विज्ञातुमीश्वरः ।।
त्वञ्च भूयः कुरु ब्रह्मन्! व्रतम्भक्तिसमन्वितः।
यत्सखीभिः पुरोदिष्टं कामरूपे सरस्तटे।।
प्राप्स्यसे विपुलां लक्ष्मीं कीर्तिमायुः सुतान् बहून्।
इन्द्रोऽपि विप्र! भाग्यान्ते प्राप्नोति विरहं श्रियः।।

ये ही भगवान महेश्वर रूद्र जो नाच रहे हैं भगवती योगमाया का अश्रय लेकर क्रीडा किया करते हैं।। हे विप्र! ये शिव हैं ओर ये शक्ति हैं। यह माँ माया हैं और वे पुरुष हैं। इस चराचर जगत में यह सब जो कुछ दिखाई पडता है, वह सब इन्हीं दोनों से व्याप्त है।। इन दोनों के क्रिया-कलापों को देखकर आश्चर्य मत करो क्योंकि जो लोकोत्तर दिव्य पुरुष हैं उनके चरित्र को कौन जान सकता है? ।। हे विप्र! तुम भक्ति युक्त होकर वही व्रत पुनः करो जो कामरूप में सरोवर के किनारे सखियों ने तुम्हें बताया था।। व्रत के प्रभाव से तुम पुनः अनन्त लक्ष्मी, कीर्ति, आयु एवम् पुत्रों को प्राप्त करेगे। हे ब्राह्मण, भाग्य का अन्त हो

जाने पर तो इन्द्र भी लक्ष्मीहीन हो जाता है।।

ब्रह्मादिदुर्लभं देव्याः सम्प्राप्तं येन दर्शनम्।
ततो जगाद विप्रोऽसौ दण्डवत्प्रणतः पुनः।।
देवि प्रसीद परिपालय पालनीयम् ।
दारिद्र्यदुःखमपनीय जगत्पुनीहि।।
धन्यास्ते एव गुणिनः कुलशीलयुक्ताः
मातस्त्वया करूणया किल वीक्षिता ये।।
अपारतर-संसार- पारकृत्तव दर्शनम् ।
तारयत्यखिलं योऽसौ विश्वेश्वर नमोऽस्तु ते ।।

तुमने तो ब्रह्मादि देवों के लिए दुर्लभ दर्शन को प्राप्त किया है। तब पृथ्वी पर दण्डवत् प्रणाम कर वह ब्राह्मण फिर बोला-हे देवि! मुझ पर प्रसन्न होकर मेरा पालन करो। दरिद्रता तथा दुःख को समाप्त कर जगत को पवित्र करो। हे माता! तुम करूणामयी ने जिस पर भी अपनी करूणापूर्ण दृष्टि डाली है वही धन्य, गुण, कुल और शील युक्त हो गया है। हे विश्वेश्वर! आप के दर्शन से ही प्राणी इस अपार संसाररूपी सागर से पार हो जाता है। आपको प्रणाम है।

तमुवाचान्नपूर्णाथ विप्रैतन्मे व्रतं शुभम् ।
ये करिष्यन्ति लोकेऽस्मिन् तेषां श्रीः सर्वतोमुखी।।
नान्नदुःखं भवेत्तेषां वियोगो न च सम्पदः।
कीर्तिमन्तो रूपवन्त उदारा राजपूजिताः।।
भविष्यन्ति गुणाढ्यास्ते धर्मशीलाः प्रियंवदाः।
सदाहं न विमोक्ष्यामि तेषां वेश्म द्विजोत्तम।।
येषां गेहे कथाप्येषा लिखिताऽपि भविष्यति।
तत्र तत्र गमिष्यामि पूर्ववद्वर्द्धसेऽधुना।।

तब माता अन्नपूर्णा ने उससे कहा-हे ब्राह्मण, इस जगत मे जो भी मेरा व्रत करेगा उसे सब प्रकार से लक्ष्मी प्राप्त होगी।। उन्हें कभी भी अन्न का दुःख एवम् वियोग नहीं होगा। वे कीर्तिमान, रूपवान, उदार, राजा द्वारा पूजित, गुणवान, धर्मात्मा एवम् प्रिय बोलनेवाले होंगे। हे द्विजश्रेष्ठ मैं कभी भी उनका त्याग नहीं करूँगी। हे ब्राह्मण, जिसके घर में यह कथा लिखी हुई होगी, मैं उसके घर जाकर बसूँगी और तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ कि तुम्हारी भी पहले जौसी वृद्धि हो जाय।।

कुरु व्रतं सदा मह्यं तवानुग्रहकाम्यया।
यास्यामि काश्यां विश्वेशाद्दक्षिणे मे गृहं कुरु।।
अथाब्रवीद्धरः प्रीतः श्रृणु विप्र! पुरे मम।
प्रसन्नाननो मे गणो दण्डपाणिः प्रियो मम।।
स्थास्यति त्वत्प्रियार्थं ददात्यन्नं नृणां सताम्।
ये करिष्यन्ति विप्रैतद् व्रतं जगति मानवाः।।
तेषां कुले न दारिद्र्यं भविष्यति कदाचन।
अन्ते वाराणसीं प्राप्य गणो मम भविष्यसि।।
भार्या ते पार्वतीतुल्या धनञ्जय! भविष्यति।
ततः प्रणाम्य विप्रोऽसौ पार्वतीपरमेश्वरौ।।
काश्यां गतस्तथा चक्रे त्वन्नपूर्णाव्रतं शुभम्।
पक्वान्नसंचयं कृत्वा चान्नकूटं चकार सः।।

हे विप्र! तुम इस व्रत को सदा करना और मैं भी तुम्हारे कल्याण के लिए काशी चलूँगी। तुम वहाँ श्री विश्वनाथ के दक्षिण में मेरा घर (मन्दिर) बनाना। इसके पश्चात् भगवान शंकर भी बोले -हे विप्र! सुनो, मेरी उस परमप्रिय नगरी में मेरा प्रिय गण प्रसन्नमुख दण्डपाणी रहता है। वह तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तैयार रहेगा। वह सज्जनों को अन्न दिया

करता है। हे विप्र! इस दुनिया में जो भी इस व्रत को करेंगे, उन्हें कदापि दारिद्र्य नहीं होगा और अन्त में तुम वारणासी में मोक्ष प्राप्त कर मेरे गण हो जाओगे और धनञ्जय! तुम्हारी पत्नी पार्वती के समान हो जायेगी। इस के बाद वह ब्राह्मण पार्वती और परमेश्वर शिव को प्रणाम कर काशी चला गया। वहाँ उस ने वैसा ही कार्य किया जैसा कि माता पार्वती एवं भगवान शङ्कर ने बताया था। उस ब्राह्मण ने अन्नपूर्णा का मन्दिर बनाकर व्रत किया तथा विभिन्न प्रकार के पक्वान्नोंको इकट्ठा करके माता अन्नपूर्णा का अन्नकूट किया।

एतत्ते गदितं राजन्! व्रतानां व्रतमुत्तमम्।
यत्कृत्वा रामचन्द्रोऽपि लेभे सौख्यं स्त्रियं निजाम्।।
श्रियमिच्छसि राजन् त्वं वृद्धिं चैव यशः सुतान्।
तदा कुरु महाबाहो! व्रतमेतत्स्वबन्धुभिः।।
मयाप्येतद्व्रतं राजन्! क्रियते भक्तितः सदा।
द्वित्रिषु भाग्यवत्स्वेषु तदा वर्यो भविष्यसि।।
प्रायेण भाग्यरहितः न करिष्यत्यहो व्रतम्।
ते दग्धहृदयाःपापाः सदा लालायिता नृप!।।

इतनी कथा सुनाकर श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर से बोले- हे राजन्! मैं ने उत्तमोत्तम व्रत तुमको बताया है, जिस के करने से श्रीरामचन्द्रजी ने अपने सुख और राज्यलक्ष्मी को प्राप्त किया था। हे राजन्! यदि तुम लक्ष्मी वृद्धि, यश तथा पुत्रों की कामना करते हो तो, हे महाबाहो! अपने भाइयों सहित इस शुभ व्रत को करो। हे राजन्! इस व्रत को मैं भी सदा भक्तिपूर्वक करता हूँ। जो इस व्रत को करेगा, वह गिन-गिनाये भाग्यवानों में भी श्रेष्ठ होगा। प्रायः अभागे इस व्रत को नहीं करते। उनका हृदय सदा जलता रहता है तथा वे पापी

अन्न के लिए सदा तरसते रहते हैं।

वृषमन्द्रगतिं वन्दे चन्द्रचूडार्धधारिणीम्।

करुणार्द्रदृशां देवीमन्नपूर्णां गिरीन्द्रजाम्।।

वृषभवाहन भगवान चन्द्रशेखर शिवजी की अर्धाङ्गी एवं करुणार्द्रदृष्टिवाली हिमगिरितनया माँ भगवती
अन्नपूर्णा को मैं प्रणाम कर रहा हूँ।

इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादे
श्रीअन्नपूर्णाव्रतकथा सम्पूर्ण्ण ।
श्री अन्नपूर्णा प्रसीदतु!
शुभमस्तु!
जय हो माता अन्नपूर्णा की!

****

कथासङ्ग्रह

भविष्योत्तर पुराण में श्री अन्नपूर्णा व्रत की कहानी ***श्रीकृष्ण युधिष्ठिर संवाद*** के रूप में है। इस कथा को भगवान श्रीकृष्ण ने अन्नार्त युधिष्ठिर को, अगस्त्य ऋषि ने श्रीराम और लक्ष्मण को, बताये थे।

काशी में देवदत्त और धनञय नामक दो ब्राह्मण भाई रहते थे।

उन में देवदत्त धनवान और धनञ्जय बहुत गरीब रहे। धनञ्जय इतना गरीब था कि उसके बच्चों को भरपेट अन्न भी वह नहीं दे सकता था। धनञ्जय दारिद्र्य से तडप तडप कर, उसे अपने जन्मान्तरकृत पापों का फल के रूप में सोचता हुआ, एक दिन भगवान आशुतोष की कृपा पाने की इच्छा से, मणिकर्णिका में स्नान करके, श्रीविश्वनाथ का दर्शन किया, और मुक्तिमण्डप में रुद्राध्याय का पाठ किया । रात में सोते वक्त उस ने भगवान को कृपा करने की प्रार्थना की। स्वप्न में उसे एक जटाधारी ब्राह्मण दर्शन दिया और कहा-

स्वप्न-वृत्तान्त

''काञ्ची नगरी का राजकुमार शतृमर्दन था । शूद्र जाति का हेरम्ब उसका मित्र था, जो साथी होकर राजकुमार के समान सुख-भोग पाने लगा । दोनों मित्र एक दिन शिकार खेलने जंगल में गये। शिकार खेलते खेलते राजकुमार शतृमर्दन एक शूकर के पीछे दौड पडा। बहुत दूर तक उस के पीछे पडकर किसी न किसी तरह उसको मार डाला। राज कुमार को खोजता हुआ हेरम्ब उस से मिला । थकावट से दोनों पानी की तालाश में निकल पडे। रास्ते में उन को एक ऋषि से मुलाकात हुई। ऋषि ने उन्हें अपने अश्रम ले गया और स्वच्छ जल और उञ्छवृत्ति से संचित साँवा का सत्तू खाने को दिया। राजकुमार शत्रुमर्दन उस पवित्र भोजन को बडे गौरव और भक्तिपूर्वक खाया। पर, उस का मित्र हेरम्ब अपने नाक-भौंह को सिकोड, अन्न की निन्दा करता हुआ, थोडा सा खाकर, बचे हुए अन्न को धरती पर बिखेर दिया। बाद में ऋषि से विदा लेकर दोनों लौट आये । कालान्तर में दोनों का देहान्त हुआ । ऋषि के पवित्र भोजन खाने से दोनों को काशीनगरी में ब्राह्मण जन्म मिला । अन्न का आदर

करने से राजकुमार शतृमर्दन धनाढ्य देवदत्त की उपाधि को प्राप्त किया जो तुम्हारा भाई है। तुम उस का मित्र हेरम्ब हो। अन्न का दूषण करने से तुम्हें दारिद्र्य भोगना पडा। माँ अन्नपूर्णाव्रत करने पर, उस माँ की कृपा से दारिद्र्य से मुक्त बनोगे।''- यह सुनकर जब धनञय व्रताचरणविधान बताने की अभ्यर्थना करना चाहा, इतने में उसकी नींद टूट गयी।

धनञय का तपन

उस दिन से धनञय लगातार व्रतविधान की खोज में कई पण्डितों से पूछताछ की, कई ग्रंथों का स्वयं परिशीलन किया,किसी न किसी तरह इस की जानकारी के लिए देशाटन करता हुआ कामरूप देश पर आया । वहाँ कामाक्षी की पूजा करके, बगल में एक तालाब के तट पर माँ अन्नपूर्णा के व्रताचरण करने वाली दिव्याङ्गनाओं को देखा और विनयपूर्वक अभ्यर्थना से व्रतविधान जानकर, भक्तिपूर्वक व्रत किया, एवं माँ अन्नपूर्णा की कृपा से बहुत भाग्यशाली बन गया। भोग लालसा से उसने और एक सुन्दरी से शादी की। भोगी होने पर भी वह अन्नपूर्णार्चन को नहीं छोडा।

व्रत दीक्षा में उस ने एक दिन अपनी दूसरी पत्नी के घर आया। रात में उस की पत्नी धनञय के दायें हाथ में बंधेहुए डोरक को देखकर,उसे सपत्नी का वशीकरण चालू समझ कर, सोते हुए पति के हाथ से चालाकी से अलग करके अपनी दासी को देकर उसे आग में जला दिया। अगले दिन व्रतार्चन में बैठकर धनञय अपने हाथ में डोरक की अनुपस्थिति देखकर,जांच करवाया और उसके न मिलने पर और एक नया डोरक का धारणकर व्रत किया। लेकिन उस का व्रत सफल नहीं हुआ। धनञय का भाग्य पलट गया। फिर वह

दरिद्र बन गया। अब उसे भिक्षा भी नहीं मिलता था। विरक्त होकर उस ने आत्महत्या करने के लिए एक कुएँ में कूद पडा। अपार कृपामयी माँ अन्नपूर्णा की कृपा से वह मरा नहीं, अचानक उसे एक सुन्दरतम भव्य मार्ग दीख पडा, जिससे वह सीधे माँ अन्नपूर्णा के आस्थान में आ पहुँचा। कृपामयी माँ अन्नपूर्णा फिर व्रताचरण करने का आदेश दिया और कहा कि- ''तुम्हारे अनुग्रह करने केलिए मैं स्वयं काशी पधारूंगी। मेरे लिए तुम विश्वनाथजी के मन्दिर के दक्षिण भाग में मेरे लिए एक मन्दिर का निर्माण करो।''इस पर विश्वनाथ भी धनञ्जय को आश्वासन देते हुए बोले- ''हे विप्र! मेरे वरिष्ठ गणनायक दण्डपाणि इस कार्य में तुम्हारी सहायता करेगा''

इस प्रकार धनञ्जय माँ अन्नपूर्णा और बाबा विश्वनाथजी का अनुग्रहपात्र बन कर सदा माँ अन्नपूर्णा
का व्रताचरण परायण होकर समस्त भोगभाग्यसमृद्धियों का अनुभव करने के उपरान्त माँ के सायुज्य को भी प्राप्त कर चुका था।

श्रीरामचन्द्रजी को भगवान अगस्त्य ऋषि के द्वारा उपदिष्ट इस कथा को, द्वापर युगान्त में श्रीकृष्णजी ने राजा युधिष्ठिर को, माता श्री काशी अन्नपूर्णेश्वरी के व्रत-माहात्म्य परिचायक के रूप में बताया । जो लोग भक्तिपूर्वक इस व्रत को करेंगे,वे जरूर माँ अन्नपूर्णा की कृपा-पात्र बनकर समस्त सुख समृद्धियों को भोग कर, अन्त में सायुज्य मुक्ति के पात्र बन जायेंगे। कथा की समाप्ति -

''वृषभेन्द्र गतिं वन्दे चन्द्रचूडार्थधारिणम्।
करुणार्द्रदृशां देवीं अन्नपूर्णां गिरीन्द्रजाम्।।''- नामक प्रार्थना श्लोक से करते हैं।

समय केअभाव में इस कथा-संग्रह को पढ कर भी माँ का अनुग्रहपात्र

बन सकते हैं।

जय हो माता अन्नपूर्णा की!

****

श्री अन्नपूर्णा मङ्गलाष्टकम्

मङ्गलं नन्दिवाहाभ्यां काशीशाभ्यां सुमङ्गलम्।
विश्वनाथान्नपूर्णाभ्यां दम्पतीभ्यां सुमङ्गलम्।।

मङ्गलं ढुण्ढिराजाय मङ्गलं दण्डपाणये।
मङ्गलं तेऽन्नपूर्णायै विश्वनाथाय मङ्गलम्।।

अन्नपूर्णे! नमस्तुभ्यमन्नार्तिहरणोद्यते!
मङ्गलाशासनं कुर्या तन्मे भवतु मङ्गलम्! ।।

मङ्गलं ते विधास्येहं त्वद्दत्तैर्विमलैः पदैः।
मङ्गलं भवतात्तुभ्यं तन्मे भवतु मङ्गलम्! ।।

मङ्गलं काशिकेश्वर्यै विशालाक्ष्यै सुमङ्गलम्!।
मङ्गलं श्रीभवान्यै च अन्नपूर्णेशि मङ्गलम्!।।

सिन्दूरारुणविग्रहा त्रिणयना स्मेरानना श्रीकरी।
ढुण्ढीशार्चित पादपद्मयुगला श्रीदण्डपाण्यर्चिता।
वाराही परिसेविता भगवती मणिकर्णिकाराधिता।
श्रीकाशीपुरपालिनी परमदा कुर्यात्सदा मङ्गलम्!।।

ओंह्रींश्रीं पर क्लीं विभाव्य महिमा मंत्रार्थसिद्धिप्रदा।
नित्यंचान्नमभीष्टदा परमदा माता कृपापालिनी।
काशीवासिजनार्तिहारिणि परा काशीपुराधीश्वरी।
माङ्गल्यं विदधातु मङ्गलकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।

विश्वनाथसमाश्लिष्ट वामाङ्गी वरदायिनी।
अन्नपूर्णेश्वरी माता कुर्याद्वै नित्यमङ्गलम्!।।

फलश्रुतिः

श्रीपादुका विनिर्याता मङ्गलाष्टक संस्तुतिः
पाठकेभ्यो सदा दद्यादैश्वर्यं भूरि मङ्गलम् ।।

——o——

श्री अन्नपूर्णाजी की आरती

आरती लो अन्नपूर्णे!
आरती लो विशालाक्षि!
आरती लो शम्भुरानि!
शुभद सुमङ्गल आरती! सोलह दिन व्रत आरती!
शुभद सुमङ्गल आरती! सोलह दिन व्रत आरती!
सिद्ध चारण ऋषिगण पूज्ये!
देव दानव वन्दित चरणे!
वेद मंत्र नुति गीत पूजित-
पादुके! श्री पादुका की
(आरती लो अन्नपूर्णे!.....सोलह दिन व्रत आरती!)

कनकमणिमय कलशे हस्ते
करधृत कलछुल पायसान्नदे!
विश्वनाथ के भिक्षादात्रि!
मङ्गलमय लो! मङ्गल आरति!
(आरती लो अन्नपूर्णे!.....सोलह दिन व्रत आरती!)

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि!
ज्ञान बिराग विवेक विकासिनि!
भुक्ति मुक्ति वरदायिनि अम्बे!
करुणा पूरण दृगम्बुज वीक्षे!
(आरती लो अन्नपूर्णे!.....सोलह दिन व्रत आरती!)

देह गेह यह दीप-पात्र कर,
भगति तेल से परि-पूरण कर,

चित्त पेटि में ज्ञान-दीप से,
जला दिया मैं नित्य आरती।
(आरती लो अन्नपूर्णे!.....सोलह दिन व्रत आरती!)

——o——

श्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रम्

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं अन्नपूर्णां च काशिकाम्।
भैरवं दण्डपाणिं च नमस्कृत्य तदाज्ञया।।
काशीवासं प्रकल्प्याशु सुधीः **श्रीपादुकाभिधः**।
परापूर्वकानन्द नाथोऽयं कुरुते स्तवम्।।
नायं कर्ता न भोक्तात्र सर्वं सर्वेश्वरेश्वरी।
गुरोरनुग्रहश्चैव निदान मिति मन्महे।।

देशिकं शङ्कराचार्यमादौ नत्वा यथाविधि।
गुर्वाशिषं समासाद्य तदनुग्रह लब्धधीः।।
'श्रीपादुका' नाम धृत्वा केदारस्थं महेश्वरम्।
गौरीं गणपतिं बालां ब्रह्मविद्यामनुस्मरन्।।
अन्नपूर्णा पराम्बायाः दिव्यं नामसहस्रकम्।
दीक्षितः कुरुते चैवं काशीवासव्रते रतः।।

****

हरिः ॐ श्री महागणाधिपतये नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। हरिः ॐ।

अस्यश्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र मालामहामंत्रस्य श्रीपादुका ऋषिः। अनुष्टुभ् छन्दः।ज्ञानवैराग्यमोक्षदा श्री अन्नपूर्णेश्वरी परा देवता। ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। मम श्री अन्नपूर्णेश्वरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्

श्लो।। कुक्षिस्थाखिललोकरक्षणकरी श्रीकुण्डली श्रीकरी ।
सक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी सौभाग्यसंपत्करी ।
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां मे प्रददातु भक्तवरदा माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।

लं - पृथ्वी तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः गन्धं लेपयामि।

हं - आकाश तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः पुष्पं पूजयामि।

यं - वायु तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

रं- वह्नि तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः दीपं दर्शयामि।

वं- अमृत तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः अमृतोपहार नैवेद्यं निवेदयामि।

सं - सर्व तत्त्वात्मिकायै अन्नपूर्णादेव्यै नमः सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

****

अथ श्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः

श्रींबीज नवनामावलिः

श्रीमाता - श्रीमहादेवी - श्रीमती - श्रीमहेश्वरी।
श्रींबीजजपसन्तुष्टा - श्रींबीजकृतसंस्थितिः।। (०१-०६)
श्रींबीजार्चितपादाब्जा - श्रीबीजाम्बुजभृङ्गिका।
श्रीबीजसंविदुत्फुल्ल सहस्रारकृतालया।। (०७-०९)

मंत्रोद्धारगर्भितनामावलिः

ह्रीं कारी - ह्रींस्वरूपा च - ह्रींबीजाङ्गणदीपिका।
श्रीं बीजार्चनसंतुष्टा - श्रीधामा - श्रीप्रदायिनी।। (१०-१५)

क्लीं बीजार्चितपादाब्जा - क्लींबीजजपसंस्तुता।

ॐ कारपञ्जरशुकी - चोङ्काराम्बुधिचन्द्रमाः॥ (१६-१९)

नमो ऽन्तमन्त्रसन्तुष्टा - नमस्कृतवरप्रदा ।

भगवत्यन्नपूर्णेशी - भवसागरतारिणी ॥ (२०-२४)

मम ताहन्तानिहन्त्री - माता - मोक्षप्रदायिनी ।

अभिलषितं प्रयच्छन्ती - अनघाऽन्नार्तिनाशिनी॥ (२५-३०)

अन्नं बहुकुर्वन्ती - अन्नपूर्णा ऽमरार्चिता ।

देहि देहान्तरस्था च - दिव्यज्ञानप्रदायिनी ।

स्वाहा स्वधादिसंसेव्या - स्वस्वरूपप्रबोधिनी॥ (३१-३७)

पादुकादि मकुटान्त नामावलिः

पादुकीकृतश्रीपादुकार्चितांघ्रिसरोरुहा।

पादाधःस्थलसंशोभिशंखचक्रादिलाञ्छना॥ (३८-३९)

नमस्कृतजनाभीष्टवरप्रदपदाम्बुजा ।

सुरासुरशिरोरत्नशाणीकृतनखाङ्गुलिः॥ (४०-४१)

समुन्नतक्रमोल्लासिप्रपदद्वयशोभिता ।

गूढगुल्फा - पीनजङ्घा - वामोरू - र्वरदायिनी ॥ (४२-४६)

विशालजघना चैव - अणुसूक्ष्मकटिस्थली।

मरालीमन्दगमना - शिञ्जान्नूपुरनिक्वणा॥ (४७-५०)

समुदञ्चत्कटीशोभिक्वणत्किङ्किणिमेखला ।

अरुणारुणवर्णाभदुकूलपरिशोभिता ॥ (५१-५२)

वलित्रयीसमाश्लिष्टकृशोदरसुमध्यमा।

नाभीकुण्डसमुद्भूतरोमराजिविराजिता॥ (५३-५४)

लसत्सङ्गीतसाहित्यसंभावितस्तनद्वयी।

कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्विता ॥ (५५-५६)

कनत्कनकदर्वीकाकलशान्वितहस्तका।
दरहाससमुत्थानसमर्चितमहेश्वरा।। (५७-५८)
नित्यपायसभिक्षान्नसन्तर्पितासदाशिवा।
चराचरप्राणिकोटिक्षुद्बाधाविनिवारिणी।। (५९-६०)
नानारत्नमनोहारिहारशोभितकन्धरा।
मुखदर्पणवृन्ताभचुबुकश्रीविराजिता।। (६१-६२)
बिम्बोष्ठी - कम्बुकण्ठी च - हासोल्लासिकपोलभूः।
दाडिमीबीजसन्दोहदन्तपङ्क्तिविराजिता।। (६३-६६)
जितचम्पकनासाभा - नासाभरणभासुरा।
चन्द्रार्कानलनेत्रा च - चन्द्रिकाशीतलेक्षणा।। (६७-७०)
कबरीभरसंशोभिदिव्यपुष्पसुगन्धिका ।
द्वादशादित्यरत्नाढ्यामकुटाञ्चितमस्तका।। (७१-७२)

मातृकाक्षरनामावलिः

-अ-

'अथ' स्वरूपाऽन्नदात्री - अकाराद्यक्षरात्मिका।
अन्नदाऽन्नरूपा च - अन्नराशिकृतालया।। (७३-७८)
अन्नार्थिकल्पलतिका - अन्नदानरतोत्सवा ।
अमृतान्नप्रदात्री च - अन्नार्चितसदाशिवा।। (७९-८२)
अन्नराश्यैकनिलया - अन्नराशिप्रवर्धिनी।
अन्नप्रसूति - रन्नेशी - अन्नार्तिहरणोद्यता।। (८३-८७)
अन्नार्चनसुसंप्रीता - अर्चितानन्दवर्धिनी।
अन्नपूर्णेश्वरीचैवा ऽन्नाहुतिसमर्चिता।। (८८-९१)
अव्यक्तानन्तमहिमा - अन्नमाहात्म्यदर्शिनी।
अदितिश्चामरेशी च - अमरेशार्चितांघ्रिका।। (९२-९६)

अरूपाऽनेकरूपा च - अप्रमेया ऽखिला ऽव्यया।
अरुणा ऽव्याजकरुणाभरणा -ऽरिविनाशिनी।। (९७-१०५)
अमला -ऽचञ्चला -ऽव्यक्ता - अणुसूक्ष्मसुमध्यमा।
अद्रिजा -ऽद्भुतचारित्रा - अपर्णा -ऽनुल्लंघ्यशासना।। (१०६-११३)
अभीष्टसिद्धिदात्री च - अणिमाद्यष्टसिद्धिदा।
अद्वैतविद्यासर्वस्वा - अखिलागमपूजिता।। (११४-११७)
अहन्ताममताहन्त्री - अद्वयानन्दवर्धिनी।
अनन्तदा -ह्यनन्ताक्षी - अनन्तगुणशालिनी।। (११८-१२२)
अभवा -ऽभयदा चैव - अभवानन्ददायिनी।
अज्ञानान्धकारनाशि -न्याशुसिद्धिप्रदायिनी।। (१२३- १२७)

- आ -

आकाररूपि -ण्याद्या च - आखण्डलसमर्चिता।
आधाराम्बुरुहारूढा - आधाराधेयवर्जिता।। (१२८- १३२)
आदिदेवी -चादिशक्तिः - आत्मारामवरप्रदा।
आदिदेवाङ्कपीठस्था - आदिमध्यान्तवर्जिता।। (१३३- १३७)
आदित्यतेजा -चाम्बा च - आकाशादिजगत्प्रसूः।
आदिमाता -चादिलक्ष्मीः -आधिव्याधिविनाशिनी।। (१३८- १४३)
आब्रह्मकीटजननी - आगमान्तप्रकीर्तिता।
आत्मानात्मविवेकातिशयज्ञानप्रदायिनी।। (१४४- १४६)
आशापाशविनिर्मुक्ता - आन्तरस्था - ऽऽशुसिद्धिदा।
आदितेयार्चितपदा - आनन्दवनवासिनी।। (१४७- १५१)
आत्मारामा -ऽऽत्मसंतुष्टा - चात्मारामानुचिन्तिता।
आत्मज्ञा -चात्मनिष्ठा च - आत्मज्ञानप्रदायिनी।। (१५२- १५७)
आत्मसू -रात्मरूपा च - आन्तरस्था -ऽऽशुतोषिणी।

आबालगोपविदिता - आपन्नजनपालिनी।। (१५८- १६३)

-इ-

इकाररूपि-णीकारस्तुत्या - चेरम्मदप्रभा।
इष्टदा - चेन्द्रसंसेव्या - इन्द्राण्यर्चितपादुका।। (१६४- १६९)
इहामुत्रार्थफलदा - इन्दिरारमणार्चिता।
इच्छाशक्तिस्वरूपा च - इन्दीवरसुलोचना।। (१७०- १७३)
इतिहासपुराणानुकीर्तिता -चेन्दिरार्चिता।
इन्द्रग्निरविनेत्रा च - इन्दुबिम्बाननद्युतिः।। (१७४- १७७)

इलाधारा - चेन्द्रशक्तिः - इन्द्रचापसमप्रभा।
इज्यासमर्चिता -चेभगामिनी -चेष्टदायिनी।। (१७८ - १८३)

-ई-

ईकाररूपा -चेशानी - ईप्सितार्थफलप्रदा।
ईशप्रिया -चेश्वरीड्या - ईश्वरान्नप्रदायिनी।। (१८४- १९०)
ईश्वरीशक्ति -रीकारशुक्तिमौक्तिकरूपिणी।
ईकारकल्पवृक्षश्रीः - ईम्बीजामृतवर्षिणी।। (१९१- १९४)
ईंचतुष्टयवाच्यश्रीः - ईम्बीजार्चितपादुका।
ईश्वरोग्रतपस्सिद्धि -रीश्वरप्राणवल्लभा।। (१९५- १९८)
ईशा-चेशानसम्पूज्या - ईश्वरार्धाङ्गराजिता।
ईशानबद्धमाङ्गल्यसूत्रराजितकन्धरा।। (१९९-२०२)

-उ-

उत्तमान्नप्रदात्री च - उद्धूताखिलकल्मषा।
उत्तारिताश्रितजना - चोत्तुङ्गस्तनमण्डला।। (२०३- २०६)
उमादेवी - चोज्ज्वलाभा - उत्फुल्लाब्जदलेक्षणा।
उद्यद्भानुसहस्राभा - उत्तरोत्तरवृद्धिदा।। (२०७- २११)

उत्सङ्गधृतविघ्नेशा - उडुराजशिरोमणिः।
उत्सङ्गासीनषड्वक्त्रा - उत्तराशाद्रिवासिनी।। (२१२- २१५)

-ऊ-

ऊकाररूपि - ण्यूर्ध्वा च - ऊहापोहविवर्जिता।
ऊर्जस्वती - चोर्ध्वगामि -न्यूर्ध्वरेतानुचिन्तिता।। (२१६- २२१)

-ऋ -

ऋकाराच्यां -ऋषिस्तुत्या - ऋषिमण्डलसेविता।
ऋगादिवेदसंस्तुत्या - ऋषिधर्मप्रवर्धिनी।। (२२२- २२६)
ऋतुकर्त्री - ऋक्षसेव्या - ऋक्षाधिपकिरीटिनी।
ऋग्यजुस्साममंत्रार्च्या - ऋणत्रयविमोचनी।। (२२७- २३१)
ऋतम्भरा - ऋतप्रीता - ऋजुमार्गप्रवर्तिनी।
ऋगादिवेदजननी - ऋभ्वर्चितपदाम्बुजा।। (२३२- २३६)

-ॠ -

ॠकारार्चितपादाब्जा - ॠंबीजन्यस्तयन्त्रिणी।
ॠंबीजजपसंतुष्टा - ॠक्षाकाराङ्कुशोज्ज्वला।। (२३७- २४०)

-ऌ-

ऌकाररूपा - ऌंबीजन्यासशोभितयन्त्रका।
ऌंबीजजपसंतुष्टा - ऌंबीजन्यस्तमातृका।। (२४१- २४४)

-ॡ-

ॡकाररूपा - ॡकारश्रुतिकीर्तितवैभवा।
ॡंकारमन्त्ररूपा च - ॡंकारार्चितपादुका।। (२४५- २४८)

-ए-

एकाररूपि -ण्येकारी - एकभक्तिसमर्चिता।
एका च -एकवीरा च - एकानेकप्रदायिनी।। (२४९- २५४)

एधमानप्रभाचैव - एधिताखिलभक्तका।
एतत्तदित्यनिर्देश्या - एकात्मा - चैणलोचना।। (२५५- २५९)
एकदन्तार्चितपदा - चैनःकूटविनाशिनी।
एकातपत्रसाम्राज्ञी - चैषणत्रयभञ्जिनी।। (२६०- २६३)
एजिताखिललोका च - एणाङ्कधृतमौलिनी।
एधयित्री- चैधमानश्रीप्रदा - चैकनायिका।। (२६४- २६८)

-ऐ-

ऐंकारी - चैन्द्रशक्तिश्च - ऐरम्मदसमप्रभा।
ऐंकारमन्त्रमकुटा - ऐंबीजध्यानगोचरा।। (२६९- २७३)
ऐंह्रींश्रींक्लींबीजजप्या - एंबीजार्चनतोषिणी।
ऐंबीजजपसंतुष्टा - ऐंतनू - रैंस्वरूपिणी।। (२७४- २७८)
ऐन्द्रीमुखसमाराध्या - ऐश्वर्यबलदायिनी।
ऐंबीजजपनिष्णातदत्तविद्यामहाधना।। (२७९- २८१)

-ओ-

ओकाररूपि -ण्योङ्कारी - ॐतत्सदितिसंस्तुता।
ॐकाररत्नमञ्जूषा - ॐकारमणिदीपिका।। (२८२- २८६)
ॐकारमन्त्रनिलया - ॐकारब्रह्मरूपिणी।
ॐकारवीणानादश्रीः - ॐकाराम्बुजसौरभा।। (२८७- २९०)
ॐकारनन्दनाराम,बर्हि - ण्योङ्कारवासिनी।
ॐकारश्रुतिविश्रान्तिः - ॐकारब्रह्ममानसा।। (२९१- २९४)
ॐकारदीधितिश्चैव - मोङ्काराम्बुधिकौस्तुभा।
ॐकारपद्मसद्मश्रीः - ॐकारारुणमण्डला।। (२९५- २९८)
ॐकारार्चनसंतुष्टा - ओषधीशकिरीटिनी।
ॐकारनादसंप्रीता - ॐकाराद्भुतविग्रहा।। (२९९- ३०२)

-औ-

औकाररूपि -ण्यौकारन्याससंशोभिमातृका।
औकारमनुसंस्तुत्या - औंबीजजपतोषिणी।। (३०३- ३०६)
औदुम्बरस्था - चौम्बीजन्यस्तयन्त्रसमर्चिता।
औपनिषदर्थसंवेद्या -औचित्यज्ञानदायिनी।। (३०७- ३१०)

-अं-

अम्बकत्रयसंयुक्ता - चाम्बिकेयसमर्चिता।
अम्बिकानामसंस्तुत्या - चाम्बरौकसपूजिता।। (३११- ३१४)
अङ्कसंस्थितविघ्नेशा - चाङ्कारूढगुहप्रिया।
अम्बुजासनसंपूज्या - चाम्बुजातदळेक्षणा।। (३१५- ३१८)

-अः-

अःकाररूपि -ण्यःकारपीठराजाधिवासिनी।
अःकारमातृकाचैव -मःकारवरवर्णिनी।। (३१९- ३२२)

-क-

कल्याणगुणसंपन्ना - काली - कालस्वरूपिणी।
कल्याणानन्दरूपा च - कल्याणवरदायिनी।। (३२३- ३२७)
कनत्कनकदर्वीका - कलशाञ्चत्कराम्बुजा।
काशिकेशसमाराध्या - काशीपुरप्रपालिनी।। (३२८- ३३१)
काशीपुराधिराज्ञी च - काशीवासिसमर्चिता।
काशिकाकल्पलतिका - काशीपुरप्रदीपिनी।। (३३२-३३५)
काशीवाससुसन्तुष्टा - काशीवास्यन्नदायिनी।
काशीकेदारखण्डेशी - केदारेश्वरनन्दिनी।। (३३६-३३९)
कामितान्नप्रदा चैव - कल्पवृक्षाधिकप्रदा ।

कामाक्षी -कामदा चैव - काम्या - काम्यवरप्रदा।।(३४०-३४५)
कामाकर्षणशक्तिश्च - कामितार्थप्रदायिनी।
कपर्दिनी - कलासंस्था - कपालिकुलपालिनी।। (३४६-३५०)
केशवार्चितपादाब्जा - कारुण्यामृतवर्षिणी ।
काव्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा - काव्यालापविनोदिनी।। (३५१-३५४)
कलात्मिका -कलानाधा - कलिकल्मषनाशिनी।
कादिविद्या - कामसेव्या - कामेश्वरसमर्चिता।। (३५५-३६०)

कामेश्वराङ्कसंस्था च - कामेश्वरप्रियाङ्गना।
कात्यायनी - कलारूपा - कामार्चितपदाम्बुजा।। (३६१-३६५)
कामेश्वरप्राणनाथा - कामेश्वरवरप्रदा ।
करुणा - काम्यप्रदा चैव - करुणावरुणालया।। (३६६-३७०)
कनत्कनकताटंका - क्वणन्नूपुरगामिनी ।
क्रियाशक्तिः - कामरूपा - कर्मबन्धविमोचनी।। (३७१-३७५)
कालकूटप्रशमनी - कल्याणगुणशालिनी।
कमला -कमलावासा - कार्यकारणवर्जिता।। (३७६-३८०)
कोटिकन्दर्पलावण्या - कोटिसूर्यसमप्रभा।
कदम्बकुसुमप्रीता - कदम्बवनवाशिनी।। (३८१-३८४)
कर्मज्ञा - कर्मफलदा - कर्मचक्रप्रवर्तिनी।
कुमारी - कौमुदीशुभ्रा - कनकाचलवासिनी।। (३८५-३९०)
कुमार्यर्चनसन्तुष्टा - कौमारीशक्तिरूपिणी।
कुक्षिस्थाखिलब्रह्माण्डा - कुण्डलीशक्तिरूपिणी।।(३९१-३९४)

-ख-

खकाररूपा -खड्गेशी - खड्गमालाभिसंस्तुता।

खण्डपरशुप्रिया चैव - खण्डेन्दुधरवल्लभा।। (३९५-९९)
खण्डताशेषपापौघा - खड्गहस्ता च - खेचरी ।
खट्वाङ्गीकृतविष्ण्वादिपञ्चब्रह्मासनस्थिता।। (४००-४०३)

-ग-

गकाररूपा -गंबीजा - गंबीजार्चासुतोषिता।
गणेशादिगणाराध्या - गणेशार्चाऽशुतोषिता।। (४०४-४०८)
गुहाम्बा - गुह्यकाराध्या - गुरुमूर्ति - र्गुणप्रिया।
गुरुसंशयभेत्त्री च - गुरुगम्या - गुहार्चिता।। (४०९-४१५)
गर्वपर्वतदम्भोलिः - गजवाजिरथप्रदा।
गगनाढ्या - गकाराच्र्या - गजमालाविभूषिता।। (४१६-४२०)
गजवाहा - गगनगा - गणाम्बा - गणपूजिता।
गजलक्ष्मी - र्गदापाणिः-गन्धर्वगणसंस्तुता।। (४२१-४२७)
गन्धानुलिप्तसर्वाङ्गी - गन्धसिन्धुरगामिनी।
गङ्गार्चिता च - गम्भीरा - गङ्गाधरकुटुम्बिनी।। (४२८-४३२)

-घ-

घकाररूपिणी चैव - घकाराच्र्या - घनस्तनी।
घटसम्भवकान्ताच्र्या - घटसम्भवसंस्तुता।। (४३३-४३७)
घनसारानुलिप्ताङ्गी - घनसारशुचिस्मिता।
घटीयंत्रवदविश्रांतभवचक्रप्रवर्तिनी।। (४३८-४४०)
घोराऽघोरस्वरूपा च - घोरपातकनाशिनी।
घनरूपा - घनाच्र्या च - घृणिसंपूजितांघ्रिका।। (४४१-४४५)

-ङ-

ङकाररूपा - ङंबीजन्यस्तयंत्रविराजिता ।
ङंबीजजपसन्तुष्टा - ङंबीजार्चितपादुका।। (४४६-४५०)

-च-

चकाररूपा - चकार वर्णराजितमातृका।
चन्द्रिकाशीतलस्वान्ता - चरणामृतवर्षिणी।। (४५१-४५४)
चराचरान्नदात्री च - चराचरजगत्प्रसूः।
चक्रमन्दिरमध्यस्था - चक्रेशीगणसेविता।। (४५५-४५८)
चक्रेश्वरी - चक्रसंस्था - चक्रार्च्या - चकितेक्षणा।
चलापाङ्गी - चञ्चलाच - चक्रराजनिकेतना।। (४५९-४६५)
चतुरा - चतुरालापा - चतुर्मुखसमर्चिता।
चण्डीश्वरसमाराध्या- चाम्पेयगौरद्युतिः।। (४६६-४७०)
चम्पकाशोकपुन्नागपुष्पार्चितपदाम्बुजा।
चन्दनागरुकस्तूरीचर्चितश्रीतनूलता।। (४७१-४७२)
चन्द्रसूर्याग्निनेत्रा च - चन्द्रमण्डलमध्यगा।
चन्द्रप्रभा -चन्द्रविद्या - चन्द्रांचितकपर्दिनी ।। (४७३-४७७)
चकोराक्षी - चञ्चलाभा - चञ्चलापाङ्गवीक्षणा।
चतुर्मुखसमाराध्या - चक्रषट्कोपरिस्थिता।। (४७८-८२)
चकिताक्षी - चारुहासा - चारुचन्द्रकलाधरा।
चन्दनागरुकस्तूरीकुंकुमार्चितपादुका।। (४८३-४८६)

-छ-

छकाररूपा - छन्दोगा - छन्दश्शास्त्रप्रकीर्तिता।
छन्दस्स्वरूपिणी चैव - छन्दोमन्त्राधिदेवता।। (४८७- ४९१)

छलदूरा - छद्मवेषा - छत्रचामरलाञ्छना।
छत्रसंसेव्यलक्ष्मीका - छन्दोगणसुकीर्तिता।। (४९२- ४९६)

-ज-

जगन्माता - जगद्धात्री - जगदान्दकारिणी।
जगत्कारणरूपा च - जगज्जालैकसाक्षिणी॥ (४९७- ५०१)
जननी - जगद्वन्द्या - जनयित्री - जनावना।
जम्भारिमुख्यसंसेव्या - जनविश्रान्तिदायिनी॥ (५०२- ५०७)
जयप्रदा -जगज्जेत्री - जगद्धर्त्री - जगन्मयी।
जयापजयहेतुश्च - जयश्री - र्जगदीश्वरी॥ (५०८- ५१४)
जाह्नवीतीरसंस्था च - जलदुर्गा -जयेन्दिरा।
जाह्नवीजलसंतर्प्या - जह्नुकन्यासमर्चिता॥ (५१५- ५१९)
जयादिशक्तिसंसेव्या - जयाविजयार्चितांघ्रिका॥
जीवाश्रिता - जीवदात्री - जीवन्मुक्तिप्रदायिनी॥ (५२०- ५२४)

-झ-

झकाररूपिणी चैव - झकारन्यस्तमातृका।
झषकेतनसंसेव्या - झणन्नूपुरनिक्वणा॥ (५२५- ५२८)
झल्लरीवाद्यसंतुष्टा - झम्पतालप्रकीर्तिता।
झणंझणत्किङ्किणीक कटिसंशोभिमेखला॥ (५२९- ५३१)

-ञ-

ञकाररूपिणी चैव - ञंबीजन्यस्तमातृका।
ञंबीजजपसंतुष्टा - ञंबीजार्चितपादुका॥ (५३२- ५३५)

-ट-

टकाररूपिणी चैव - टकाराच्र्या - टमातृका।
टङ्कारजितदैत्येशी - टङ्काराधावितासुरा॥ (५३६- ५४०)

-ठ-

ठकाररूपा - ठकारन्यस्तयन्त्राधिदेवता।
ठंबीजार्चनसंतुष्टा - ठाभिधा - ठक्कुरेश्वरी॥ (५४१- ५४५)

-ड-

डकाररूपिणी चैव - डंबीजा - डामरार्चिता।
डमरुहस्ता - डाकिनीड्या - डिण्डिमध्वनितोषिणी।। (५४६- ५५१)

डामर्यनादसंजातमातृकाक्षररूपिणी।
डमरुकध्वनिसंतुष्टा - डोलार्चापरितोषिता।। (५५२- ५५४)

-ढ-

ढकाररूपा - ढकारपीठराजाधिवासिनी।
ढक्कावादनसंतुष्टा - ढुण्ढिगणपत्यर्चिता।। (५५५-५५८)
ढुलिपृष्ठविजेतृस्वप्रपदाञ्चितनूपुरा।
ढुण्ढिगणेशजननी - ढुण्ढ्यर्चितपदाम्बुजा।। (५५९- ५६१)

-ण-

णकाररूपा - णकार न्यस्तयंत्रसमर्चिता।
णंबीजजपसंतुष्टा - णंबीजध्यानगोचरा।। (५६२- ५६५)

-त-

तकाररूपा - तंत्रेशी - तंत्रमार्गप्रपूजिता।
तंत्रार्चनसमाराध्या - तंत्रकीर्तितवैभवा।। (५६६- ५७०)
तंत्रज्ञा - तंत्रसंपूज्या - तंत्रवित्परिषेविता।
तत्सदित्यर्चिता चैव - तत्सत्पदविचिन्तिता।। (५७१- ५७५)
तन्वी - तत्पदलक्ष्यार्था - तरुणी - तारिणी - तरी।
तमःपारा - तमोदूरा - तमोहंत्री - तटित्प्रभा।। (५७६- ५८४)
तपस्विजनसंपूज्या - तंत्रार्च्या - तंत्रकीर्तिता।
तदेतदित्यनिर्देश्या - तत्पदार्थैकलक्षिता।। (५८५- ५८९)
तत्त्वज्ञानप्रदात्री च - तत्त्वचिन्तनगोचरा।
तत्त्वस्वरूपा - तत्त्वज्ञा -तत्त्वज्ञानसुलक्षिता।। (५९०- ५९४)
तत्त्वात्मिका - तत्त्वमयी - तत्त्वबोध्या -तदात्मिका।

तत्त्वप्रसू -स्तत्त्वसाक्षी - तत्त्वात्मा - तत्त्वबोधिनी।।(५९५- ६०२)
तपश्शक्ति -स्तपस्सिद्धि -स्तपःफलप्रदायिनी।
तपस्साक्षी - तपस्सेव्या - तपस्विजनगोचरा।। (६०३- ६०८)
त्रयीमूर्ति - स्त्रयीवेद्या - त्रयीगम्या - त्रयीमयी।
त्रयीलक्ष्या - त्रयीनुत्या - त्रय्यर्टितपदाम्बुजा।। (६०९- ६१५)
त्रिपुरा- त्रिगुणातीता -त्रिपुरारिमनोहरी।
त्रिमूर्त्यर्चितपादाब्जा - त्रिपुराम्बा - त्रिकोणगा।। (६१६- ६२१)

- थ -

थकाररूपा - थुड्ढिः - थंबीजांचितमातृका।
थकारन्याससंतुष्टा - थालया - थाभिधान्विता।। (६२२- ६२७)

-द-

दकाररूपा - दकारन्यस्तयंत्रसुपूजिता।
दर्वीकरवराढ्या च - दर्वीदत्तामृतान्नदा।। (६२८- ६३१)
द्यूतनिर्जितविश्वेशी - दयादृष्टि - र्दयामयी।
दण्डिताखिलदैत्या च - दैत्यदर्पविनाशिनी।। (६३२- ६३६)
दनुजाचलदम्भोलिः - दम्भोलिधरसेविता।
दन्तावलगति- र्दन्तिमाता - दन्तिसमर्चिता। (६३७- ६४१)
दरान्दोलितदीर्घाक्षी - दर्वीका -दर्पनाशिनी।
दारिद्र्यनाशिनी चैव - दरस्मेरनुखाम्बुजा।। (६४२- ६४६)
दरहासा - दानशौण्डा - दनुजारि - र्दयानिधिः।
दयासान्द्रा - दयामूर्तिः - दयनीयजनावना।। (६४७- ६५३)
दयाशीला - दयापूर्णा - दयामृतरसाम्बुधिः।
दशविद्यास्वरूपा च - दशदिग्देवतार्चिता। (६५४- ६५८)
दीर्घाक्षी - दैन्यशमनी - दीनावनपरायणा।

दहरान्तर्विहारी च - दण्डभृद्भ्रयनाशिनी।। (६५९- ६६३)

-ध-

धकाररूपा - धनदा - धनधान्यसमृद्धिदा।
धर्मभू - धर्मनिलया - धर्मिणी -धर्मवर्धिनी।। (६६४- ६७०)
धर्मस्वरूपा -धर्मेशी - धर्माचारप्रचोदिनी।
धर्मज्ञा - धर्मनिरता - धर्मात्मा - धार्मिकप्रिया।। (६७१- ६७७)
धर्मसूक्ष्मा - धर्मनिष्ठा -धर्माधर्मविवर्जिता।
धर्माध्यक्षा -धर्मकर्त्री - धर्माधर्मद्वयातिगा।। (६७८- ६८३)
धर्मिष्ठा -धर्मतत्त्वा च - धर्माधर्मप्रवर्तिनी।
धर्मप्रिया - धर्मतेजा - धर्मरक्षणतत्परा।। (६८४- ६८९)
धनप्रदा - धनार्च्या च - धनेशी -धनपूजिता।
धनदार्च्या - धनदमुख्यसेव्या - धनविवर्धिनी।। (६९०- ६९६)
धरणी - धरणीभार धात्री - धातृसमर्चिता।
धीरपूज्या - धीरसेव्या - धीरधी - धींप्रदायिनी।।(६९७-७०३)
धीरूपा - धीरवन्द्या च - धीनिधि -र्धिषणाप्रदा।
ध्यातृवैराग्यदात्री च - ध्याननिर्धूतकिल्बिषा।। (७०४-७०९)

-न-

नकाररूपा - नादेशी - नारदादिमुनिस्तुता।
नारायणी - नादरूपा - नारायणसमर्चिता।। (७१०- ७१५)
नानाविधान्नदात्री - नामपारायणप्रिया।
निरूपितान्नमाहात्म्या - निगमागमसंस्तुता।। (७१६- ७१९)
नित्यारूपा च - नित्यार्च्या -नित्यामण्डलसेविता।
नित्या -ऽनित्या - नित्यपूज्या - नित्याषोडशिरूपिणी।।(७२०- ७२६)

नित्यान्नदाननिरता - नित्यान्नदवरप्रदा।
नमस्कृतजनाभीष्टवरदानसमुत्सुका।। (७२७- ७२९)
नाकाधिराजसंसेव्या - नाकिवन्द्या - नटेश्वरी।
नगजाता - नगाराध्या - नगवंशाब्धिचन्द्रमाः।। (७३०- ७३५)
नादसेव्या - नादतुष्टा - नादबिन्दुकलाश्रया।
नादलोला -नादपूर्णा - नादार्च्या - नादरूपिणी।। (७३६- ७४१)
नन्दिविद्या - नन्दिवन्द्या - नन्दिवाहनसुन्दरी।
नन्दिताखिलभक्तौघा - नन्दिकेश्वरसंस्तुता।। (७४२- ७४६)
नवविद्रुमबिम्बोष्ठी - नवादित्यसमप्रभा।
नवसंख्यासमाराध्या - नवसंख्यानुभाविता।। (७४७- ७५०)
नवरात्रव्रताराध्या - नवदुर्गापरिवृता।
नवावरणसंपूज्या - नवचक्रेश्वरीश्वरी।। (७५१- ७५४)

-प-

पकाररूपा -पद्माक्षी - पद्मनाभसहोदरी।
पद्मालयार्चितपदा - पद्मपत्रनिभेक्षणा।। (७५५- ७५९)
परमान्नप्रदात्री च - परमानन्ददायिनी।
परमा -परमेशी च - परदा -परमेश्वरी।। (७६०- ७६५)
पञ्चमी -पञ्चभूतेशी - पञ्चीकृतप्रपञ्चिका।
पञ्चोपचारसंपूज्या - पञ्चाशद्वर्णरूपिणी।। (७६६- ७७०)
परंज्योतिः - परंधाम - परमात्मा - परात्परा।
पापप्रशमनी चैव -पापारण्यदवानला।। (७७१- ७७६)

-फ-

फकाररूपा - फस्तुत्या - फणिभूषणनन्दिनी।
फालाक्षी - फालचन्द्रा च - फूत्कारोत्थितकुण्डली।। (७७७- ७८२)

फुल्लकल्हारसंस्था च - फुल्लेन्दीवरलोचना।
फणिभूषणसंश्लिष्टवामाङ्गी - फलदायिनी।। (७८३- ७८६)

-ब-

बह्वन्नदा च -बहुदा - बहुमान्या - बहुस्तुता।
बहुरूपा - बलाढ्या च - बह्वीड्या - बहुमानदा।। (७८७- ७९४)
बलारिप्रमुखार्च्या च - बलभद्रसहोदरी।
बलाबलस्वरूपा च - बलदा - बलिसेविता।। (७९५-७९९)
बला - बलातिगा चैव - बलवीर्यमदोद्धता।
बालाम्बिका - बाणहस्ता -बगळा - बन्धुरालका।।(८००-८०६)
ब्रह्मविद्या - ब्रह्मरूपा -ब्रह्मार्चितपदाम्बुजा।
ब्रह्माणी - ब्राह्मणप्रीता - ब्रह्मज्ञानप्रदायिनी।। (८०७- ८१२)

-भ-

भक्तिप्रिया - भक्तिगम्या - भक्तिमार्गप्रचोदिनी।
भक्तरक्षैकदीक्षा च - भक्ताभीष्टप्रदायिनी।। (८१३- ८१७)
भद्रदा - भक्तिदा चैव - भवानी - भवतारिणी।
भद्रमूर्ति - र्भद्रकाली - भक्तिवश्या - भयापहा।। (८१८- ८२५)
भण्डिनी - भञ्जिनी चैव - भण्डदैत्यविमर्दिनी।
भाविनी - भावनागम्या - भवबन्धविमोचनी।। (८२६- ८३१)
भोक्त्री - भोज्यं च - भुक्तिश्च - भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
भोगदा - भोज्यदा चैव - भूमा - भूरिप्रदायिनी।। (८३२- ८३९)

-म-

मकाररूपा - माहेशी - महितान्नप्रदायिनी।
महादेवी - महामाया - महादेवप्रियाङ्गना।। (८४०- ८४५)

महातंत्रा - महामंत्रा - महायंत्रा - महासना।
महागणेशसंपूज्या- महाराज्ञी - महेश्वरी।। (८४६- ८५२)
महागुणा - महावीर्या - महाशक्ति-र्महारतिः।
महाबुद्धि - र्महासिद्धि - र्महायोगीश्वरेश्वरी।। (८५३- ८५९)
महालक्ष्मीसमाराध्या - महाभैरवपूजिता।
महायागक्रमाराध्या - महात्रिपुरसुन्दरी।। (८६०- ८६३)
मणिपूरान्तरुदिता - मणिद्वीपनिवासिनी।
मणिपूरार्चिता -मान्या -महापातकनाशिनी।। (८६४- ८६८)

-य-

यकाररूपा - यज्ञेशी - यज्ञेश्वरसमर्चिता।
यज्ञभोजनसंतुष्टा - यज्ञान्नपरितर्पिता।। (८६९-८७३)
यज्ञप्रिया - यज्ञमूर्ति -र्यज्ञार्च्या - यज्ञरक्षिणी।
यज्ञस्था - यज्ञसंतुष्टा - यज्ञकर्मफलप्रदा।। (८७४- ८८०)

-र-

रजताद्रिकृतावासा - रम्या - राजीवलोचना।
रञ्जनी - रमणीसेव्या - रणत्किङ्किणिमेखला ।। (८८१-८८६)
रतिवल्लभजीवातू - रतिसेव्या - रतिप्रिया।
रक्तवस्त्रपरीधाना - रागद्वेषविवर्जिता।। (८८७- ८९१)

-ल-

ललिता - लाकिनीसेव्या - लावण्यजितमन्मथा।
लम्बालका - ललाटाक्षी - लास्यनृत्तपरायणा।। (८९२- ८९७)
लाक्षारुणितपादश्री -र्लक्ष्मीवाणीसुसेविता।
लक्ष्मीशमुख्यसंकीर्त्या - लक्ष्मीपतिवरप्रदा।। (८९८- ९०१)

-व-

वकाररूपा - वाग्देवी - वाङ्मयी - वामलोचना।

वराभयकराढ्या च -वरदा - वागधीश्वरी।। (९०२- ९०८)
विश्वमाता - विश्वधात्री - विश्ववन्द्या -विलासिनी।
विश्वेश्वरप्राणनाथा - विश्वेशी - विश्वरूपिणी।। (९०९- ९१५)
वन्दारुभक्तमन्दारा - वन्दारुजनवत्सला।
वन्दितामरपादाब्जा - वन्दिताघविनाशिनी।। (९१६- ९१९)

-श-

शंबीजार्च्या - शाङ्करी च - शम्बरारिमनोहरी।
शाम्भवी - शाम्भवीविद्या - शम्भुनाथसमर्चिता।। (९२०-९२५)
शिवप्रिया -शिवाचारा - शिवमूर्ति -श्शिवङ्करी।
शिवाराध्या - शिवदृष्टिः -शिवज्ञानप्रदायिनी।। (९२६- ९३२)
शातोदरी - शान्तमूर्तिः - शक्तिकूटकटीतटी।
शिवश्रीश्च - शिवार्धाङ्गी - शिवशक्तिस्वरूपिणी।। (९३३- ९३८)

-ष-

षकाररूपा -षाड्गुण्या - षडध्वार्चितपादुका।
षड्गुणैश्वर्यसंपन्ना - षडाननसमर्चिता।। (९३९- ९४३)
षडङ्गवेदविनुता - षडाम्नायाधिदेवता।
षड्विधैक्यानुसंभाव्या - षट्चक्रोपरिसंस्थिता।। (९४४- ९४७)

-स-

सकाररूपा - सर्वेशी - सर्वदा - सर्वमङ्गला।
सर्वान्नदात्री - सद्रूपा - सर्वाभीष्टफलप्रदा।। (९४८- ९५४)
सर्वरोगहरा चैव - सर्वरक्षास्वरूपिणी।
सर्वसम्पत्प्रदात्री च - सर्वापद्विनिवारिणी।। (९५५- ९५८)
सत्स्वरूपा च - सत्यार्च्या - सदाराध्या - सनातनी।
सत्यज्ञानान्दरूपा - सदाशिवकुटुम्बिनी।। (९५९- ९६४)

-ह-

हकाररूपा - हंबीजा - हंसिनी - हंसवाहना।
हंसमंत्रार्थवेद्या च - हादिवद्याास्वरूपिणी।। (९६५- ९७०)
हयाननसमाराध्या - हरित्पतिप्रपूजिता।
हरार्धाङ्गी - ह्रादिनी च - हरिसेव्यपदाम्बुजा।। (९७१- ९७५)
ह्रींबीजजपसंतुष्टा - ह्रींकारी -ह्रींस्वरूपिणी।
ह्रल्लेखार्चनसंतुष्टा - ह्रल्लेखापरितर्पिता।। (९७६- ९८०)

-ळ-

ळकाररूपा - ळंबीजा - ळकारन्यस्तमातृका।
ळंबीजार्चितपादाब्जा - ळकारवरवर्णिनी।। (९८१- ९८५)

-क्ष-

क्षकाररूपा - क्ष्मासेव्या - क्षणक्षणविनूतना।
क्षमावती - क्षमारूपा - क्षपानाथकिरीटिनी।। (९८६- ९९१)
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ता - क्षुद्बाधाविनिवारिणी।
क्षालिताशेषपापौघा - क्षान्तिदा - क्षिप्रमोक्षदा।। (९९२- ९९६)

-ज्ञ-

ज्ञानदा - ज्ञानगम्या च - ज्ञानज्ञेयस्वरूपिणी।
ज्ञानिपूज्या - ज्ञानिसेव्या - ज्ञानमोक्षप्रदायिनी।। (९९७- १००२)

-श्री-

श्रीकरी - श्रीनिधिश्चैव - श्रीचक्रार्चनतोषिणी।
श्रीतक्रराजनिलया - श्रीनिवासा च- श्रीप्रदा।। (१००३- १००८)

फलश्रुतिः

श्रीपादुकाविनिर्यातं स्तोत्रं नामसहस्रकम्।
गुर्वम्बानुग्रहाल्लब्धमन्नपूर्णानुकीर्तितम्।।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं तस्य मुक्तिं करस्थिताम्।

कुरुते कृपया मातान्नपूर्णाऽऽश्रितवत्सला।।
सर्वाश्च सम्पदश्चैवमायुःकीर्तिप्रजास्तथा।
सौभाग्यं चैव सायुज्यं लभते नात्र संशयः।।
यतोत्र ध्यानमूर्तिं च मंत्रमूर्तिं च मातृकाम्।
मातृकावर्णपूर्वीकां स्तुतिं सम्भाव्य साधकः।।
सप्तकोटिमहामंत्र मातृकासिद्धिमाप्नुयात्।
मातुः पादादिशीर्षान्त भावनालब्धदर्शनः।।
परां निर्वृतिमाप्नोति त्यक्तसर्वेषणः क्षणात्।
इह लोके शुभान्सर्वान् भुक्त्वान्ते देव्यनुग्रहात्।।
अन्नपूर्णामनुप्राप्य तस्यास्सायुज्य भाग्भवेत्।
सर्वे नः सुखिनस्सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।
दुर्जनस्सज्जनो भूयात्सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यः मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत्।।
सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वस्सद्बुद्धिमाप्नोतु सर्वस्सर्वत्र नन्दतु।।

- शुभं भूयात् -

****

श्री अन्नपूर्णा अष्टोत्तरसहस्रनामावलिः

श्रींबीज नवनामावलिः

ॐ श्रीमात्रे नमः।
ॐ श्रीमहादेव्यै नमः।
ॐ श्रीमत्यैनमः।

ॐ श्रीमहेश्वर्यैनमः।
ॐ श्रींबीजजपसन्तुष्टायै नमः।
ॐ श्रींबीजकृतसंस्थित्यै नमः।
ॐ श्रींबीजार्चितपादाब्जायै नमः।
ॐ श्रीबीजाम्बुजभृंगिकायै नमः।
ॐ श्रीबीजसंविदुत्फुल्लसहस्रारकृतालयायै नमः।(९)

मंत्रोद्धारगर्भितनामावलिः

ॐ ह्रींकार्यै नमः।
ॐ ह्रींस्वरूपायै नमः।
ॐ ह्रींबीजाङ्गणदीपिकायै नमः।
ॐ श्रीबीजार्चनसंतुष्टायै नमः।
ॐ श्रीधामायै नमः।
ॐ श्रीप्रदायिन्यै नमः।
ॐ क्लींबीजार्चितपादाब्जायै नमः।
ॐ क्लींम्बीजजपसंस्तुतायै नमः।
ॐ ॐकारपञ्जरशुक्यै नमः।
ॐ ॐङ्काराम्बुधिचन्द्रमायै नमः।
ॐ नमोऽन्तमन्त्रसन्तुष्टायै नमः। २०)
ॐ नमस्कृतवरप्रदायै नमः।
ॐ भगवत्यै नमः।
ॐ अन्नपूर्णेश्यै नमः।
ॐ भवसागरतारिण्यै नमः।
ॐ ममताहन्तानिहंत्र्यै नमः।
ॐ मात्रे नमः।
ॐ मोक्षप्रदायिन्यै नमः।
ॐ अभिलषितं प्रयच्छन्त्यै नमः।
ॐ अनघायै नमः।
ॐ अन्नार्तिनाशिन्यै नमः। (३०)
ॐ अन्नंबहुकुर्वन्त्यै नमः।
ॐ अन्नपूर्णायै नमः।
ॐ अमरार्चितायै नमः।
ॐ देहिदेहान्तरस्थायै नमः।
ॐ दिव्यज्ञानप्रदायिन्यै नमः।
ॐ स्वाहास्वधादिसंसेव्यायै नमः।
ॐ स्वस्वरूपप्रबोधिन्यै नमः।

पादुकादिमकुटान्त नामावलिः

ॐ पादुकीकृतश्रीपादुकार्चितांघ्रिसरोरुहायै नमः।
ॐ पादाधःस्थलसंशोभिशंखचक्रादिलाञ्छनायै नमः।
ॐ नमस्कृतजनाभीष्टवरप्रदपदाम्बुजायै नमः।(४०)
ॐ सुरासुरशिरोरत्नशाणीकृतनखाङ्गुल्यै नमः।
ॐ समुन्नतक्रमोल्लासिप्रपदद्वयशोभितायै नमः।
ॐ गूढगुल्फायै नमः।
ॐ पीनजङ्घायै नमः।
ॐ वामोर्व्यै नमः।
ॐ वरदायिन्यै नमः।
ॐ विशालजघनायै नमः।
ॐ अणुसूक्ष्मकटिस्थल्यै नमः।
ॐ मरालीमन्दगमनायै नमः।
ॐ शिञ्जान्नूपुरनिक्वणायै नमः। (५०)
ॐ समुदञ्चत्कटीशोभिक्वणत्किङ्किणिमेखलायै नमः।
ॐ अरुणारुणवर्णाभदुकूलपरिशोभितायै नमः।
ॐ वलित्रयीसमाश्लिष्टकृशोदरसुमध्यमायै नमः।
ॐ नाभीकुण्डसमुद्भूतरोमराजिविराजितायै नमः।
ॐ लसत्सङ्गीतसाहित्यसंभावितस्तनद्वय्यै नमः।
ॐ कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै नमः।
ॐ कनत्कनकदर्वीकाकलशान्वितहस्तकायै नमः।
ॐ दरहाससमुत्थानसमर्चितमहेश्वरायै नमः।
ॐ नित्यपायसभिक्षान्नसन्तर्पितासदाशिवायै नमः।
ॐ चराचरप्राणिकोटिक्षुद्बाधाविनिवारिण्यै नमः।
(६०)
ॐ नानारत्नमनोहारिहारशोभितकन्धरायै नमः।
ॐ मुखदर्पणवृन्ताभचुबुकश्रीविराजितायै नमः।

ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः।
ॐ कम्बुकण्ठ्यै नमः।
ॐ हासोल्लासिकपोलभुवे नमः।
ॐ दाडिमीबीजसन्दोहदन्तपङ्क्तिविराजितायै नमः।
ॐ जितचम्पकनासाभायै नमः।
ॐ नासाभरणभासुरायै नमः।
ॐ चन्द्रार्कानलनेत्रायै नमः।
ॐ चन्द्रिकाशीतलेक्षणायै नमः। (७०)
ॐ कबरीभरसंशोभिदिव्यपुष्पसुगन्धिकायै नमः।
ॐ द्वादशादित्यरत्नाढ्यामकुटाञ्चितमस्तकायै नमः।

<u>मातृकाक्षरनामावलिः</u>

-अ-

ॐ 'अथ'स्वरूपायै नमः।
ॐ अन्नदायै नमः।
ॐ अकाराद्यक्षरात्मिकायै नमः।
ॐ अन्नदायै नमः।
ॐ अन्नरूपायै नमः।
ॐ अन्नराशिकृतालयायै नमः।
ॐ अन्नार्थिकल्पलतिकायै नमः।
ॐ अन्नदानरतोत्सवायै नमः। (८०)
ॐ अमृतान्नप्रदात्र्यै नमः।
ॐ अन्नार्चितसदाशिवायै नमः।
ॐ अन्नराश्यैकनिलयायै नमः।
ॐ अन्नराशिप्रवर्धिन्यै नमः।
ॐ अन्नप्रसूत्यै नमः।
ॐ अन्नेश्यै नमः।
ॐ अन्नार्तिहरणोद्यतायै नमः।
ॐ अन्नार्चनसुसंप्रीतायै नमः।
ॐ अर्चितानन्दवर्धिन्यै नमः।
ॐ अन्नपूर्णेश्वर्यै नमः। (९०)
ॐ अन्नाहुतिसमर्चितायै नमः।
ॐ अव्यक्तायै नमः।
ॐ अनन्तमहिमायै नमः।
ॐ अन्नमाहात्म्यदर्शिन्यै नमः।
ॐ अदित्यै नमः।
ॐ आमरेश्यै नमः।
ॐ अमरेशार्चितांघ्रिकायै नमः।
ॐ अरूपायै नमः।
ॐ अनेकरूपायै नमः।
ॐ अप्रमेयायै नमः। (१००)
ॐ अखिलायै नमः।
ॐ अव्ययायै नमः।
ॐ अरुणायै नमः।
ॐ अव्याजकरुणाभरणायै नमः।
ॐ अरिविनाशिन्यै नमः।
ॐ अमलायै नमः।
ॐ अचञ्चलायै नमः।
ॐ अव्यक्तायै नमः।
ॐ अणुसूक्ष्मसुमध्यमायै नमः।
ॐ अद्रिजायै नमः। (११०)
ॐ अद्भुतचारित्रायै नमः।
ॐ अपर्णायै नमः।
ॐ अनुल्लंघ्यशासनायै नमः।
ॐ अभीष्टसिद्धिदात्र्यै नमः।
ॐ अणिमाद्यष्टसिद्धिदायै नमः।
ॐ अद्वैतविद्यासर्वस्वायै नमः।
ॐ अखिलागमपूजितायै नमः।
ॐ अहन्ताममताहन्त्र्यै नमः।
ॐ अद्वयानन्दवर्धिन्यै नमः।
ॐ अनन्तदायै नमः। (१२०)
ॐ अनन्ताक्ष्यै नमः।
ॐ अनन्तगुणशालिन्यै नमः।

ॐ अभवायै नमः।
ॐ अभयदायै नमः।
ॐ अभवानन्ददायिन्यै नमः।
ॐ अज्ञानान्धकारनाशिन्यै नमः।

- आ -

ॐ आशुसिद्धिप्रदायिन्यै नमः।
ॐ आकाररूपिण्यै नमः।
ॐ आद्यायै नमः।
ॐ आखण्डलसमर्चितायै नमः। (१३०)
ॐ आधाराम्बुरुहारूढायै नमः।
ॐ आधाराधेयवर्जितायै नमः।
ॐ आदिदेव्यै नमः।
ॐ आदिशक्त्यैनमः।
ॐ आत्मारामवरप्रदायै नमः।
ॐ आदिदेवाङ्घ्रिपीठस्थायै नमः।
ॐ आदिमध्यान्तवर्जितायै नमः।
ॐ आदित्यतेजायै नमः।
ॐ अम्बायै नमः।
ॐ आकाशादिजगत्प्रसूत्यै नमः। (१४०)
ॐ आदिमात्रे नमः।
ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः।
ॐ आधिव्याधिविनाशिन्यै नमः।
ॐ आब्रह्मकीटजनन्यै नमः।
ॐ आगमान्तप्रकीर्तितायै नमः।
ॐ आत्मानात्मविवेकातिशयज्ञानप्रदायिन्यै नमः।
ॐ आशापाशविनिर्मुक्तायै नमः।
ॐ आन्तरस्थायै नमः।
ॐ आशुसिद्धिदायै नमः।
ॐ आदितेयार्चितपदायै नमः। (१५०)
ॐ आनन्दवनवासिन्यै नमः।
ॐ आत्मारामायै नमः।
ॐ आत्मसंतुष्टायै नमः।
ॐ आत्मारामानुचिन्तितायै नमः।
ॐ आत्मज्ञायै नमः।
ॐ आत्मनिष्ठायै नमः।
ॐ आत्मज्ञानप्रदायिन्यै नमः।
ॐ आत्मसुवे नमः।
ॐ आत्मरूपायै नमः।
ॐ आन्तरस्थायै नमः। (१६०)
ॐ आशुतोषिण्यै नमः।
ॐ आबालगोपविदितायै नमः।
ॐ आपन्नजनपालिन्यै नमः।

-इ-

ॐ इकाररूपिण्यै नमः।
ॐ इकारस्तुत्यायै नमः।
ॐ इरम्मदप्रभायै नमः।
ॐ इष्टदायै नमः।
ॐ इन्द्रसंसेव्यायै नमः।
ॐ इन्द्राण्यर्चितपादुकायै नमः।
ॐ इहामुत्रार्थफलदायै नमः। (१७०)
ॐ इन्दिरारमणार्चितायै नमः।
ॐ इच्छाशक्तिस्वरूपायै नमः।
ॐ इन्दीवरसुलोचनायै नमः।
ॐ इतिहासपुराणानुकीर्तितायै नमः।
ॐ इन्दिरार्चितायै नमः।
ॐ इन्द्वग्निरविनेत्रायै नमः।
ॐ इन्दुबिम्बाननद्युतये नमः।
ॐ इलाधारायै नमः।
ॐ इन्द्रशक्त्यै नमः।
ॐ इन्द्रचापसमप्रभायै नमः। (१८०)
ॐ इज्यासमर्चितायै नमः।

ॐ इभगामिन्यै नमः।
ॐ इष्टदायिन्यै नमः।

-ई-

ॐ ईकाररूपायै नमः।
ॐ ईशान्यै नमः।
ॐ ईप्सितार्थफलप्रदायै नमः।
ॐ ईशप्रियायै नमः।
ॐ ईश्वर्यै नमः।
ॐ ईड्यायै नमः।
ॐ ईश्वरान्नप्रदायिन्यै नमः। (१९०)
ॐ ईश्वरीशक्त्यै नमः।
ॐ ईकारशुक्तिमौक्तिकरूपिण्यै नमः।
ॐ ईकारकल्पवृक्षश्रियै नमः।
ॐ ईम्बीजामृतवर्षिण्यै नमः।
ॐ ईंचतुष्टयवाच्यश्रियैनमः।
ॐ ईम्बीजार्चितपादुकायै नमः।
ॐ ईश्वरोग्रतपस्सिद्ध्यै नमः।
ॐ ईश्वरप्राणवल्लभायै नमः।
ॐ ईशायै नमः।
ॐ ईशानसम्पूज्यायै नमः। (२००)
ॐ ईश्वरार्धाङ्गराजितायै नमः।
ॐ ईशानबद्धमाङ्गल्यसूत्रराजितकन्धरायै नमः।

-उ-

ॐ उत्तमान्नप्रदात्र्यैनमः।
ॐ उद्धूताखिलकल्मषायै नमः।
ॐ उत्तारिताश्रितजनायै नमः।
ॐ उत्तुङ्गस्तनमण्डलायै नमः।
ॐ उमादेव्यै नमः।
ॐ उज्ज्वलाभायै नमः।
ॐ उत्फुल्लाब्जदलेक्षणायै नमः।
ॐ उद्यद्भानुसहस्राभायै नमः। (२१०)
ॐ उत्तरोत्तरवृद्धिदायै नमः।
ॐ उत्सङ्गधृतविघ्नेशायै नमः।
ॐ उडुराजशिरोमणये नमः।
ॐ उत्सङ्गासीनषड्वक्त्रायै नमः।
ॐ उत्तराशाद्रिवासिन्यै नमः।

-ऊ-

ॐ ऊकाररूपिण्यै नमः।
ॐ ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऊहापोहविवर्जितायै नमः।
ॐ ऊर्जस्वत्यै नमः।
ॐ ऊर्ध्वगामिन्यै नमः। (२२०)
ॐ ऊर्ध्वरेतानुचिन्तितायै नमः।

-ऋ-

ॐ ऋकाराच्यायै नमः।
ॐ ऋषिस्तुत्यायै नमः।
ॐ ऋषिमण्डलसेवितायै नमः।
ॐ ऋगादिवेदसंस्तुत्यायै नमः।
ॐ ऋषिधर्मप्रवर्धिन्यै नमः।
ॐ ऋतुकर्त्र्यै नमः।
ॐ ऋक्षसेव्यायै नमः।
ॐ ऋक्षाधिपकिरीटिन्यै नमः।
ॐ ऋग्यजुस्साममंत्रार्च्यायै नमः। (२३०)
ॐ ऋताम्भरायै नमः।
ॐ ऋतप्रीतायै नमः।
ॐ ऋणत्रयविमोचन्यै नमः।
ॐ ऋजुमार्गप्रवर्तिन्यै नमः।
ॐ ऋगादिवेदजनन्यै नमः।
ॐ ऋभ्वर्चितपदाम्बुजायै नमः।

ॐ एधमानश्रीप्रदायै नमः।
ॐ एकनायिकायै नमः।

-ऐ-

ॐ ऐंकार्यै नमः।
ॐ ऐन्द्रशक्त्यै नमः। (२७०)
ॐ ऐरम्मदसमप्रभायै नमः।
ॐ ऐंकारमन्त्रमकुटायै नमः।
ॐ ऐंबीजध्यानगोचरायै नमः।
ॐ ऐंह्रींश्रींक्लींबीजजप्यायै नमः।
ॐ एंबीजार्चनतोषिण्यै नमः।
ॐ ऐंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ऐंतन्यै नमः।
ॐ ऐंस्वरूपिण्यै नमः।
ॐ ऐन्द्रीमुखसमाराध्यायै नमः।
ॐ ऐश्वर्यबलदायिन्यै नमः। (२८०)
ॐ ऐंबीजजपनिष्णातदत्तविद्यामहाधनायै नमः।

-ओ-

ॐ ॐ ओकाररूपिण्यै नमः।
ॐ ॐकार्यै नमः।
ॐ ॐतत्सदितिसंस्तुतायै नमः।
ॐ ॐकाररत्नमञ्जूषायै नमः।
ॐ ॐकारमणिदीपिकायै नमः।
ॐ ॐकारमन्त्रनिलयायै नमः।
ॐ ॐकारब्रह्मरूपिण्यै नमः।
ॐ ॐकारवीणानादश्रियै नमः।
ॐ ॐकाराम्बुजसौरभायै नमः। (२९०)
ॐ ॐकारनन्दनारामबर्हिण्यै नमः।
ॐ ओङ्कारवासिन्यै नमः।
ॐकारश्रुतिविश्रान्त्यै नमः।
ॐ ॐकारब्रह्ममानसायै नमः।
ॐ ॐकारदीधित्यै नमः।
ॐ ओङ्काराम्बुधिकौस्तुभायै नमः।
ॐ ॐकारपद्मसद्मश्रियै नमः।
ॐ ॐकारारुणमण्डलायै नमः।
ॐ ॐकारार्चनसंतुष्टायै नमः।
ॐ ओषधीशकिरीटिन्यै नमः। (३००)
ॐ ॐकारनादसंप्रीतायै नमः।
ॐ ॐकाराद्भुतविग्रहायै नमः।

-औ-

ॐ औकाररूपिण्यै नमः।
ॐ औकारन्याससंशोभिमातृकायै नमः।
ॐ औकारमनुसंस्तुत्यायै नमः।
ॐ औंबीजजपतोषिण्यै नमः।
ॐ औदुम्बरस्थायै नमः।
ॐ औम्बीजन्यस्तयन्त्रसमर्चितायै नमः।
ॐ औपनिषदर्थसंवेद्यायै नमः।
ॐ औचित्यज्ञानदायिन्यै नमः। (३१०)

-अं-

ॐ अम्बकत्रयसंयुक्तायै नमः।
ॐ आम्बिकेयसमर्चितायै नमः।
ॐ अम्बिकानामसंस्तुत्यायै नमः।
ॐ अम्बरौकसपूजितायै नमः।
ॐ अङ्कसंस्थितविघ्नेशायै नमः।
ॐ अङ्कारूढगुहप्रियायै नमः।
ॐ अम्बुजासनसंपूज्यायै नमः।
ॐ अम्बुजातदळेक्षणायै नमः।

-अः-

ॐ अःकाररूपिण्यै नमः।
ॐ अःकारपीठराजाधिवासिन्यै नमः। (३२०)
ॐ अःकारमातृकायै नमः।
ॐ अःकारवरवर्णिन्यै नमः।

-क-

ॐ कल्याणगुणसंपन्नायै नमः।
ॐ काल्यै नमः।
ॐ कालस्वरूपिण्यै नमः।
ॐ कल्याणानन्दरूपायै नमः।
ॐ कल्याणवरदायिन्यै नमः।
ॐ कनत्कनकदर्वीकायै नमः।
ॐ कलशाञ्चत्कराम्बुजायै नमः।
ॐ काशिकेशसमाराध्यायै नमः। (३३०)
ॐ काशीपुरप्रपालिन्यै नमः।
ॐ काशीपुराधिराज्ञ्यै नमः।
ॐ काशीवासिसमर्चितायै नमः।
ॐ काशिकाकल्पलतिकायै नमः।
ॐ काशीपुरप्रदीपिन्यै नमः।
ॐ काशीवाससुसन्तुष्टायै नमः।
ॐ काशीवास्यन्नदायिन्यै नमः।
ॐ काशीकेदारखण्डेश्यै नमः।
ॐ केदारेश्वरनन्दिन्यै नमः।
ॐ कामितान्नप्रदायै नमः। (३४०)
ॐ कल्पवृक्षाधिकप्रदायै नमः।
ॐ कामाक्ष्यै नमः।
ॐ कामदायै नमः।
ॐ काम्यायै नमः।
ॐ काम्यवरप्रदायै नमः।
ॐ कामाकर्षणशक्त्यै नमः।
ॐ कामितार्थप्रदायिन्यै नमः।
ॐ कपर्दिन्यै नमः।
ॐ कलासंस्थायै नमः।
ॐ कपालिकुलपालिन्यै नमः। (३५०)
ॐ केशवार्चितपादाब्जायै नमः।
ॐ कारुण्यामृतवर्षिण्यै नमः।
ॐ काव्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञायै नमः।
ॐ ऋंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ऋक्षाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै नमः। (३४०)

-ॠ-

ॐ ॠकाररूपायै नमः।
ॐ ॠंबीजन्यासशोभितयन्त्रकायै नमः।
ॐ ॠंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ॠंबीजन्यस्तमातृकायै नमः।

-ऌ-

ॐ ऌकाररूपायै नमः।
ॐ ऌंबीजन्यासशोभितयन्त्रकायै नमः।
ॐ ऌंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ऌंबीजन्यस्तमातृकायै नमः।

-ॡ-

ॐ ॡकाररूपायै नमः।
ॐ ॡकारश्रुतिकीर्तितवैभवायै नमः।
ॐ ॡंकारमन्त्ररूपायै नमः।
ॐ ॡंकारार्चितपादुकायै नमः।

-ए-

ॐ एकाररूपिण्यै नमः।
ॐ एकार्यै नमः। (३५०)
ॐ एकभक्तिसमर्चितायै नमः।
ॐ एकायै नमः।
ॐ एकवीरायै नमः।
ॐ एकानेकप्रदायिन्यै नमः।
ॐ एधमानप्रभायै नमः।
ॐ एधिताखिलभक्तकायै नमः।
ॐ एतत्तदित्यनिर्देश्यायै नमः।
ॐ एकात्मने नमः।
ॐ एणलोचनायै नमः।
ॐ एकदन्तार्चितपदायै नमः। (३६०)
ॐ एनःकूटविनाशिन्यै नमः।
ॐ एकातपत्रसाम्राज्ञ्यै नमः।
ॐ एषणत्रयभञ्जिन्यै नमः।
ॐ एजिताखिललोकायै नमः।
ॐ एणाङ्कधृतमौलिन्यै नमः।
ॐ एधयित्र्यै नमः।

ॐ काव्यालापविनोदिन्यै नमः।
ॐ कलात्मिकायै नमः।
ॐ कलानाधायै नमः।
ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः।
ॐ कादिविद्यायै नमः।
ॐ कामसेव्यायै नमः। (३६०)
ॐ कामेश्वरसमर्चितायै नमः।
ॐ कामेश्वराङ्कसंस्थायै नमः।
ॐ कामेश्वरप्रियाङ्गनायै नमः।
ॐ कात्यायन्यै नमः।
ॐ कलारूपायै नमः।
ॐ कामार्चितपदाम्बुजायै नमः।
ॐ कामेश्वरप्राणनाथायै नमः।
ॐ कामेश्वरवरप्रदायै नमः।
ॐ करुणायै नमः।
ॐ काम्यप्रदायै नमः।
ॐ करुणावरुणालयायै नमः। (३७०)
ॐ कनत्कनकताटंकायै नमः।
ॐ क्वणन्नूपुरगामिन्यै नमः।
ॐ क्रियाशक्त्यैनमः।
ॐ कामरूपायै नमः।
ॐ कर्मबन्धविमोचन्यै नमः।
ॐ कालकूटप्रशमन्यै नमः।
ॐ कल्याणगुणशालिन्यै नमः।
ॐ कमलायै नमः।
ॐ कमलावासायै नमः।
ॐ कार्यकारणवर्जितायै नमः। (३८०)
ॐ कोटिकन्दर्पलावण्यायै नमः।
ॐ कोटिसूर्यसमप्रभायै नमः।
ॐ कदम्बकुसुमप्रीतायै नमः।
ॐ कदम्बवनवाशिन्यै नमः।
ॐ कर्मज्ञायै नमः।

-ऋ-

ॐ कर्मफलदायै नमः।
ॐ कर्मचक्रप्रवर्तिन्यै नमः।
ॐ कुमार्यै नमः।
ॐ कौमुदीशुभ्रायै नमः।

ॐ कनकाचलवासिन्यै नमः। (३९०)
ॐ कुमार्यर्चनसन्तुष्टायै नमः।
ॐ कौमारीशक्तिरूपिण्यै नमः।
ॐ कुक्षिस्थाखिलब्रह्माण्डायै नमः।
ॐ कुण्डलीशक्तिरूपिण्यै नमः।

-ख-

ॐ खकाररूपायै नमः।
ॐ खड्गेशयै नमः।
ॐ खड्गमालाभिसंस्तुतायै नमः।
ॐ खण्डपरशुप्रियायै नमः।
ॐ खण्डेन्दुधरवल्लभायै नमः।
ॐ खण्डिताशेषपापौघायै नमः। (४००)
ॐ खड्गहस्तायै नमः।
ॐ खेचर्यै नमः।
ॐ खट्वाङ्गीकृतविष्वादिपंञ्चब्रह्मासनस्थितायै नमः।

-ग-

ॐ गकाररूपायै नमः।
ॐ गंबीजायै नमः।
ॐ गंबीजार्चासुतोषितायै नमः।

ॐ गणेशादिगणाराध्यायै नमः।
ॐ गणेशार्चाऽशुतोषितायै नमः।
ॐ गुहाम्बायै नमः।
ॐ गुह्यकाराध्यायै नमः। (४१०)
ॐ गुरुमूर्त्यै नमः।
ॐ गुणप्रियायै नमः।

ॐ गुरुसंशयभेत्र्यै नमः।
ॐ गुरुगम्यायै नमः।
ॐ गुहार्चितायै नमः।
ॐ गर्वपर्वतदम्भोल्यै नमः।
ॐ गजवाजिरथप्रदायै नमः।
ॐ गगनाढ्यायै नमः।
ॐ गकाराच्यायै नमः।
ॐ गजमालाविभूषितायै नमः। (४२०)
ॐ गजवाहायै नमः।
ॐ गगनगायै नमः।
ॐ गणाम्बायै नमः।
ॐ गणपूजितायै नमः।
ॐ गजलक्ष्म्यै नमः।
ॐ गर्दापाण्यैनमः।
ॐगन्धर्वगणसंस्तुतायै नमः।
ॐ गन्धानुलिप्तसर्वाङ्ग्यै नमः।
ॐ गन्धसिन्धुरगामिन्यै नमः।
ॐ गङ्गार्चितायै नमः। (४३०)
ॐ गम्भीरायै नमः।
ॐ गङ्गाधरकुटुम्बिन्यै नमः।

-घ-

ॐ घकाररूपिण्यै नमः।
ॐ घकाराच्यायै नमः।
ॐ घनस्तन्यै नमः।
ॐ घटसम्भवकान्ताच्यायै नमः।
ॐ घटसम्भवसंस्तुतायै नमः।
ॐ घनसारानुलिप्ताङ्ग्यै नमः।
ॐ घनसारशुचिस्मितायै नमः।
ॐ घटीयंत्रवदविश्रांतभवचक्रप्रवर्तिन्यै नमः।
(४४०)
ॐ घोराऽघोरस्वरूपायै नमः।
ॐ घोरपातकनाशिन्यै नमः।
ॐ घनरूपायै नमः।
ॐ घनाच्यायै नमः।
ॐ घृणिसंपूजिताघ्रिकायै नमः।

-ङ-

ॐ ङकाररूपायै नमः।
ॐ ङंबीजन्यस्तयंत्रविराजितायै नमः।
ॐ ङबीजजपसन्तुष्टायै नमः।
ॐ ङंबीजार्चितपादुकायै नमः। (४५०)

-च-

ॐ चकाररूपा नमः।
ॐ चकारवर्णराजितमातृकायै नमः।
ॐ चन्द्रिकाशीतलस्वान्तायै नमः।
ॐ चरणामृतवर्षिण्यै नमः।
ॐ चराचरान्नदात्र्यै नमः।
ॐ चराचरजगत्प्रसवेनमः।
ॐ चक्रमन्दिरमध्यस्थायै नमः।
ॐ चक्रेशीगणसेवितायै नमः।
ॐ चक्रेश्वर्यै नमः।
ॐ चक्रसंस्थायै नमः। (४६०)
ॐ चक्राच्यायै नमः।
ॐ चकितेक्षणायै नमः।
ॐ चलापाङ्ग्यै नमः।
ॐ चञ्चलायै नमः।
ॐ चक्रराजनिकेतनायै नमः।
ॐ चतुरायै नमः।
ॐ चतुरालापायै नमः।
ॐ चतुर्मुखसमर्चितायै नमः।
ॐ चण्डीश्वरसमाराध्यौ नमः।
ॐ चाम्पेयगौरद्युत्यै नमः। (४७०)

ॐ चम्पकाशोकपुन्नागपुष्पार्चितपदाम्बुजायै नमः।
ॐ चन्दनागरुकस्तूरीचर्चितश्रीतनूलतायै नमः।
ॐ चन्द्रसूर्याग्निनेत्रायै नमः।
ॐ चन्द्रमण्डलमध्यगायै नमः।
ॐ चन्द्रप्रभायै नमः।
ॐ चन्द्रविद्यायै नमः।
ॐ चन्द्रांचितकपर्दिन्यै नमः।
ॐ चकोराक्ष्यै नमः।
ॐ चञ्चलाभायै नमः।
ॐ चञ्चलापाङ्गवीक्षणायै नमः। (४८०)
ॐ चतुर्मुखसमाराध्यायै नमः।
ॐ चक्रषट्कोपरिस्थितायै नमः।
ॐ चकिताक्ष्यै नमः।
ॐ चारुहासायै नमः।
ॐ चारुचन्द्रकलाधरायै नमः।
ॐ चन्दनागरुकस्तूरीकुंकुमार्चितपादुकायै नमः।

-छ-

ॐ छकाररूपायै नमः।
ॐ छन्दोगायै नमः।
ॐ छन्दश्शास्त्रप्रकीर्तितायै नमः।
ॐ छन्दस्स्वरूपिण्यै नमः। (४९०)
ॐ छन्दोमन्त्राधिदेवतायै नमः।
ॐ छलदूरायै नमः।
ॐ छद्मवेषायै नमः।
ॐ छत्रचामरलाञ्छनायै नमः।
ॐ छत्रसंसेव्यलक्ष्मीकायै नमः।
ॐ छन्दोगणसुकीर्तितायै नमः।

-ज-

ॐ जगन्मात्रे नमः।
ॐ जगद्धात्र्यै नमः।
ॐ जगदान्दकारिण्यै नमः।
ॐ झल्लरीवाद्यसंतुष्टायै नमः।
ॐ झम्पतालप्रकीर्तितायै नमः। (५३०)
ॐ झणंझणत्किङ्किणीककटिसंशोभिमेखलायै नमः।

-ञ-

ॐ ञकाररूपिणयै नमः।
ॐ ञंबीजन्यस्तमातृकायै नमः।
ॐ ञंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ञंबीजार्चितपादुकायै नमः।

-ट-

ॐ टकाररूपिण्यै नमः।
ॐ टकाराच्यायै नमः।
ॐ टमातृकायै नमः।
ॐ टङ्कारजितदैत्यश्यै नमः।
ॐ टङ्काराधावितासुरायै नमः। (५४०)

-ठ-

ॐ ठकाररूपायै नमः।
ॐ ठकारन्यस्तयन्त्राधिदेवतायै नमः।
ॐ ठंबीजार्चनसंतुष्टायै नमः।
ॐ ठाभिधायै नमः।
ॐ ठक्कुरेश्वर्यै नमः।

-ड-

ॐ डकाररूपिण्यै नमः।
ॐ डंबीजायै नमः।
ॐ डामरार्चितायै नमः।
ॐ डमरुहस्तायै नमः।
ॐ डाकिनीड्यायै नमः। (५५०)
ॐ डिण्डिमध्वनितोषिण्यै नमः।
ॐ डामर्यनादसंजातमातृकाक्षररूपिण्यै नमः।
ॐ डमरुकध्वनिसंतुष्टायै नमः।
ॐ डोलार्चापरितोषितायै नमः।

-ढ-

ॐ जगत्कारणरूपायै नमः। (५००)
ॐ जगज्ज्ञालैकसाक्षिण्यै नमः।
ॐ जनन्यै नमः।
ॐ जगद्वन्द्यायै नमः।
ॐ जनयित्र्यै नमः।
ॐ जनावनायै नमः।
ॐ जम्भारिमुख्यसंसेव्यायै नमः।
ॐ जनविश्रान्तिदायिन्यै नमः।
ॐ जयप्रदायै नमः।
ॐ जगज्जेत्र्यै नमः।
ॐ जगद्भद्रत्र्यैनमः। (५१०)
ॐ जगन्मय्यै नमः।
ॐ जयापजयहेतवे नमः।
ॐ जयश्रियै नमः।
ॐ र्जगदीश्वर्यै नमः।
ॐ जाह्नवीतीरसंस्थायै नमः।
ॐ जलदुर्गायै नमः।
ॐ जयेन्दिरायै नमः।
ॐ जाह्नवीजलसंतर्प्यायै नमः।
ॐ जह्नुकन्यासमर्चितायै नमः।
ॐ जयादिशक्तिसंसेव्यायै नमः।
(५२०)
ॐ जयाविजयार्चितांघ्रिकायै नमः।
ॐ जीवाश्रितायै नमः।
ॐ जीवदात्र्यै नमः।
ॐ जीवन्मुक्तिप्रदायिन्यै नमः।

-झ-

ॐ झकाररूपिण्यै नमः।
ॐ झकारन्यस्तमातृकायै नमः।
ॐ झषकेतनसंसेव्यायै नमः।
ॐ झणन्नूपुरनिक्वणायै नमः।
ॐ ढकाररूपायै नमः।
ॐ ढकारपीठराजाधिवासिन्यै नमः।
ॐ ढक्कावादनसंतुष्टायै नमः।
ॐ ढुण्ढिगणपत्यर्चितायै नमः।
ॐ ढुलिपृष्ठविजेतृस्वप्रपदाञ्चितनूपुरायै नमः।
ॐ ढुण्ढिगणेशजनन्यै नमः। (५६०)
ॐ ढुण्ढ्यर्चितपदाम्बुजायै नमः।

-ण-

ॐ णकाररूपायै नमः।
ॐ णकारन्यस्तयंत्रसमर्चितायै नमः।
ॐ णंबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ णंबीजध्यानगोचरायै नमः।

-त-

ॐ तकाररूपायै नमः।
ॐ तंत्रेश्यै नमः।
ॐ तंत्रमार्गप्रपूजितायै नमः।
ॐ तंत्रार्चनसमाराध्यायै नमः।
ॐ तंत्रकीर्तितवैभवायै नमः। (५७०)
ॐ तंत्रज्ञायै नमः।
ॐ तंत्रसंपूज्यायै नमः।
ॐ तंत्रवित्परिषेवितायै नमः।
ॐ तत्सदित्यर्चितायै नमः।
ॐ तत्सत्पदविचिन्तितायै नमः।
ॐ तन्व्यै नमः।
ॐ तत्पदलक्ष्यार्थायै नमः।
ॐ तरुण्यै नमः।
ॐ तारिण्यै नमः।
ॐ तर्यै नमः। (५८०)
ॐ तमःपारायै नमः।
ॐ तमोदूरायै नमः।

ॐ तमोहंत्र्यै नमः।
ॐ तटित्प्रभायै नमः।
ॐ तपस्विजनसंपूज्यायै नमः।
ॐ तंत्राचर्य्यायै नमः।
ॐ तंत्रकीर्तितायै नमः।
ॐ तदेतदित्यनिर्देश्यायै नमः।
ॐ तत्पदार्थैकलक्षितायै नमः।
ॐ तत्त्वज्ञानप्रदात्र्यै नमः। (५९०)
ॐ तत्त्वचिन्तनगोचरायै नमः।
ॐ तत्त्वस्वरूपायै नमः।
ॐ तत्त्वज्ञायै नमः।
ॐ तत्त्वज्ञानसुलक्षितायै नमः।
ॐ तत्त्वात्मिकायै नमः।
ॐ तत्त्वमय्यै नमः।
ॐ तत्त्वबोध्यायै नमः।
ॐ तदात्मिकायै नमः।
ॐ तत्त्वप्रसूत्यै नमः।
ॐ तत्त्वसाक्ष्यै नमः। (६००)
ॐ तत्त्वात्मने नमः।
ॐ तत्त्वबोधिन्यै नमः।
ॐ तपश्शक्त्यै नमः।
ॐ तपस्सिद्ध्यै नमः।
ॐ तपःफलप्रदायिन्यै नमः।
ॐ तपस्साक्षिण्यै नमः।
ॐ तपस्सेव्यायै नमः।
ॐ तपस्विजनगोचरायै नमः।
ॐ त्रयीमूर्त्यै नमः।
ॐ त्रयीवेद्यायै नमः। (६१०)
ॐ त्रयीगम्यायै नमः।
ॐ त्रयीमय्यै नमः।
ॐ त्रयीलक्ष्यायै नमः।
ॐ त्रयीनुत्यायै नमः।
ॐ त्रय्यर्चितपदाम्बुजायै नमः।
ॐ त्रिपुरायै नमः।
ॐ त्रिगुणातीतायै नमः।
ॐ त्रिपुरारिमनोहर्यै नमः।
ॐ त्रिमूर्त्यर्चितपादाब्जायै नमः।
ॐ त्रिपुराम्बायै नमः। (६२०)
ॐ त्रिकोणगायै नमः।

- थ -

ॐ थकाररूपायै नमः।
ॐ थुड्डह्नये नमः।
ॐ थंबीजांचितमातृकायै नमः।
ॐ थकारन्याससंतुष्टायै नमः।
ॐ थालयायै नमः।
ॐ थाभिधान्वितायै नमः।

-द-

ॐ दकाररूपायै नमः।
ॐ दकारन्यस्तयंत्रसुपूजितायै नमः।
ॐ दर्वीकरवराढ्यायै नमः। (६३०)
ॐ दर्वीदत्तामृतान्नदायै नमः।
ॐ द्यूतनिर्जितविश्वेश्यै नमः।
ॐ दयादृष्ट्यै नमः।
ॐ दयामय्यै नमः।
ॐ दण्डिताखिलदैत्यायै नमः।
ॐ दैत्यदर्पविनाशिन्यै नमः।
ॐ दनुजाचलदम्भोल्यै नमः।
ॐ दम्भोलिधरसेवितायै नमः।
ॐ दन्तावलगत्यै नमः।
ॐ दन्तिमात्रे नमः। (६४०)
ॐ दन्तिसमर्चितायै नमः।
ॐ दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै नमः।

ॐ दर्वीकायै नमः।
ॐ दर्पनाशिन्यै नमः।
ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः।
ॐ दरस्मेरनुखाम्बुजायै नमः।
ॐ दरहासायै नमः।
ॐ दानशौण्डायै नमः।
ॐ दनुजारये नमः।
ॐ दयानिधये नमः। (६५०)
ॐ दयासान्द्रायै नमः।
ॐ दयामूर्त्यै नमः।
ॐ दयनीयजनावनायै नमः।
ॐ दयाशीलायै नमः।
ॐ दयापूर्णायै नमः।
ॐ दयामृतरसाम्बुधये नमः।
ॐ दशविद्यास्वरूपायै नमः।
ॐ दशदिग्देवतार्चितायै नमः।
ॐ दीर्घाक्ष्यै नमः।
ॐ दैन्यशमन्यै नमः। (६६०)
ॐ दीनावनपरायणायै नमः।
ॐ दहरान्तर्विहार्यै नमः।
ॐ दण्डभृद्भयनाशिन्यै नमः।

-ध-

ॐ धकाररूपायै नमः।
ॐ धनदायै नमः।
ॐ धनधान्यसमृद्धिदायै नमः।
ॐ धर्मभुवे नमः।
ॐ धर्मनिलयायै नमः।
ॐ धर्मिण्यै नमः।
ॐ धर्मवर्धिन्यै नमः। (६७०)
ॐ धर्मस्वरूपायै नमः।
ॐ धर्मेशयै नमः।
ॐ धर्माचारप्रचोदिन्यै नमः।
ॐ धर्मज्ञायै नमः।
ॐ धर्मनिरतायै नमः।
ॐ धर्मात्मने नमः।
ॐ धार्मिकप्रियायै नमः।
ॐ धर्मसूक्ष्मायै नमः।
ॐ धर्मनिष्ठायै नमः।
ॐ धर्माधर्मविवर्जितायै नमः। (६८०)
ॐ धर्माध्यक्षायै नमः।
ॐ धर्मकर्त्र्यै नमः।
ॐ धर्माधर्मद्वयातिगायै नमः।
ॐ धर्मिष्ठायै नमः।
ॐ धर्मतत्त्वायै नमः।
ॐ धर्माधर्मप्रवर्तिन्यै नमः।
ॐ धर्मप्रियायै नमः।
ॐ धर्मतेजायै नमः।
ॐ धर्मरक्षणतत्परायै नमः।
ॐ धनप्रदायै नमः। (६९०)
ॐ धनार्च्यायै नमः।
ॐ धनेश्यै नमः।
ॐ धनपूजितायै नमः।
ॐ धनदार्च्यायै नमः।
ॐ धनदमुख्यसेव्यायै नमः।
ॐ धनविवर्धिनीयै नमः।
ॐ धरण्यै नमः।
ॐ धरणीभारधात्र्यै नमः।
ॐ धातृसमर्चितायै नमः।
ॐ धीरपूज्यायै नमः। (७००)
ॐ धीरसेव्यायै नमः।
ॐ धीरधियै नमः।
ॐ धीप्रदायिन्यै नमः।

ॐ धीरूपायै नमः।
ॐ धीरवन्द्यायै नमः।
ॐ धीनिधये नमः।
ॐ धिषणाप्रदायै नमः।
ॐ ध्यातृवैराग्यदात्र्यै नमः।
ॐ ध्याननिर्धूतकिल्बिषायै नमः।

-न-

ॐ नकाररूपायै नमः। (७१०)
ॐ नादेश्यै नमः।
ॐ नारदादिमुनिस्तुतायै नमः।
ॐ नारायण्यै नमः।
ॐ नादरूपायै नमः।
ॐ नारायणसमर्चितायै नमः।
ॐ नानाविधान्नदात्र्यै नमः।
ॐनामपारायणप्रियायै नमः।
ॐ निरूपितान्नमाहात्म्यायै नमः।
ॐ निगमागमसंस्तुतायै नमः।
ॐ नित्यारूपायै नमः। (७२०)
ॐ नित्यार्च्यायै नमः।
ॐ नित्यामण्डलसेवितायै नमः।
ॐ नित्यायै नमः।
ॐ अनित्यायै नमः।
ॐ नित्यपूज्यायै नमः।
ॐ नित्याषोडशिरूपिण्यै नमः।
ॐ नित्यान्नदाननिरतायै नमः।
ॐ नित्यान्नदवरप्रदायै नमः।
ॐ नमस्कृतजनाभीष्टवरदानसमुत्सुकायै नमः।
ॐ नाकाधिराजसंसेव्यायै नमः। (७३०)
ॐ नाकिवन्द्यायै नमः।
ॐ नटेश्वर्यै नमः।
ॐ नगजातायै नमः।
ॐ नगाराध्यायै नमः।
ॐ नगवंशाब्धिचन्द्रमसे नमः।
ॐ नादसेव्यायै नमः।
ॐ नादतुष्टायै नमः।
ॐ नादबिन्दुकलाश्रयायै नमः।
ॐ नादलोलायै नमः।
ॐ नादपूर्णायै नमः।
ॐ नादार्च्यायै नमः। (७४०)
ॐ नादरूपिण्यै नमः।
ॐ नन्दिविद्यायै नमः।
ॐ नन्दिवन्द्यायै नमः।
ॐ नन्दिवाहनसुन्दर्यै नमः।
ॐ नन्दिताखिलभक्तौघायै नमः।
ॐ नन्दिकेश्वरसंस्तुतायै नमः।
ॐ नवविद्रुमबिम्बोष्ठ्यै नमः।
ॐ नवादित्यसमप्रभायै नमः।
ॐ नवसंख्यासमाराध्यायै नमः।
ॐ नवसंख्यानुभावितायै नमः।
(७५०)
ॐ नवरात्रव्रताराध्यायै नमः।
ॐ नवदुर्गापरिवृतायै नमः।
ॐ नवावरणसंपूज्यायै नमः।
ॐ नवचक्रेश्वरीश्वर्यै नमः।

-प-

ॐ पकाररूपायै नमः।
ॐ पद्माक्ष्यै नमः।
ॐ पद्मनाभसहोदर्यै नमः।
ॐ पद्मालयार्चितपदायै नमः।
ॐ पद्मपत्रनिभेक्षणायै नमः।
ॐ परमान्नप्रदात्र्यै नमः। (७६०)

ॐ रमानन्ददायिन्यै नमः।
ॐ परमायै नमः।
ॐ परमेश्यै नमः।
ॐ परदायै नमः।
ॐ परमेश्वर्यै नमः।
ॐ पञ्चम्यै नमः।
ॐ पञ्चभूतेश्यै नमः।
ॐ पञ्चीकृतप्रपञ्चिकायै नमः।
ॐ पञ्चोपचारसंपूज्यायै नमः।
ॐ पञ्चाशद्वर्णरूपिण्यै नमः। (७७०)
ॐ परंज्योतिषे नमः।
ॐ परंधाम्ने नमः।
ॐ परमात्मने नमः।
ॐ परात्परायै नमः।
ॐ पापप्रशमनी नमः।
ॐ पापारण्यदवानलायै नमः।

-फ-

ॐ फकाररूपायै नमः।
ॐ फस्तुत्यायै नमः।
ॐ फणिभूषणनन्दिन्यै नमः।
ॐ फालाक्ष्यै नमः। (७८०)
ॐ फालचन्द्रायै नमः।
ॐ फूत्कारोत्थितकुण्डल्यै नमः।
ॐ फुल्लकल्हारसंस्थायै नमः।
ॐ फुल्लेन्दीवरलोचनायै नमः।
ॐ फणिभूषणसंश्लिष्टवामाङ्ग्यै नमः।
ॐ फलदायिन्यै नमः।

-ब-

ॐ बह्वन्नदायै नमः।
ॐ बहुदायै नमः।
ॐ बहुमान्यायै नमः।
ॐ बहुस्तुतायै नमः। (७९०)
ॐ बहुरूपायै नमः।
ॐ बलाढ्यायै नमः।
ॐ बह्वीड्यायै नमः।
ॐ बहुमानदायै नमः।
ॐ बलारिप्रमुखार्च्यायै नमः।
ॐ बलभद्रसहोदर्यै नमः।
ॐ बलाबलस्वरूपायै नमः।
ॐ बलदायै नमः।
ॐ बलिसेवितायै नमः।
ॐ बलायै नमः। (८००)
ॐ बलातिगायै नमः।
ॐ बलवीर्यमदोद्धतायै नमः।
ॐ बालाम्बिकायै नमः।
ॐ बाणहस्तायै नमः।
ॐ बगळायै नमः।
ॐ बन्धुरालकायै नमः।
ॐ ब्रह्मविद्यायै नमः।
ॐ ब्रह्मरूपायै नमः।
ॐ ब्रह्मार्चितपदाम्बुजायै नमः।
ॐ ब्रह्माण्यै नमः। (८१०)
ॐ ब्राह्मणप्रीतायै नमः।
ॐ ब्रह्मज्ञानप्रदायिन्यै नमः।

-भ-

ॐ भक्तिप्रियायै नमः।
ॐ भक्तिगम्यायै नमः।
ॐ भक्तिमार्गप्रचोदिन्यै नमः।
ॐ भक्तरक्षैकदीक्षायै नमः।
ॐ भक्ताभीष्टप्रदायिन्यै नमः।
ॐ भद्रदायै नमः।
ॐ भक्तिदायै नमः।

ॐ भवान्यै नमः। (८२०)
ॐ भवतारिण्यै नमः।
ॐ भद्रमूर्त्यै नमः।
ॐ भद्रकाल्यै नमः।
ॐ भक्तिवश्यायै नमः।
ॐ भयापहायै नमः।
ॐ भण्डिन्यै नमः।
ॐ भञ्जिन्यै नमः।
ॐ भण्डदैत्यविमर्दिन्यै नमः।
ॐ भाविन्यै नमः।
ॐ भावनागम्यायै नमः।
(८३०)
ॐ भवबन्धविमोचन्यै नमः।
ॐ भोक्त्र्यै नमः।
ॐ भोज्याय नमः।
ॐ भुक्त्यै नमः।
ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै नमः।
ॐ भोगदायै नमः।
ॐ भोज्यदायै नमः।
ॐ भूमायै नमः।
ॐ भूरिप्रदायिन्यै नमः।

-म-

ॐ मकाररूपायै नमः। (८४०)
ॐ माहेश्यै नमः।
ॐ महितान्नप्रदायिन्यै नमः।
ॐ महादेव्यै नमः।
ॐ महामायायै नमः।
ॐ महादेवप्रियाङ्गनायै नमः।
ॐ महातंत्रायै नमः।
ॐ महामंत्रायै नमः।
ॐ महायंत्रायै नमः।
ॐ महासनायै नमः।
ॐ महागणेशसंपूज्यायै नमः। (८५०)
ॐ महाराज्ञ्यै नमः।
ॐ महेश्वर्यै नमः।
ॐ महागुणायै नमः।
ॐ महावीर्यायै नमः।
ॐ महाशक्त्यै नमः।
ॐ महारत्यै नमः।
ॐ महाबुद्ध्यै नमः।
ॐ महासिद्ध्यै नमः।
ॐ महायोगीश्वरेश्वर्यै नमः।
ॐ महालक्ष्मीसमाराध्यायै नमः। (८६०)
ॐ महाभैरवपूजितायै नमः।
ॐ महायागक्रमाराध्यायै नमः।
ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
ॐ मणिपूरान्तरुदितायै नमः।
ॐ मणिद्वीपनिवासिन्यै नमः।
ॐ मणिपूरार्चितायै नमः।
ॐ मान्यायै नमः।
ॐ महापातकनाशिन्यै नमः।

-य-

ॐ यकाररूपायै नमः।
ॐ यज्ञेश्यै नमः। (८७०)
ॐ यज्ञेश्वरसमर्चितायै नमः।
ॐ यज्ञभोजनसंतुष्टायै नमः।
ॐ यज्ञान्नपरितर्पितायै नमः।
ॐ यज्ञप्रियायै नमः।
ॐ यज्ञमूर्त्यै नमः।
ॐ यज्ञार्च्यायै नमः।
ॐ यज्ञरक्षिण्यै नमः।
ॐ यज्ञस्थायै नमः।

ॐ यज्ञसंतुष्टायै नमः।
ॐ यज्ञकर्मफलप्रदायै नमः। (८८०)

-र-

ॐ रजताद्रिकृतावासायै नमः।
ॐ रम्यायै नमः।
ॐ राजीवलोचनायै नमः।
ॐ रञ्जन्यै नमः।
ॐ रमणीसेव्यायै नमः।
ॐ रणत्किङ्किणिमेखलायै नमः।
ॐ रतिवल्लभजीवातवे नमः।
ॐ रतिसेव्यायै नमः।
ॐ रतिप्रियायै नमः।
ॐ रक्तवस्त्रपरीधानायै नमः। (८९०)
ॐ रागद्वेषविवर्जिता नमः।

-ल-

ॐ ललितायै नमः।
ॐ लाकिनीसेव्यायै नमः।
ॐ लावण्यजितमन्मथायै नमः।
ॐ लम्बालकायै नमः।
ॐ ललाटाक्ष्यै नमः।
ॐ लास्यनृत्तपरायणायै नमः।
ॐ लाक्षारुणितपादश्रियै नमः।
ॐ लक्ष्मीवाणीसुसेवितायै नमः।
ॐ लक्ष्मीशमुख्यसंकीर्त्यायै नमः। (९००)
ॐ लक्ष्मीपतिवरप्रदायै नमः।

-व-

ॐ वकाररूपायै नमः।
ॐ वाग्देव्यै नमः।
ॐ वाङ्मय्यै नमः।
ॐ वामलोचनायै नमः।
ॐ वराभयकराढ्यायै नमः।
ॐ वरदायै नमः।
ॐ वागधीश्वर्यै नमः।
ॐ विश्वमात्रे नमः।
ॐ विश्वधात्र्यै नमः। (९१०)
ॐ विश्ववन्द्यायै नमः।
ॐ विलासिन्यै नमः।
ॐ विश्वेश्वरप्राणनाथायै नमः।
ॐ विश्वेश्यै नमः।
ॐ विश्वरूपिण्यै नमः।
ॐ वन्दारुभक्तमन्दारायै नमः।
ॐ वन्दारुजनवत्सलायै नमः।
ॐ वन्दितामरपादाब्जायै नमः।
ॐ वन्दिताघविनाशिन्यै नमः।

-श-

ॐ शंबीजाच्यायै नमः। (९२०)
ॐ शाङ्कर्यै नमः।
ॐ शम्बरारिमनोहर्यै नमः।
ॐ शाम्भव्यै नमः।
ॐ शाम्भवीविद्यायै नमः।
ॐ शम्भुनाथसमर्चितायै नमः।
ॐ शिवप्रियायै नमः।
ॐ शिवाचारायै नमः।
ॐ शिवमूर्त्यै नमः।
ॐ शिवङ्कर्यै नमः।
ॐ शिवाराध्यायै नमः। (९३०)
ॐ शिवदृष्ट्यै नमः।
ॐ शिवज्ञानप्रदायिन्यै नमः।
ॐ शातोदर्यै नमः।
ॐ शान्तमूर्त्यै नमः।
ॐ शक्तिकूटकटीतट्यै नमः।
ॐ शिवश्रियै नमः।

ॐ शिवार्धाङ्ग्यै नमः।
ॐ शिवशक्तिस्वरूपिण्यै नमः।

-ष-

ॐ षकाररूपायै नमः।
ॐ षाड्गुण्यायै नमः। (९४०)
ॐ षडध्वार्चितपादुकायै नमः।
ॐ षड्गुणैश्वर्यसंपन्नायै नमः।
ॐ षडाननसमर्चितायै नमः।
ॐ षडङ्गवेदविनुतायै नमः।
ॐ षडाम्नायाधिदेवतायै नमः।
ॐ षड्विधैक्यानुसंभाव्यायै नमः।
ॐ षट्चक्रोपरिसंस्थितायै नमः।

-स-

ॐ सकाररूपायै नमः।
ॐ सर्वेश्यै नमः।
ॐ सर्वदायै नमः। (९५०)
ॐ सर्वमङ्गलायै नमः।
ॐ सर्वान्नदात्र्यै नमः।
ॐ सद्रूपायै नमः।
ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदायै नमः।
ॐ सर्वरोगहरायै नमः।
ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः।
ॐ सर्वसम्पत्प्रदात्र्यै नमः।
ॐ सर्वापद्विनिवारिण्यै नमः।
ॐ सत्स्वरूपायै नमः।
ॐ सत्यार्च्यायै नमः। (९६०)
ॐ सदाराध्यायै नमः।
ॐ सनातन्यै नमः।
ॐ सत्यज्ञानान्दरूपायै नमः।
ॐ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नमः।

-ह-

ॐ हकाररूपायै नमः।
ॐ हंबीजायै नमः।
ॐ हंसिन्यै नमः।
ॐ हंसवाहनायै नमः।
ॐ हंसमंत्रार्थवेद्यायै नमः।
ॐ हादिवद्यास्वरूपिण्यै नमः। (९७०)
ॐ हयाननसमाराध्यायै नमः।
ॐ हरित्पतिप्रपूजितायै नमः।
ॐ हरार्धाङ्ग्यै नमः।
ॐ ह्रादिन्यै नमः।
ॐ हरिसेव्यपदाम्बुजायै नमः।
ॐ ह्रींबीजजपसंतुष्टायै नमः।
ॐ ह्रींकार्यै नमः।
ॐ ह्रींस्वरूपिण्यै नमः।
ॐ हल्लेखार्चनसंतुष्टायै नमः।
ॐ हल्लेखापरितर्पिता नमः। (९८०)

-ळ-

ॐ ळकाररूपायै नमः।
ॐ ळंबीजायै नमः।
ॐ ळकारन्यस्तमातृकायै नमः।
ॐ ळंबीजार्चितपादाब्जायै नमः।
ॐ ळकारवरवर्णिनीयै नमः।

-क्ष-

ॐ क्षकाररूपायै नमः।
ॐ क्ष्मासेव्यायै नमः।
ॐ क्षणक्षणविनूतनायै नमः।
ॐ क्षमावत्यै नमः।
ॐ क्षमारूपायै नमः। (९९०)
ॐ क्षपानाथकिरीटिन्यै नमः।

ॐ क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै नमः।
ॐ क्षुद्बाधाविनिवारिण्यै नमः।
ॐ क्षालिताशेषपापौघायै नमः।
ॐ क्षान्तिदायै नमः।
ॐ क्षिप्रमोक्षदायै नमः।

-ज्ञ-

ॐ ज्ञानदायै नमः।
ॐ ज्ञानगम्यायै नमः।
ॐ ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै नमः।
ॐ ज्ञानिपूज्यायै नमः। (१०००)
ॐ ज्ञानिसेव्यायै नमः।
ॐ ज्ञानमोक्षप्रदायिन्यै नमः।

-श्री-

ॐ श्रीकर्यै नमः।
ॐ श्रीनिध्यै नमः।
ॐ श्रीचक्रार्चनतोषिण्यै नमः।
ॐ श्रीतक्रराजनिलयायै नमः।
ॐ श्रीनिवासायै नमः।
ॐ श्रीप्रदायै नमः। (१००८)

****